महिलाओं के लिए

प्रार्थना वाचा

अपने प्रार्थना के जीवन को रूपांतरित करें। कैंडी मारबली अनुजा लाल के साथ

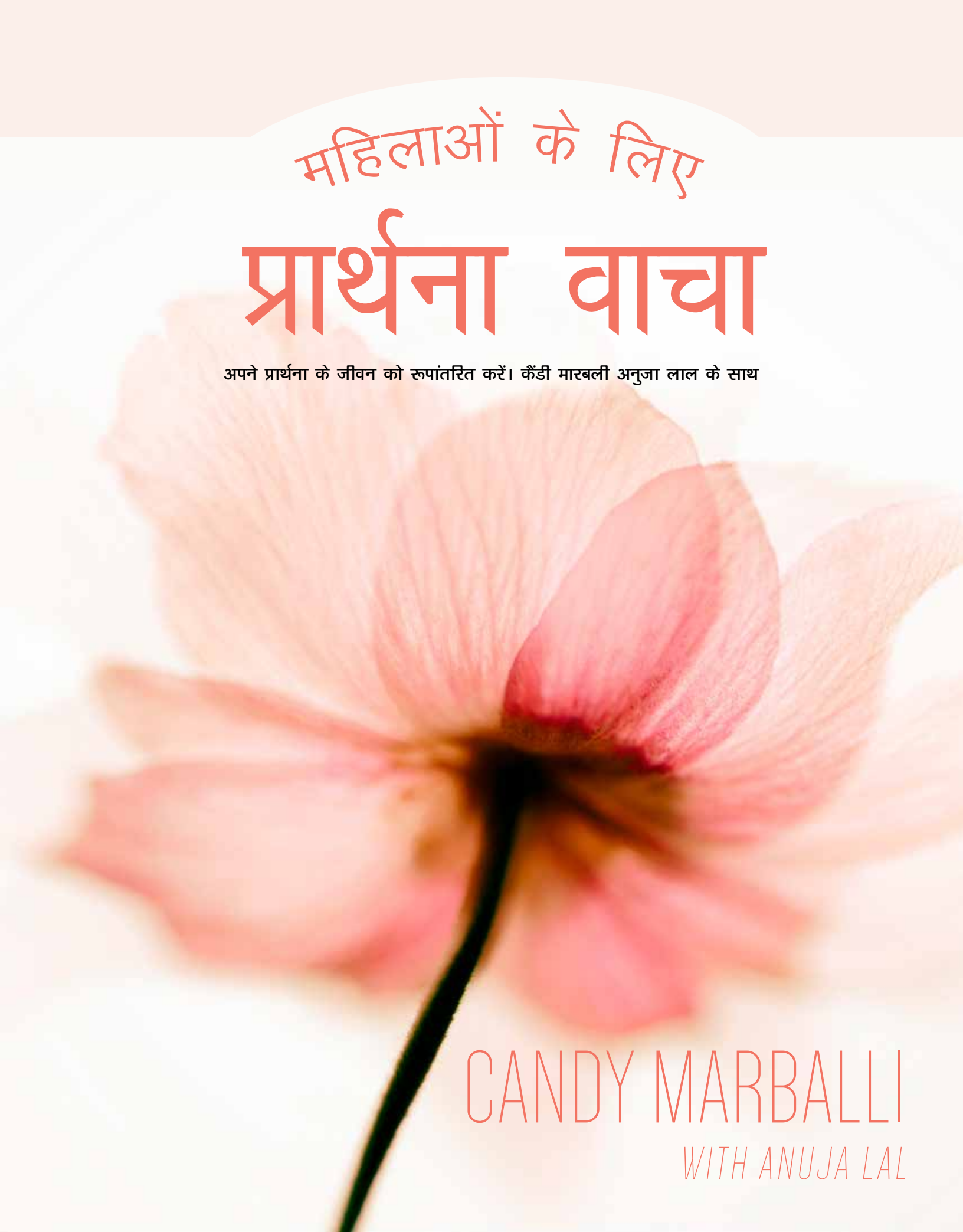

CANDY MARBALLI

WITH ANUJA LAL

यह उसे समर्पित है

जिसने मेरे प्राण को मृत्यु से छुड़ाया
मेरी आंखों के आंसुओं को पोछा और
मेरे पांव को फिसलने से बचाया था।

ग्रैंश्र वइ्रैव्लैन्ट ठव्व
पो0 ओ0 बाक्स 40841
सिनसिनाटी ओ एच 45240
ूण्जीमचतंलमतबवअमदंदजण्वतह

ब्वचलतपहीज ै 2020 इल ब्ंदकल डंतइंससपण ।सस तपहीजे तमेमतअमकण

।सस तपहीजे तमेमतअमकण छव चंतज वि जीपे इववा उंल इम चतवकनबमक इल ंदल उमंदेए मसमबजतवदपबए उमबींदपबंसए चीवजवबवचलपदहए ेबंददपदहए वत वजीमत. ूपेमए ूपजीवनज चमतउपेपवद पद ूतपजपदह तिवउ जीम चनइसपीमतए मगबमचज इल ंतमअपमूमतए ूीव उंल ुनवजम चेंहमे पद ं तमअपमूण जैम च्तंलमत बवअमदंदज ब्तक उंल इम बवचपमक इनज दवज ंसजमतमकए मकपजमकए वत ंउमदकमक ंदक पे ंसेव ंअंपसंइसम वदसपदम ूपजी तिमम कवूदसवंके ंज ूण्जीमचतंलमतबवअमदंदजण्वतह

ैबतपचजनतमे जांमद तिवउ जीम भ्वसल ठपइसमए छमू प्दजमतदंजपवदंस टमतेपवदोए छप्टोण ब्वचलतपहीज ै 1973ए 1978ए 1984ए 2011 इल ठपइसपबंए प्दबण्ऋ न्मक इल चमत. उपेपवद वि विदकमतअंदण ।सस तपहीजे तमेमतअमक ूवतसकूपकमण ूवदकमतअंदण्बवउ जीम श्छप्टश ंदक श्छमू प्दजमतदंजपवदंस टमतेपवदश ंतम जतंकमउंतो तमहपेजमतमक पद जीम न्दपजमक ैजंजमे च्ंजमदज ंदक ज्तंकमउंता वींपिबम इल ठपइसपबंए प्दबण्ऋ

क्मेपहद इल ळतंदपजम ब्तमंजपअमए पदब

ऐठछ 978.0.9899525.8.3

थ्पतेज च्तपदजपदह 2020
च्तपदजमक पद डमगपबव

विषय सूची

अनुमोदन v

अभारोक्ति ix

प्राक्कथन x

भूमिका xi

महिलाओं की प्रार्थना के लिए प्रार्थना वाचा xiii

निर्देश– इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें xiv

अध्याय 1
अनुग्रह–अच्छा चरवाहा 1

अध्याय 2
प्रेम–एक मां की पुकार 11

अध्याय 3
करुणा–बेघर और अकेले लोग 20

अध्याय 4
पश्चाताप–क्षमा में स्वतंत्रता 28

अध्याय 5
आराधना–मरियम का महिमा गान 36

अध्याय 6
समर्पण–मरियम मगदलीनी 45

अध्याय 7
निर्भरता–पवित्र आत्मा की उपस्थिति का अभ्यास 53

अध्याय 8
प्रभाव–साधनहीन लोगों के प्रति सेवकाई 62

अध्याय 9
शिष्यता– कुयें पर आयी स्त्री 69

अध्याय 10
अधिकार–लहू बहने की बीमारी से ग्रस्त स्त्री 78

मारिया मारबली द्वारा निष्कर्ष 88

म्दकवतेमउमदजे

महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा

मेरे जीवन और मेरी सेवकाई में मेरी माँ की प्रार्थनाऐं निश्चत रुप से अति महत्वपूर्ण थीं। जब मैं युवा थी तब मेरे संदेह और विद्रोही स्वभाव से उन्होंने मुझे बचायें रखा था और जिसकी में कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था उस सेवकाई के लिए मुझे तैयार किया था। कैन्डी मारबली की यह पुस्तक ''महिलाओं के लिये प्रार्थना वाचा'' मुझे उन जोशभरी प्रार्थनाओं के प्रभाव को याद दिलाती है। कैन्डी मारबली इस प्रकार से की जाने वाली प्रार्थनाओ के सार को पहचानती है। उनकी विचारपूर्ण गवाहियाँ और व्यक्तिगत प्रस्तुतियां जिनमें बाइबल की व्यवहारिक अन्तरदृष्टियॉ सम्मिलित है, आपकी दैनिक प्रार्थनाओं के द्वारा एक सुनिश्चित बदलाव को पाने के लिए आपको उत्साहित और तैयार करेगी। इस प्रार्थना वाचा को अपनाये, इसे अपने दैनिक जीवन में लागू करें और तब एक प्रार्थना करने वाली सामर्थी महिला के रूप में जो प्रभाव आप डाल सकती हैं, उसे देख कर आश्चर्यचकित हों।

डिक ईस्टमैन्ट
ऐवरी होम फार काइस्ट के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष
अमेरिका की नेशनल प्रेयर कमेटी के अध्यक्ष

प्रार्थना में कैंडी मारबली के नेतृत्व के परिणामस्वरुप पूरे विश्व में लाखों बच्चों के जीवन में आशा की किरण जागी है। अनेक स्थानों पर क्रू और जीजस फिल्म प्रोजेक्ट की प्रार्थना वाचा सहभागीयों की सेवकाई के लियें मैं आभारी हूँ।

इस समय जबकि इतने अधिक लोग अपने नियंत्रण से बाहर की परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं, मि. हलाओं के लिये प्रार्थना वाचा पुस्तक का प्रकाशन विशेष रुप से इस समय के अनुकूल है। परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह इस संसाधन को उपयोग करें जिससे कि प्रभावकारी और सामर्थी प्रार्थना की एक जीवन शैली विकसित करने के प्रति इसका अधिक से अधिक उपयोग किया जाये।

स्टीव डगलस
प्रेसिडेंट एमरीटस, कैम्पस क्रूसेड फार क्राइस्ट/क्रू

कैंडी मारबली और उनके पति विक मेरे ऐसे प्रिय मित्र हैं जो एक दूसरे के लिए प्रार्थना के प्रति बाइबल के आदेश को प्रोत्साहित करते हैं। यह सुन्दर मनन पुस्तिका महिलाओं को एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने की बुलाहट देती है। महान आपदा के समय जब रानी एस्तेर अपने लोगों यहूदियो के लिए राजा के सम्मुख गई थी, तब उसने प्रार्थना और उपवास के लिए निवेदन किया था। आज जब हम असामान्य चुनौतियों का सामना करते हैं तब उसके उदहारण को अपना सकते हैं। यहाँ हमें इस बात को समझना है कि जिससे हम प्रार्थना करते हैं वह हमें प्रेम करता है और जब हम उसी की इच्छा के अनुसार हम उससे मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है। जैसा कि इस पुस्तक के मुख्य प्रष्ठ पर चित्रित है, वैसे ही हम परमेश्वर के प्रति यीशु की मीठी सुगंध जैसे हैं।

लुईस तथा डोरिस बुश
अति महान परमेश्वर के सेवक

महिलाओं के लिये प्रार्थना वाचा हर जगह पर परमेश्वर की बेटियों के लिये एक वैश्विक उपहार है। परमेश्वर के लिए कैन्डी का प्रत्यक्ष आनन्द और जोशभरा प्रेम आपको सबसे पहले यीशु मसीह के साथ वाचावद्ध होने के लिए और फिर से दूसरो को इस यात्रा में आपके साथ आने का निमंत्रण देने के लिए प्रेरित करेगा और चुनौती देगा। इसके प्रांसगिक बाइबल के गद्यांश, रोचक व्यक्तिगत कहानियां, अभिषेक, प्राप्त गीत, और व्यक्तिगत प्रार्थनायें आपको प्रेरित करेंगी कि इसे एक बार में ही पूरा पढ डालें। कृपया ऐसा नहीं करें। दिन प्रतिदिन परमेश्वर की उपस्थिति में डूबने, अपनी स्तुति अपने प्रार्थना निवेदन प्रस्तुत करने और उस बहुतायत में जीने के लिए जैसा पिता आपसे चाहता है, नियमित समय बितायें। चाहे आप मध्यस्था की प्रार्थना करने का अनुभव रखते हों अथवा प्रार्थना में नये क्यों ना हो, आप देखेंगे कि यह एक ऐसा अनमोल खजाना है

जिसे आप केवल अपने तक ही नहीं रख सकते हैं। इसकी सहभागिता दूसरों के साथ भी अवश्य करें।

के ह्रॉरनर, एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर
अवेकनिग अमेरिका अलाएन्स

महिलाओं के लियें प्रार्थना वाचा ऐसे समय पर आयी है जब पूरे विश्व में प्रार्थना की आवश्यकता अत्यधि ाक हैं। महिलाओं के लिए, परमेश्वर की बेटियों के लिये यह एक समयानुकूल बुलाहट है कि वे प्रार्थना में वाचाबद्ध हो और हमारी सभी प्रार्थनाओं और निवेदन को प्रस्तुत करने के लिए साहसपूर्वक सर्वसामर्थी परमेश्वर के सम्मुख जाये। इस पुस्तक में गहराई से प्रासंगिक बाइबल के गद्यॉश, स्पष्ट व्यक्तिगत कहानियां, सामर्थी गीत और प्रेरणादायक प्राथनाओं को इसलिए उपयोग किया गया है जिससे कि परमेश्वर और हमारे पड़ोसियों के साथ एक सामर्थी वाचा में बंधने के प्रति हमारा मार्गदर्शन हो। अब समय है कि हम एक साथ मिलकर प्रार्थना करें। वे महिलाएं जो सदैव से यह चाहती है कि नियमित रुप से प्रार्थना आरम्भ करें परन्तु यह नहीं जानती हैं कि इसकी शुरुआत कैसे हो उनके लिए यह वाचा सहायक होगी है कि अपने जीवनों में अभिप्राय प्रार्थना की लय को जोडें और उन आत्मिक आशीषों के द्वार को खोलें जो केवल तभी सम्भव हैं जब हम परमेश्वर के साथ समय बिताते हैं।

लीसा पाक
डायरेक्टर अहफ ग्लोबल इंगेजमेन्ट, एफ० टी० टी०,सैडल बैक

कभी-कभी जीवन व्यस्त हो जाता है और हमें लगता है कि विश्व अनियंत्रित है, तब मैं परमेश्वर के साथ एक जीवन सम्बंध को फिर से प्रज्जवलित करने की एक तीव्र आवश्यकता का अनुभव करती हूँ। क्या आपको कभी ऐसा अनुभव हुआ है? सुन्दर ढंग से रची गयी यह महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा आपको बाध्य करेगी कि इसे पढ़ें,। इस पर मनन करने और उसके साथ जो आपको जीवन, ज्योति और आशा प्रदान करता है उसे सुने और उसके साथ गहराई से सहभागिता करें। आराधना, प्रार्थना, अध्ययन, और परमेश्वर के वचन के द्वारा कैंडी और अनुजा महिलाओं की अगवाई करती हैं कि वे हमारे प्रभु के साथ एक पवित्र सहभागिता में प्रवेश करें। आज हम विशेष समय में हैं जहां हमें अपने व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन को सामर्थी बनाना है और सारे विश्व की महिलाओं के साथ प्रार्थना में अपने हृदय को जोड़ना है।

लहरा फिशर
सीनियर वाइस प्रेसिडेन्ट-ग्लोबल मिनिस्ट्रीज, बिबलिकाद इंटरनेशनल
बाइबिल सोसायटी

कैन्डी मारबली एक उद्देश्यपूर्ण महिला हैं। उन्होंने विश्वव्यापी रूप से बच्चों की सहायता की है कि वे अपने आरम्भिक जीवन से ही ''बच्चों के लिये परमेश्वर की प्रार्थना वाचा ''की सामर्थ के द्वारा जुड़ सकें। यह एक सचित्र शिक्षण मार्गदर्शिका है जिसका अनुवाद अनेक भाषाओं में किया जा चुका है। अब कैंडी ने अपनी मित्र अनुजा के साथ एक बहुआयमी, सामर्थी प्रार्थना मार्गदर्शिका को तैयार किया है जो परमेश्वर हमारे पिता के साथ हमारे दैनिक जीवन को प्रज्वलित और दृढ़ करेगी। इसके प्रत्येक संक्षिप्त और रोचक अध्याय में पवित्र शास्त्र के प्रासंगिक सन्दर्भ, जोश भरी प्रार्थनाये, महत्वपूर्ण प्रश्न और जीवन में लागू करने के व्यवहारिक प्रयोग, पांच दिवसीय दस क्रमों में सम्मिलित हैं।

मैं महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिये यह पुस्तक ''महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा'' को प्रस्तावित करता हूँ। परमेश्वर की इन दो जोशभरी महिलाओं के साथ आप इस रोमान्चक आत्मिक यात्रा को आरम्भ करने के लिये प्रेरित तथा उत्साहित होंगे। कैंडी का यह लिखना मुझे बहुत अच्छा लगा है कि ''जब हम यीशु की उपस्थिति में समय बिताते है, अभिप्रायपूर्वक वह निवेदन करते हैं जो उसकी इच्छा है, तब हम प्रार्थना के उत्तरों को अनुभव करते हैं..... चाहे यह कुछ मिनटों के लिए या घंटों के लिए हो, प्रार्थना जीवन दायक है और हमे आशा से भर देती हैं क्योंकि हम आशा प्रदान करने वाले महान परमेश्वर की उपस्थिति में होते हैं।''

जहन रोब
चेयरमैन, इंटरनेशनल प्रेयर काउन्सिल

कैंडी मारबली से मेरी पहली मुलाकात तब हुयी थी जब वह ''बच्चों के लिए प्रार्थना वाचा'' लिख रही थी। इसके कुछ दिनों बाद ही उन्होंने न्यूयहर्क में ४-१४ विन्डो ग्लोबल फोरम में भाग लिया जहां उन्होंने पूरे

विश्व से आये हुये बच्चों के अभिवक्ताओं के साथ अपनी इस नयी पुस्तक की सहभागिता की थी। जिसकी उत्साह भरी प्रतिक्रिया विभिन्न देशों से आये हुए अगुवों के द्वारा उसी समय की गई क्योंकि उन्होंने बच्चों के एक प्रार्थनापूर्ण जीवन शैली में शिष्य बनाने के लिये इसकी क्षमता को जान लिया था। मैंने बाद में कैंडी को उत्साहित किया कि वे एक ग्लोबल मिशन फायर में भाग ले जहाँ वे बच्चों के लिए प्रार्थना वाचा और अपनी सेवकाई के बारे में सहभागिता करें, और इसका परिणाम भी उत्साहजनक रहा। केवल कुछ ही दिनों में उन्होंने अनेक नये दोस्त बनाये और सेवकाई के सहभागियों को प्राप्त किया।

अभी निकट समय में ही कैंडी इंटरनेशनल प्रेयर काउंसलिंग लीडरशिप टीम की नयी सदस्य बनी हैं और इसका भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है जिससे पूरे विश्व में और अधिक दोस्त और सेवकाई सहभागी विकसित हो पाये है। कैन्डी में दोस्ती करने की अद्‌भुत योग्यता है और प्रार्थना वाचा सकारात्मक रूप से प्रमाणित है। इसका प्रमाण पूरे विश्व के ५० से अधिक देशों के बच्चे हैं जो ''बच्चों के लिए प्रार्थना वाचा'' का उपयोग करते हैं। यह बच्चे इस सच्चाई को सत्यापित करते है। यहाँ मैं आपको एक चेतावनी देना चाहता हूँ। यदि आप अपने प्रार्थना के जीवन से संतुष्ट हैं तब सावधान हो जायें। क्योंकि जब आप कैंडी की नयी पुस्तक ''महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा'' को पढ़ते हैं और उसके सन्देश को अपने जीवन में लागू करते हैं तो यह आपके जीवन को बदल देगा। और इसकी अधिक सम्भावना है कि आप नये-नये दोस्त बना सकेंगे।

जब यदि आप एक साहसिक अभियान पर जाना चाहते हैं और आप परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके साथ तथा अन्य लोगों के साथ संबंध में बढ़ना चाहते हैं, तब इसे पढ़ना आरम्भ करें। महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा आपके लिए हैं। मेरे घनिष्ठ मित्रों में कैंडी सम्मिलित है और वह सदा मेरा परिचय नये मित्रों से कराती रहती है। कौन जानता है? शायद आप उनमें से एक हों।

टॉम विक्टर
ग्रेट कमीशन कोअलेशन, प्रेसीडेन्ट

मैं विश्वास करता हूं कि महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा का उपयोग परमेश्वर अपने लोगों को आशीषित करने के लिये करेगा और पूरे विश्व में महिलाओं पर प्रार्थना वाचा के प्रभाव को गुणित करेगा। कैंडी मार. बली अगुवों के मध्य एक अगुवे जैसी हैं। बच्चों और प्रभु के प्रति उनके प्रेम ने उनकी इस बुलाहट के लिए अगुवाई की है कि महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा को विकसित करें

कैंडी ने इस पुस्तक में प्रार्थना की प्रत्येक पंक्ति को क्रम अनुसार स्पष्टता और गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। वे सुझाये गये पदों को याद करने, खोज करने वाले प्रश्नो का उत्तर देने और विशेष व्यवहारिक कदम उठाने का सुझाव देती हैं। उन विश्वासी महिलाओं के मध्य जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करती हैं और जो प्रार्थना और उसके अनुशासन के प्रति अपने प्रेम में बढ़ रही हैं, उन्हें यह पुस्तक प्रेरणा प्रदान करेगी। परमेश्वर को महिमा मिले।

जेरी किर्क
फाउन्डर, प्रेयर कावनेन्ट

आभारोक्ति

|बादवूसमकहमउमदज

मैं हृदय से धन्यवादित हूँ

मेरे अद्भुत पति और बच्चो के लिए, कि उन्होंने इस सेवकाई को निरंतर समर्थन दिया हैं।

अपनी प्रिय मित्र अनुजा लाल के प्रति, जिन्होंने महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा को विकसित करने की आवश्यकता का सुझाव दिया और इस पुस्तक की सहलेखिका के रूप में अपनी सेवाऐ प्रदान की है।

बारबरा हासय की, जिन्होंने इस पुस्तक के लिए अपनी गहरी समझ और अनमोल सहायता प्रदान की है। अपनी बहुमूल्य बेटी मारिया की, जिसने मुझे प्रोत्साहित किया, अपने विचारों को बताया और इस पुस्तक का संपादन किया है।

ऐन वुश्क के प्रति कि उन्होंने योग्यतापूर्ण इसका संपादन किया है, टाम विक्टर की जो मेरे मित्र और सलाहकार हैं और जिन्होंने निरंतर मुझे प्रोत्साहित किया है। कैरॉल पिकाटिस की, उनके मार्गदर्शन सलाह और इस पुस्तक का पुनावलोकन करने के लिए उन्होंने अपना समय दिया है।

उन सभी महिलाओं की, जिन्होने अपनी सामर्थी गवाही की सहभागिता की है, अनुजा लाल, एलेक्सजोन्ड्रिया रिचर्डस, बारबरा हेयस, कैराल पिकॅाटिस, मारिया मारबली, केटी स्टीला, और टिम तथा नाओमी जिलेट। आपके योगदान ने इस पुस्तक को स्मृद्ध बनाया है।

स्टीफन ईरे के लिए, जिन्होंने इस पुस्तक का धर्मविज्ञान पुनावलोकन किया है।

सैडलबैक चर्च के आराधना दल के लिये जिन्होने इस परियोजना के लिए आराधना और स्तुति के अपने अद्भुत गीतों का योगदान प्रदान किया है।

ृणलवनजनइमणबवउध्नेमतधैंककसमइंबॉवतीपचए ृणबिमइववाणबवउध्ड्डवतीपचध्ए
जूपजजमतणबवउध्मंतबीुत्रेंककसमइंबा20ृवतीपच−ेतबत्रजलचमकऋुनमतलए ृणेंककसमइंबूवतीपचणबवउध्उनेपब

हमारे अद्भुत प्रार्थना वाचा दल के लिए जिन्होंने सुसमाचार के लिए रातदिन सतत प्रयास किया है।

प्राक्कथन

जुडी डगलस के द्वारा

परमेश्वर अपनी पुत्रियों से प्रेम करता है। उसने अपने साथ संबंध और राज्य के उद्देश्य के लिए, प्रत्येक को अनोखे ढंग से रचा है और योग्य बनाया है। बहुधा यह संसार, और कभी कभी विश्वासी भाई और बहने भी उन्हे बताते हैं कि उनके लिए परमेश्वर की जो सुंदर योजना है उससे कम में ही संतुष्ट रहें।

प्रत्येक महिला के लिये परमेश्वर यह इच्छा रखता है कि वे स्वंय खोजें कि उन्हें किस लिए सृजा गया है, परमेश्वर उनसे कितना अधिक प्रेम करता है, वह उन्हें बहुत कुछ देना चाहता है और उन्हें कैसे वह जीवन जीना है जिसमें उनके द्वारा उसके अच्छे काम प्रकट हों।,,

यह पुस्तक ''महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचाः अपने प्रार्थना के जीवन को रुपांतरित करना, एक ऐसी सामर्थी सहायक है जो ऐसी किसी भी महिला की मदद करती है जो हमारे सर्वसामर्थी परमेश्वर के साथ आनंद, उद्देश्यपूर्ण और अर्थपूर्ण सम्बन्धो वाला जीवन को जीना चाहती है। जीवन को बदलने वाली वाचा प्रार्थना के साथ आरंभ करते हुए कैन्डी मारबली और अनुजा लाल उन सब बातों को खोजने में आपकी सहायता करेगीं जो परमेश्वर आपके जीवन में और आपके द्वारा करना चाहता है।

हमारे प्रभु परमेश्वर के चरित्र- उसके अनुग्रह, प्रेम, दया और करुणा को इन अद्भुत गुणों के प्रति आपकी आंखो को खोल देगा जिन्हें आप अपने लिये निरंतर सच होते हुए अनुभव करेंगी।

पश्चाताप करने और क्षमा पाने की आपकी स्वयं की आवश्यकता को जानना, आपकी अगुवाई करेगा कि अपने परमेश्वर पिता के प्रति आराधना, समर्पण और प्रतिबद्धता में आगे बढ़ती जायें।

अनंतकाल के लिए जीवनों को प्रभावित करने के प्रति परमेश्वर ने आपको जो अवसर दिया है उन्हें देखकर आप दीनता और आभार व्यक्त करेंगी। और आप उस अलौकिक सामर्थ में आनंदित होंगी जिन्हें परमेश्वर आपके लिए उपलब्ध करायेगा जिससे कि आप उसके राज्य को अपने में और अपने द्वारा बढ़ा सकें।

अपने घुटनों पर नतमस्तक होकर खुले हाथो और इच्छुक हृदय के साथ इस पुस्तक को पढ़ें। जितनी आप कल्पना कर सकती है या मांग सकती हैं उससे कहीं अधिक परमेश्वर प्रदान करेगा।

जुडी डगलस
लेखिका, वक्ता, प्रोत्साहनकर्ता
आफिस आफ प्रेसीडेन्ट क्रूसेंड फार क्राइस्ट

भूमिका

कैंडी मारबली के द्वारा

मैंने सन २०१० में एक प्रार्थना करना आरम्भ किया जिसने मेरे प्रार्थना जीवन को बदल दिया था। डॉ० जैरी किर्क यीशु मसीह के प्रभुत्व के बारे में बता रहे थे, "प्रत्येक सुबह मैं प्रार्थना करता हूँ," "प्रिय पिता जो स्वर्ग में हैं, मैं आपके उस अनुग्रह के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ जिसने मुझे आपका प्रिय पुत्र बनाया है।" जब उन्होंने परमेश्वर के इस अतुल्यनीय प्रेम के बारे में बताया था तब उनके संदेश ने मुझे उस प्रार्थना को करने के लिए प्रेरित किया, तैयार किया, और चुनौती प्रदान की, जिससे इसके द्वारा उन्हें सामर्थ मिली थी। जो पाँच दशको से अधिक समय से सेवकाई कर रहे हैं क्योंकि यह उन्हें निरंतर रुपांतरित करती आयी है। यह वे पास्टर, जो पोप, मदर टेरेसा और बिलीग्रहाम के साथ समय बिता चुके थे, वे अभी भी इस योग्य थे कि प्रभु यीशु की छवि में परिवर्तित हो रहे थे? यह मेरे लिये रोचक था।

अपने संदेश की समाप्ति पर जैरी ने मण्डली को आमंत्रित किया कि उनके साथ एक प्रार्थना वाचा सहभागिता में सम्मिलित हों। उन्होंने कहा "कि यदि आप मेरा नाम लेकर मेरे लिए ३० दिन तक प्रार्थना करते हैं तो मैं भी आपके लिए ऐसा ही करूँगा।" उनके इस निमंत्रण को ५०० से अधिक लोगों ने स्वीकार किया था।

यह आरम्भ था जब मेरी जीवन परिवर्तन प्रार्थना यात्रा का आरम्भ हुआ था। मेरे पति और मैंने उस प्रार्थना की १० विषय वस्तुओ के द्वारा प्रार्थना करना आरंभ किया और मैं सच्चाई से कह सकती हूँ कि हमें इसके परिणाम तुरन्त मिलने लगे। यह अद्भुत था। मेरा ध्यान इस बात पर गया कि जिस दिन मैं अपने दिन का आरम्भ समर्पण की इस सरल प्रार्थना के साथ नहीं करती थी, तब मुझे अपने आसपास के लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह का एक माध्यम होने के अवसर नहीं मिल पाते थे।

उस समय, मैं अपने चर्च में बच्चों की गान मंडली के निर्देशक के रूप में सेवा कर रही थी और इस प्रकार बच्चों के मध्य सेवाकाई करते हुये मैंने २५ से अधिक साल बिता दिये थे। यद्यपि मैं यीशु से अपने परिवार से, अपनी कलीसिया से प्रेम करती थी मुझमें सेवा और अतिथि सत्कार करने का स्वभाव था परन्तु मैं इससे और अधिक करना चाहती थी। मैं चाहती थी कि परमेश्वर मुझे सामर्थी तरीके से उपयोग करें। मैं उससे और अधिक प्रेम करना, उसकी और अधिक सेवा करना और उसकी निश्चित उपस्थिति को अनुभव करना चाहती थी। और यह पाने के लिए मैं सब कुछ करने को तैयार थी।

मैं इस प्रार्थना को तीन वर्षों से कर रही थी जब परमेश्वर ने मुझे बच्चों की प्रार्थना कार्ड का दर्शन दिया। मैंने जैरी से फोन पर बात की और उससे पूछा कि क्या उन्होने इस प्रार्थना को ऐसे सरल शब्दों में लिखने के लिये कभी सोचा था जिससे यह बच्चों के अनुकूल हो सके। उन्होंने मुझसे शिक्षाविदों की एक टीम बनाने को कहा जो उनकी टीम के साथ मिलकर इस पर काम करें। पॉच महीनों के बाद हमारे पास बच्चों की प्रार्थना कार्ड तैयार हो गया। मुझसे तब एक ऐसी पुस्तक लिखने को कहा गया जिससे पास्टरो, शिक्षको, और अभिभावको की बच्चों के लिए प्रार्थना वाचा के प्रति रुचि उत्पन्न हो। मैं नहीं जानती थी कि परमेश्वर मुझसे यह कैसे करायेगा, परन्तु उसके अनुग्रह के कारण पूरे विश्व के लाखों बच्चे प्रार्थना के इस सरल उपकरण से प्रभावित हो चुके हैं -जहां उन्होंने परमेश्वर से प्रेम करना, उससे प्रार्थना करना सीखा है और अपने मित्रों को भी यह करना सिखाया है।

परमेश्वर अपने उद्देश्य को केवल पूरा करना नहीं चाहता है, परंतु वह हम में और हमारे द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा कराना चाहता है। आवश्यक नहीं है कि हम एक पास्टर, शिक्षक, अगुवे अथवा धर्मवैज्ञानिक हो। वास्तव में तो जब आप जितना अधिक उसके वचन बाइबल को पढ़ते हैं तब उतना अधिक यह जानते हैं कि कैसे वह उन महत्वहीन, कभी-कभी अनजाने लोगों को चुनता है जिन्होंने उस पर विश्वास किया था और उसका आज्ञा पालन किया था।

मेरे जीवन के एक भाग को इस बात ने बदला कि मैंने स्वयं के लिए और अन्य लोगों के लिए यीशु की प्रार्थना को करना सीखा था। जब मैं स्वयं पर अथवा किसी अन्य के लिए अभिप्रायपूर्वक परमेश्वर की इच्छा के पूरे होने के प्रति प्रार्थना करती हूँ, तब वह शीघ्रतापूर्वक और सामर्थी ढंग से कार्य करता है।

जब हमने बच्चों के लिए प्रार्थना वाचा को पूरे विश्व में तेजी से लोकप्रिय होते देखा, तब मुझसे अनेक बार यह निवेदन किए गए कि महिलाओं के लिए एक प्रार्थना वाचा तैयार करूँ। इसके लिए सबसे पहला निवेदन मेरी प्रिय मित्र अनुजा लाल से प्राप्त हुआ था। वे और उनके पति दीपक उत्तरी भारत में अपनी स्वयं की कलीसिया स्थापना सेवकाई और अन्य प्रयास आरम्भ करने के पहिले सात वर्षों तक कैंपस क्रूसेड फ्हर क्राइस्ट उत्तरी भारत के निर्देशकों के रूप में कार्य कर चुके हैं। पिछले दशकों में उनके प्रभाव और सफलता

का बढ़ना और उनके परिश्रम के फल को देखना मेरे लिए अद्‌भुत रहा है।

उनकी सेवकाई की एक आशीष, महिलाओं और बच्चों से प्रेम और उनके प्रति सेवकाई करने का योगदान है। उन लोगों के प्रति जिनके पास कोई आशा नहीं है, अनुजा और दीपक यीशु के उपकरणों के समान रहे हैं जब उन्होंने प्रशिक्षण और आर्थिक कर्जे प्रदान किये कि वे अपने परिवारों के भरण पोषण के लिए छोटे व्यवसायों के द्वारा संसाधन अर्जित कर रहे हैं। उन्होंने एक ऐसी जगह पर जहां अच्छी शिक्षा उपलब्ध नहीं है ५०० छात्रों के लिए एक विश्वस्तरीय हाईस्कूल बनाया है और दलित बच्चों (अछुत) बच्चों तक पहुंचने के लिए एक अद्‌भुत सेवकाई आरम्भ की है जिसके बारे में आप इस पुस्तक में आगे और जानेंगे यह सब कुछ एकमात्र परमेश्वर के द्वारा संभव हुआ है जो यीशु मसीह के आज्ञाकारी इच्छुक प्रेम और करुणा रखने वाले समर्पित सेवकों के द्वारा पूरा कर रहा है।

जब अनुजा ने एक ऐसी विशेष प्रार्थना लिखने का सुझाव दिया जो महिलाओं के हृदयों से बाते करें, उनकी आत्मिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को पूरी करें तो इस विचार का मुझ पर एक स्थायी प्रभाव पडा। इस योग्य होने में मुझे अनेक वर्ष लग गये कि बैठकर इसे लिखना आरम्भ करुँ। परन्तु परमेश्वर द्वारा नियुँक्त समय ही सर्वश्रेष्ठ है और मैंने उसे कहते सुना, ''कि यही समय है।'' यह पुस्तक उसी समय काल का परिणाम है।

आगे के अध्ययों में हम उन दस विषयवस्तुओं का अनावरण करेंगे जो इस सरल प्रार्थना को रचती हैं। प्रत्येक विषय वस्तु में पॉच दिनों की गतिविधियां सम्मिलित है जिसमें स्मरण पद, अध्ययन और प्रतिक्रिया, सारे विश्व में प्रार्थना वाचा सेवकाई के साथ जुड़ी महिलाओं की प्रेरणादायक कहानियां, आत्मिक मनन हेतु भजन, स्तुतिगान, अंतिम प्रार्थना और व्यवहारिक उपयोग दिए गये हैं। यहां दी गई प्रार्थना करने में एक मिनट का ही समय लगता है, परन्तु वह अद्‌भुत है जो सामर्थ इस प्रार्थना को करने से संचारित होती है।

मैं सुनिश्चित नहीं हूँ कि यीशु के लिए और एक दूसरे के प्रति हमारे प्रेंम को दर्शाने की एक अत्यंत सुंदर अभिव्यक्ति प्रार्थना करने के अलावा अन्य कुछ हो सकती है। जब हम प्रार्थना करते हैं तब हम स्वयं को पूरी तरह से यीशु को समर्पित कर देते हैं। हम उस पर विश्वास करते हैं कि वह हमारे द्वारा और हम में महान बातों को पूरा करें। हम उसके अधिकार उसकी प्रभुसत्ता को मान्यता देते हैं। जब हम यीशु की उपस्थिति में समय बिताते हैं और उन सब बातों के लिये, जो उसकी हमारे लिये इच्छा है, अभिप्रायपूर्वक प्रार्थना करते हैं तब हम इन प्रार्थनाओं के उत्तरो को अनुभव करते हैं।

प्रार्थना में परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के सम्मुख आना कितना सौभाग्यशाली है! पौलुस कहता है, कि जिस दिन से हमने तुम्हारे बारे में सुना है तब से तुम्हारे विषय में प्रार्थना करना बंद नहीं किया है। प्रार्थना वाचायें, जिनके बारे में मैं अगले अध्याय में विस्तार से बताऊंगी, अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करने का एक अद्‌भुत तरीका है। वे एक निमंत्रण है जिससे आप अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ को देखें, प्रार्थना के सामर्थी उत्तरो को अनुभव करें और प्रार्थना के द्वारा बदलाव को देखें। जब आप अपने प्रार्थना समय में अपने पर और उन पर जिनके लिए आप रोज प्रार्थना करते हैं, तब प्रार्थना वाचाऐं आपके प्रार्थना समय में पवित्र आत्मा को आमंत्रित करती हैं। चाहे यह कुछ मिनटों के लिए अथवा घंटो के लिए हो प्रार्थना जीवनदायक है और हमें आशा से भर देती है क्योंकि तब हम महानत्तम आशा प्रदान करने वाली परमेश्वर की उपस्थित में होते हैं।

> मुझसे प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बडी-बडी और कठिन बातें बताऊँगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता। (यर्मयांह ३३:३)
>
> यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। (यूहन्ना १५:७)

झिंर्थ्झन्झ

महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा

महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा है,

अनुग्रह मुझसे प्रेम करने के लिए और मुझे अपनी पुत्री बनाने के लिए आपका धन्यवाद।

प्रेम मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन से आपसे प्रेम करुँ।

करुणा जिस प्रकार आपने मुझसे प्रेम किया है, मेरी सहायता करें कि मैं दूसरो को वैसे ही प्रेम करुँ।

पश्चाताप मैं आपका धन्यवाद करती हूँ कि आपने मेरे पापों को धोया है और मुझे स्वच्छ किया है।

आराधना मेरी सहायता करें कि अपनी परिस्थिति की बजायें मैं सदैव आप में आनंदित रहूँ।

समर्पण आपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूं।

निर्भरता मुझे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनायें जो आपकी इच्छा के अनुसार हो।

प्रभाव मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।

शिष्यता अपनी महिमा और अन्य लोगों के लिए एक आशीष के रुप में मुझे उपयोग करें।

अधिकार अनुग्रहकारी पिता, मैं अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह और पवित्र आत्मा की सामर्थ में यह प्राथ. ´ना करती हूँ, अमीन।

थ्न्छैंश्ज्ञ

इस पुस्तक का उसका उपयोग कैसे करें।

ेच रहे होंगे कि एक प्रार्थना वाचा क्या होती है?“

एक प्रार्थना वाचा एक ऐसी सरल प्रार्थना है जो तब आपकी प्रार्थना दिनचर्या विकसित करनें में सहायता करती है जब आप प्रार्थना में अन्य लोगों के साथ सहभागी होते हैं। जबकि हम आजकल इसे ‘‘स्वंय करें‘‘ वाली संस्कृत से घिरे हुए हैं वहीं यह पुस्तक इसे अकेले करने के बारे में नहीं है परन्तु यहां हमें यीशु के साथ सहभागी होकर इसका गहरा अनुभव पाना है।

प्रार्थना जो आपने अभी पढ़ी है वह महिलाओं के लिए प्राथना वाचा है जिसे विशेषरुप से महिलाओं के लिए तैयार किया गया है, परन्तु इसका आधार वही विषयवस्तु है जिसे सबसे पहले जैरी क्रिक के द्वारा मूलतया प्रार्थना वाचा के रुप में विकसित किया गया था। यह विषयवस्तुयें महत्वपूर्ण हैं। वे परमेश्वर के चरित्र को बताती है आपको चुनौती देती है कि यीशु को प्रतिदिन अपने जीवन का प्रभु बनाये, पवित्र आत्मा के द्वारा आपको सामर्थ देती है और तैयार करती है कि अपने आस-पास के लोगों के साथ उसके संदेश की सहभागिता करें। यह प्रार्थना उपयोग करना सरल है। मैं कुछ ऐसे लोगों को जानती हूँ जो अपनी प्रार्थना सूची के १०० से अधिक लोगों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। ऐसे भी लोग हैं जो प्रात काल के प्रारम्भिक घंटों में जागकर और अन्य लोगों के साथ सहभागी होकर प्रार्थना करते हैं। यह आप पर है कि इस प्रार्थना को कैसे उपयोग में लाते हैं।

यह आवश्यक नहीं है कि इस प्रार्थना की यथार्थ पंक्तियों को ही बोलें। जब आप अपनी प्रार्थना यात्रा को शुरू करते हैं तो परमेश्वर प्रार्थनाओं को करने के लिए आपका पथ प्रदर्शन करेगा।

इस प्रार्थना वाचा के लिए कुछ दिनों की संख्या निश्चित नहीं है। आप इसके लिए स्वतंत्र है कि अपने एक मित्र, समूह अथवा प्रियजन के साथ कितने दिनों तक का प्रार्थना सहभागी होना चुनते हैं।

अनेक लोग ३० दिनों अथवा ४० दिनों का समय चुनते हैं। कुछ समय या दिनों का निश्चय काल निर्धारित करना आपको स्वाभाविक रुप से उसके साथ एक प्रार्थना यात्रा समाप्त करने का अवसर देता है। जिससे कि आप एक नये व्यक्ति के साथ इसे दोबारा आरम्भ करें। यहाँ महत्वपूर्ण बात उत्तरदायी होना है। यह जानना कि आप एक व्यक्ति विशेष के साथ सहभागी होकर प्रार्थना कर रहे हैं जो आपका पति /पत्नी, संतान, प्रियजन मित्र हो सकता है जिसके प्रति परमेश्वर ने प्रार्थना में सहभागी होने के लिए आपकी अगुवाई की है। हमने बच्चों के लिए भी एक प्रार्थना वाचा तैयार की है जिसका आनंद पूरे परिवार एक साथ मिलकर लेते हैं जहां वे एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर रहे होते हैं।

यह प्रार्थना वाचा शिष्यता बदलाव और सुसमाचार प्रचार को सामर्थी बनाती है। जब आप प्रतिदिन इसकी दस विषय-वस्तुओ के द्वारा प्रार्थना करते हैं जो अनुग्रह, प्रेम, करुणा, पश्चताप, आराधना, समर्पण, निर्भरता, प्रभाव, शिष्यता और अधिकार है, तव यही आन्तरिक रुप शिष्य बनाती है। यह बदलाव के प्रति अगुवाई करता है- जितना अधिक समय हम यीशु के साथ व्यतीत करते हैं उतने ही उसकी समानता में बदलते जाते हैं इसका परिणाम सुसमाचार प्रचार होता है- जिन लोगों से हम मिलते हैं उनके साथ यीशु के प्रेम की सहभागिता करने के प्रति हमारी इच्छा बढ़ती जाती है। आइये मिलकर आगे बढ़ें, और प्रार्थना करना जारी रखें।

अध्याय 1

प्रार्थना

दिन 1 - अनुग्रह

टच्छज्ञ च्श्रद्धाळज्ञ

याद करने के लिए पदः
क्योकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है और और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करें। (इफिसियो २ः ८-९)

अनुग्रह : मानव जाति को उनके नए जन्म अथवा पवित्रीकरण के लिए दी गई ऐसी ईष्वरीय सहायता जिसके वह योग्य नहीं है।

प्रार्थनाः

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययनः

जब आप अध्ययन आरंभ करती हैं तब सावधानीपूर्वक अनुग्रह की परिभाषा को पढ़ें, प्रार्थना वाचा की प्रार्थना करें, और अपने स्मरण पद को दोहराए।

अनुग्रह वह पाना है जिसके हम योग्य नहीं है, हम इसे पाने की योग्यता नहीं रखते हैं, और यही इसको अद्भुत बनाता हैं हम परमेश्वर के इस अदभुत अनुग्रह को तभी समझना आरम्भ करते हैं जब हम एक पवित्र परमेश्वर के प्रति अपनी अयोग्यता, अपने पाप और अपनी लाचारी को समझते हैं। अनुग्रह सन्देह और निराशा को, आशा और जीवन में बदल देता है। यह कहता है ''तुम योग्य हो। अपने उद्देश्य के निमित मैंने तुम्हें अपनी छवि में बनाया है, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।'' अनुग्रह का अभिप्राय उस समय भी प्रेम का पात्र होना है जब उस प्रेम के योग्य होने के लिए आपने कुछ भी नहीं किया है।

परमेश्वर का मेमना यीशु, जो संसार के पापों को उठा ले जाता है (यूहन्ना 1:29), आपके और मेरे प्रति अपने प्रेम और अनुग्रह को अनुग्रहकारी तरीके से प्रदान करता है।

अपने दैनिक जीवन में हम सभी ऐसे लोगों से मिल चुके हैं जो अनुग्रह से भरे हुए थे साथ ही ऐसे लोग भी जो अनुग्रह की एक गहरी समझ नहीं रखते हैं। सम्भवत यह एक ऐसे वरिष्ट व्यक्ति के प्रति किसी की प्रतिक्रिया को देखना हो सकता है जो एक ही प्रश्न बार–बार पूछ रहा हो। सम्भवतः यह किसी अभिभावक की एक ऐसे बच्चे के प्रति प्रतिक्रिया हो जो ध्यान पाने के लिए लगातार रोए जा रहा है। अथवा एक कठिन परिस्थिति में यह सामान्य रूप से किसी की भी प्रतिक्रिया हो सकती है।

हमारे हृदय और जीवनों में अनुग्रह अनेक रूपों और आकारों में आता है। यीशु मसीह के अनुयाइओं के रूप में हम उसके अद्भुत अनुग्रह में सहभागी होने और मुफ्त में इसकी अन्य लोगों के साथ सहभ.ागिता करने के प्रति आमंत्रित किए गए हैं।

अनुग्रह इस अध्ययन का आधार है क्योंकि जब तक हम अनुग्रह की समझ को नहीं प्राप्त कर लेते हैं तब तक हम अन्य लोगों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह का माध्यम नहीं हो सकते।

ऐसे अनुग्रह की एक कहानी नीचे बताई गई है– चीन के एक गांव में रहने वाली एक युवती की भेंट कैसे मेमने के साथ हुई थी?

नाओमी की कहानीः

मैं मेम्ने से प्रेम करती हूँ। मैं सदा से ऐसा करती रही हूँ। मुझे बड़ी स्पष्टता से याद है जब मैंने पहली बार उसे देखा था।

तब मैं बच्ची ही थी शायद 6 या 7 साल आयु की। मैं चीन के एक छोटे गांव में अपनी दादी के साथ रहा करती थी जहाँ कोई भी नहीं आता है, मैं बहुत धन्यवादित हूँ कि कोई वहाँ आया।

वह इंग्लैंड से आया था अथवा गांव के लोगों के बीच यही अफवाह थी। मेरी दादी ने यह सुन लिया था कि वह कस्बे में था ..... हम सभी जानते थे कि वह हमारे कस्बे में था क्योंकि वह गलियों में नाचता और गाता था जिससे कि बच्चों का ध्यान आकर्षित करें और वे उसके पास आये। वे कहॉ जाएंगे ? मैं नहीं जानती थी परन्तु दादी ने स्पष्ट रूप से यह बता दिया था कि मुझे कभी भी उसके पास नहीं जाना है! ''वह तुझे दूर ले जाएगा और दूसरे देशों के बारे में विचित्र कहानियां सुनायेगा और तुझे तेरे देवताओं से अलग कर देगा। तुम कभी भी उसके साथ नहीं जाना है।

परन्तु मैंने ऐसा किया। मैं जानबूझकर ऐसा नहीं करना चाहती थी, मैं अपनी दादी से बहुत प्रेम करती थी परन्तु उस दिन जब मैं बर्तन धो रही थी तो यह मेरे लिए एक बड़ा प्रलोभन बन गया। दादी सो रही थी तभी मैंने आवाज सुनी। यह सामान्यता बहुत धीमी आवाज थी, पहले–पहले तो मैं जान भी नहीं पाई कि यह वह था परन्तु वह और उसके पीछे चलने वाले छोटे बच्चे हमारे घर के पास से गुजरे थे मैंने उसकी एक झलक देखी, वह नाच और गा रहा था, और बच्चों को जो गन्दे और गरीब बच्चे थे अपने पास बुला रहा था। अपने सफेद रंग और लाल बालों के कारण वह बड़ा अजीब लग रहा था। वह पहला विदेशी था जो मैंने देखा था फिर भी वह जाना पहचाना सा लगा।

मेरी उत्सुकता बढ़ गयी, और जबकि दादी दोपहर की नींद में डूबी थी मैंने बाहर जाने का फैसला किया मैं दौड़कर इस अजीब से व्यक्ति के पीछे चल रहे बच्चों के साथ मिल गयी।

वह हमें एक छोटी सी झोपड़ी में ले गया जहाँ उसने हमें बैठाया और हमसे टूटी–फूटी चीनी भाषा में बात करने लगा। मैं उसकी बातों से बहुत आकर्षित थी ऐसी बातें मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी उसने ऐसी बातें बतायी जो मैंने कभी–भी हमारे मंदिरों अथवा हमारे पुरोहितों और बुजुर्गों के द्वारा नहीं सुनी थी। उसने दो बातें कहीं जिन्हें मैं कभी नहीं भूल सकी और जिनके द्वारा मेरा जीवन बदल गया।

''स्वर्ग में एक परमेश्वर है जिसने तुम्हें रचा है वह तुमसे प्रेम करता है, और उसने अच्छे चरवाहे यीशु को हमें बचाने के लिए तुम्हें सुरक्षित रखने के लिए, तुम्हें आराम देने के लिए, तुम्हारी अगुवाई के लिए और तुम्हें घर लाने के लिए भेजा।''

''स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो मुझे जानता है? जिसने मुझे सृजा था मेरी देखभाल करता है और मुझसे प्रेम करता है? मैंने कभी भी ऐसे ईश्वर के बारे में नहीं सुना था और इस बात ने मेरी कोमल आत्मा को स्पर्श किया था।''

इसके बाद मैंने मेंम्ने को देखा। उस विदेशी ने हमें एक कागज दिया जिस पर एक चित्र बना था जिसमें एक चरवाहा, एक छोटे मेम्ने को अपनी गोद में थामें दिख रहा था। अन्य बच्चों के साथ मैं भी बड़ी खुशी के साथ उस चित्र में रंग भरने लगी। अभी मैंने आधे चित्र में ही रंग भरा था कि अचानक मुझे दादी याद आई और मैंने जाना कि मुझे यहॉ नहीं होना था मैं कूदकर वहां से भागी और फिर से बर्तन धोने लगी। दादी अभी–भी गहरी नींद में सो रही थी।

दस मिनट के बाद मुझे दरवाजे पर आहट सुनाई पड़ी। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे अनेक बच्चे जो धूलभरी झोपड़ी में मेरे साथ थें, वे वहां खड़े थे। उन्होंने कहा, ''वह तुमसे मिलना चाहता है।''

''नहीं मैं वहॉ नहीं जा सकती हूँ! मेरी दादी ने वहॉ जाने से मुझे मना किया था! वह क्यों मुझसे मिलना चाहता है?''

उन्होंने अपने कंधे सुकोड़ें और बलपूर्वक कहा, ''उसने कहा है कि हम तुम्हें लेकर ही आयें।''

'जैसे ही मैं मुड़ी तो आश्चर्य में पड़ गयी। वह विदेशी वहां खड़ा था और उसके हाथ में मेरे द्वारा बनाया गया अधूरा चित्र था। उसने पूछा क्या यह तुम्हारा बनाया चित्र है? मैंने सहमत मे सिर हिलाया। उसने फिर कहा,'' बहुत अच्छा है। मैं देखता हूं कि तुमने चरवाहे के चारों ओर खड़ी भेडों में तो रंग भरा है परन्तु उसे रंगना भूल गई हो जो उसकी गोद में है।''

मैंने किसी तरह अपना साहस बटोरा और नम्रतापूर्वक कहा ''कि वह तो निर्दोष छोटा मेम्ना है।''

'ओह'', वह मुस्कुराते हुए बोला तुमने ठीक कहा! क्या तुम भी अच्छी चरवाहे के छोटे मेम्ने की तरह होना चाहोगी?''

मैंने सहमत में सिर हिलाया। तब मुझे याद है कि उसने अपने बड़े हाथों को मेरे सिर पर रख कर प्रार्थना करना शुरू किया। मैं बिल्कुल भी नहीं जानती थी कि वह क्या कर रहा है। मुझे नहीं मालूम था कि मुझे क्या करना चाहिए परन्तु तब मैंने दो बातें जानीः

मैंने जाना कि स्वर्ग में एक परमेश्वर था जिसने मुझे रचा था और मुझ से प्रेम करता था।

मैंने जाना कि एक अच्छा चरवाहा, यीशु था, जो मुझे आराम देगा और मेरी अगुवाई करेगा।

उस सुदूर गांव में कोई भी चर्च, कोई भी मसीही अथवा बाइबले नहीं थीं किसी ने भी मुझे सिखाया नहीं था और न ही शिष्य बनाया था। 10 वर्षों तक मैं केवल यही जानती थी कि एक सृष्टिकर्ता परमेश्वर था और एक अच्छा चरवाहा था जिसका नाम यीशु था।

एक खामोश रात में सब कुछ बदल गया। विश्वविद्यालय के अपने कमरे में मुझे अकेले सोने में बड़ी कठिनाई हो रही थी मैं एक उदास बेचैनी में घिरी थी मैं बिस्तर पर इधर–उधर करवटें बदलती रही। अचानक मुझे एक आवाज सुनाई दी। ''क्या मैं तुम्हें याद हूँ?'' मैं चकित थी। कमरे में कोई नहीं था। मैं यह जॉचने के लिए उठी। आखिर में मैंने मान लिया शायद मेरी कल्पना हो। जब मैं दोबारा बिस्तर पर लेटी तो मैंने फिर से वही आवाज सुनी जो अब और अधिक स्पष्ट थी ''क्या मैं तुम्हें याद हूँ?''

अचानक चरवाहे की वह छवि मेरे सामने आ गई जिसे मैंने सात साल की उम्र में देखा था। मैं उसकी बाहों में छोटे मेम्ने को देख सकती थी। मैं रोने लगी। ''अच्छा चरवाहा?'' मैं मन ही मन बोली! उसने कहा, ''तुमने ठीक सोचा, अब समय है तुम मेरी सेवकाई में आओ''।

अगली सुबह जैसा कि उसने पथ प्रदर्शन किया मुझे अपने विश्वविद्यालय में एक छोटी मसीही सग. ंति मिली। मैं वहां एक अन्य मिशनरी को जो कनाडा से भेजा गया था, पाकर मैं चकित हुई। वह युवा चीनी छात्रों के इस समूह को प्रशिक्षण दे रहा था। मैं अपनी यात्रा आरम्भ करने के लिए उत्सुक थी और परमेश्वर के प्रति धन्यवादित थी कि उसनें किसी को मुझे शिष्य बनाने के लिए भेजा था।

जब मैं सात साल की थी तब मैंने परमेश्वर और उसके अच्छे चरवाहे यीशु के उपर विश्वास किया था जो एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा सम्भव हुआ जिससे मैं दोबारा कभी नहीं मिली,और अब मैंने सत्तरह साल की आयु मैं उसकी सेवा करना आरम्भ कर दिया था। इससे मैं कभी पीछे नहीं हटी और इससे अनग होने का मेरा कोई इरादा नहीं हैं।

प्रश्नः

आपके प्रति अनुग्रह का क्या अभिप्राय है।

नाओमी की कहानी में अनुग्रह कैसे चित्रित हुआ है?

निकट वर्तमान में घटी एक ऐसी स्थिति बताएं जब आपको अनापेक्षित अनुग्रह मिला था और आप कैसे अपने आस–पास के लोगों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का एक माध्यम बने थे?

दिन 2 - अनुग्रह

भजन २३

मनन:

भजन संहिताओं ने मेरे जीवन की प्रत्येक अवस्था में मेरा साथ दिया है। इसके प्रत्येक अध्याय ने मुझे अत्याधिक विश्राम, प्रोत्साहन और समझ प्रदान की है। मैंने १५० भजनों को अनगिनत समय बार-बार पढ़ा है और प्रत्येक बार इनमें मुझे सुनिश्चित सत्य की नयी समझ प्राप्त हुई है। मैंने कई बार भजन ९१ अथवा १३९ के द्वारा अपने बच्चों पर प्रार्थनाएं की हैं। एकीकृत आराधना के लिए भजन १४५ मुझे अति प्रिय है। हमारी अच्छा चरवाहा कहानी के लिए भजन २३ से अधिक सार्थक और कुछ नहीं हो सकता है।

भजन 23

यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे कुछ घटी न होगी,
वह मुझे हरी–हरी चराइयों में बैठाता है,
वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है,
वह मेरे जी में जी ले आता है,
धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।
चाहे मैं घोर अंधकार में भरी हुई तराई में होकर चलूँ तौभी हानि से न डरूँगा,
क्योंकि तू मेरे साथ रहता है,

तेरे सोठे और तेरी लाठी से मुझे शांति मिलती है, तू मेरे सताने वालों
के सामने मेरे लिए मेज विछाता है।
तूने मेरे सिर पर तेल मला है।
मेरा कटोरा उमड़ रहा है।
नश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ–साथ बनी रहेगी।
और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा पास करूंगा।

जब विपदाओं के सागर का तूफान आपको घेर रहा हो तब सरल रुप से प्रार्थना करें, कि वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास से चले। जब जीवन की परिस्थितियां आप पर बोझ बने तब प्रार्थना करें, वह मुझे हरी–हरी चराई में बैठाता हैं। जब आपके चारों ओर अंधकार और निराशा हो और आप उत्साह की कमी अनुभव करते हैं जब आप अवसाद में घिर जाए तब परमेश्वर को पुकारे वह मेरे जी में जी ले आता है। और तब अच्छा चरवाहा आपकी प्रार्थना सुनेगा और उत्तर देगा क्योंकि वह भला है और विश्वासयोग्य है और अनुग्रह से परिपूर्ण है। बाइबल के मेरे प्रिय पदो में एक यर्मयाह 33:3 हैं ''मुझसे प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी–बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता।'' ''वह हमें कभी भी, कहीं भी, किसी भी स्थान पर उसे पुकारने की अनुमति देता है।

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - अनुग्रह

स्त्फथ्ट ग्ज्ञ्न

मननः

परमेश्वर के साथ मेरे आराधना समय का संगीत इसे समृद्ध बनाता है। मुझे सदा से संगीत से प्रेम रहा है और मैं आराधना के सभी तरीकों को सराहना करती हूँ। शास्त्रीय गीत धर्मशिक्षा में समृद्ध हैं और इस पुस्तक के अध्यायों में आपको बहुतायत से सम्मिलित मिलगें।

सैडल बैक वर्शिप ने कुछ अतिसुंदर स्तुति और आराधना गीत लिखे हैं। हम उनके आभारी हैं कि उन्होंने इस पुस्तक में उन्हें सम्मिलित करने की अनुमति दी है।

इस डिजिटल समय काल में यह एक आशीष है कि हम अपने सर्च इंजन में एक गीत के शीर्षक को डाल सकते हैं और इस प्रकार स्तुति और आराधना के समय का आनंद ले सकते हैं। चाहे आप गीत के शब्दों पर मनन करना चाहे, एक रिकॉर्डिंग के साथ गाना चाहे अथवा संगीत में मग्न होकर आराधनापूर्वक नाचे, इस ज्ञान में डूब जाए कि कोई आपसे बहुत प्रेम करता है, आपका कर्ज चुका दिया गया है, आप ग्लानि से पूर्णतय मुक्त हो गये हैं, और यह सब हमारे करुणामय् प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अद्भुत अनुग्रह के फलस्वरुप हुआ है।

मेज पर जगह है

मैं वैसे ही आ सकता हूँ जैसे मैं हूँ तुम मेरा स्वागत करो, तुम मेरा स्वागत करो
मैं अपना बोझ नीचे रख सकता हूँ, तुम मुझे ले जाओ, तुम मुझे ले जाओ
तेरी आंखों में प्रेम से तू दोड़ा और तेरी वाणी मैं अनुग्रह के साथ, तूने कहा

मेज पर जगह है
मेज पर जगह है
जब मैं इतना दूर भटकता था, तुम मेरे विचारो में आ जाते थे
आपने रास्ता बनाया और मेरे लिए जगह बनाई
मेज पर जगह है

तूने मुझे अपना लिया और मुझे अपना बना लिया जब तूने मेरा नाम पुकारा,
तूने मेरा नाम पुकारा
महान प्रेम मैंने कभी नहीं जाना, तुमने मेरी जगह ली, तुमने मेरी जगह ले ली
तूने अपनी जान का सौदा मौत के लिए किया, तूने कब्र से उठकर कहा

मेज पर जगह है
मेज पर जगह है
जब मैं इतना दूर भटकता था
तुम मेरे विचारो में आ जाते थे
तुने रास्ता बनाया और मेरे लिए जगह बनाई
मेज पर जगह है

कुछ भी ऐसा नहीं जिस पर तुम काबू नहीं पाओगे
कोई भी नहीं है जो तेरे रास्ते में खड़ा हो सकता है
कोई जगह नहीं है जहां मैं तुम्हारे प्रेम से छुपा सकता हूं
तेरी दया कभी विफल नहीं होती
तेरी दया कभी विफल नहीं होती

हमेशा जगह है हमेशा जगह
हमेशा जगह है हमेशा जगह

दिन 4 - अनुग्रह

ग्लश्रज्ञर्ठ रै ज्ञन्ज्ञ

अध्ययन:

यीशु मसीह को कहानियां बताना बहुत अच्छा लगता था और वह एक अच्छी कहानी की सामर्थ को जानता था। वह लोगों की बड़ी भीड को आकर्षित करता था, और उसके श्रोता बड़े ध्यान से सुनते थे। कभी-कभी मैं अपनी आँखें बंद करके कल्पना करती हूँ कि वहाँ घास पर बैठकर यीशु को सुनना कैसा लगता था। जब वह इस पृथ्वी पर था तब वह अपने श्रोताओ की इन्द्रियो को आकर्षित करना चाहता था कि वे अपनी कल्पना का उपयोग करें। मसीही मनन में कल्पना की भूमिका को रिचर्ड फास्टर अपनी पुस्तक प्रेयर में इस तरह से बताते हैं :

> मसीही मनन में हम पवित्र शास्त्र के अनुभव को जीने का प्रयास करते हैं एलेक्जेण्डर वाइट कहते हैं ''आपने अपना नया नियम खोला..... और अपनी कल्पना में आप उस समय यीशु के शिष्यों में से एक हैं आप उस के चरणों में बैठे हैं..... जहाँ आपकी कल्पना उस समय पवित्र तेल से अभिषेक की गयी है, अन्य समय आप एक सरकारी अधिकारी हैं या आप उड़ाऊं पुत्र हैं, अन्यथा मरियम मगदलीनी हैं, या आगंन में बैठे पतरस हैं।''
>
> पवित्र शास्त्र के अनुभव को जीने में एक व्यवाहरिक सहायता के रूप में, इग्नेश्यिस ऑफ लॉयला हमें उत्साहित करते हैं कि इस काम में अपनी सभी इंद्रियों को उपयोग में लायें। हम झील को सूँघते है। हम उस के किनारे पर पानी के थपेड़ो को सुनते हैं। हम भीड़ को देखते हैं। हम अपने सिरो पर सूरज की गर्मी का अनुभव करते हैं। और भूख से व्याकुल होने लगते हैं। हम हवा में मौजूद नमक का स्वाद लेते हैं। हम उसके वस्त्र की छोर को छूते हैं।

जब आप लूका 15:3–7 को पढ़ते हैं तो अपनी सारी इन्द्रयों का उपयोग करें। यह आपकी सहायता करेगा कि गहराई से उस कहानी को अनुभव करने के लिए अपनी कल्पना का उपयोग करें और इसके छिपे हुए अभिप्राय को जाने।

तब उसने उनसे यह दृष्टान्त कहा तुम में से कौन है जिसकी सौ भेंड़े हो और उनमें से एक खो जाए, तो निन्यानवे को जंगल में छोड़कर उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे? और जब मिल जाती है, तब वह बडे आनन्द से उसे कंधे पर उठा लेता है, और घर में आकर मित्रों और पडोसियों को इकट्ठा करके कहता है मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है। मैं तुमसे कहता हूँ कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनंद होगा, जितना कि निन्यानवे ऐसे धर्मियो के विषय नहीं होता, जिन्हे मन फिराने की आवश्यकता नहीं है।

यहाँ आप देखते हैं कि यीशु निन्यानवे भेड़ों को छोड़कर उस भेड़ को खोजने निकल जाता है जो खो गई थी। यह हमें बलपूर्वक याद दिलाता है कि यीशु को हमारी चिंता है। चाहे हम भटक भी जाएं तब भी यीशु गहराई से हमारी चिंता करता है और आपको और मुझे बचाना चाहता है। उसके पास पिता जैसी करुणा है जो दया और करूणा से भरी हुई है यीशु उन सब को बचाना चाहता है, जो भटक गये हैं वह अनुग्रहपूर्वक हर एक को आमंत्रित कर रहा है कि कुछ बहुतायत के जीवन का अनुभव करें जो एकमात्र उसकी द्वारा मिलता है। ऐसा क्यों है?

क्योंकि वह नहीं चाहता है कि कोई भी नाश हो (2पतरस 3:9)।

क्योंकि वह खोए हुओ को ढूंढने और बचाने आया है (लुका 19:10) ।

क्योंकि वह अच्छा चरवाहा है जो अपनी भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है (यूहन्ना 10:11)।

क्योंकि उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले चुना लिया है कि उसकी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष ठहरें, अपनी

इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो (इफिसियो 1:4–6)।

क्योंकि हम परमेश्वर की विशेष प्रजा हैं..... जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अदभुत ज्योति में बुलाया है (1 पतरस 2:9)।

क्योंकि उसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा परन्तु उसने हम सबके लिए दे दियाः वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर ना देगा (रोमियो 8:32)।

भजन 32 दोबारा पढ़ें। अभी हाल में जब मैं इस भजन को पढ़ रही थी तब परमेश्वर ने मुझे आश्वस्त किया। यह इस प्रकार से था मानो कि यह वचन प्रकाश में उभर रहे होंः यहोवा मेरा चरवाहा है मुझे कुछ घटी ने होगी। भजन 23 मे हमारे चरवाहे के रूप में यीशु की कल्पना हमें आश्वासन देती है– क्योंकि यहोवा हमारा चरवाहा, हमें कुछ घटी न होगी। चाहे हमे इस जीवन में अत्यंत कम अथवा अत्यंत अधिक संसाधन क्यों ना रखते हो, यदि हम यीशु को जानते हैं यदि वह वास्तव में हमारा चरवा. हा है तब हम विश्वस्त होकर कह सकते हैं कि मुझे कोई घटी नही है। चाहे हम किसी भी परिस्थिति का सामना करें, हमारे पास यह आश्वासन है कि वह घोर अंधकार से भरी घाटी में हमारे साथ चलेगा। चाहे हम कितने ही दर्दनाक संबंधों से गुजर रहे हों अथवा चुनौती भरी परिस्थितियों का सामना कर रहें हों वह हमारे साथ है क्योंकि वह यहोवा रोही हमारा चरवाहा है। वह हमारे प्राणों से प्रेम करता है, वह हमें विश्राम देता है, वह हमारा शिक्षक और पथ प्रदर्शक है, और हम सदा के लिए उसके हैं।

अपने अनुग्रह के कारणवश यीशु धर्म के मार्गों में अपने नाम के निमित मेरी अगवाई करता हैं।

उसके अनुग्रह के कारण मैं किसी भी बात से नहीं डरुँगा क्योंकि यीशु मेरे साथ है अपने अनुग्रह के कारण यीशु मेरे सताने वालों के सामने मेरे लिए मेज बिछाता है उसके अनुग्रह के कारण वह मेरे सर पर तेल मलता है।

उसके अनुग्रह के कारण मेरी आशीषों का कटोरा उमड़ रहा है।

यीशु हमसे अत्यधिक प्रेम करता है। हम परमप्रधान की पुत्रियां हैं और जो लोग उससे प्रेम करते हैं उन्हें वह किसी अच्छी बात की कमी नहीं होने देता हैं।

परमेश्वर के अनुग्रह की भरपुरी के कारण हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं, ''मुझे किसी बात की कमी नहीं है।'' पौलुस 2 कुरिन्थियों 12:9 हमें याद दिलाता है कि चाहे हम धोर निराशाओं में घिरे हों परमेश्वर का अनुग्रह हमारे लिए बहुत है क्योंकि परमेश्वर की सामर्थ, निर्बलता में सिद्ध होती है। कष्ट के समय परमेश्वर हमारे साथ है। अन्याय के मध्य में परमेश्वर हमारे लिए खड़ा है। चाहे आप कैसे भी संघर्ष का सामना ही क्यों ना कर रहे हों चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों ना हो, आइए इस बात से आस्वस्त हों कि पिता परमेश्वर आपके साथ है।

जब हम अपने पाप की गहराई को पहचानते हैं और जब यीशु में क्षमा, स्वतंत्रता और नये जीवन को पाते हैं तब हम अनुग्रह के अनमोल उपहार को समझना आरंभ करते हैं ।

जैसा कि हमारा स्मरण पद दर्शाता है, अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है न कि स्वयं के कारण यह परमेश्वर का उपहार है.....। हमें परमेश्वर के पास छोटे बच्चों के समान आना है कि पूर्णतया उसकी दया, उसका अभिषेक, उसके बलिदान पर निर्भर रहें। यह सब कुछ उसके बारे में हैं।

यीशु आपको आमंत्रित कर रहा है कि आपके लिए उसके आनंद, उसकी करुणा उसके प्रेम को आप अनुभव करें। जब आप अपनी आंखें बंद करते हैं तो उसके हाथ को थामें– उसके कीलो से छिदे हाथ को– और सुखदाई झरनों के पास ले जाने और आपके प्राण को पुर्नजीवन करने के लिए उसकी अगुवाई में चलें। वह अच्छा चरवाहा है जो आपमें आनंदित होता है, जो अपने प्रेम के कारण शान्त रहता है और ऊंचे स्वर से गाता हुआ आपके कारण मगन होता है (सपन्याह 3:17)।

प्रश्नः

भटकी हुई भेड़ की कहानी में अनुग्रह कैसे प्रदर्शित हुआ है?

भटकी हुई भेड़ के मिल जाने पर यीशु क्या कहता है?

अपने भौतिक, आत्मिक अथवा भावनात्मक संसार में क्या आप कोई कमी देख रहे हैं?

क्या आप यीशु के पास जो अच्छा चरवाह है, आये हैं, और उसको सहायता करने के लिए कहा है? उसकी ईश्वरीय मध्यस्थता? क्या आप विश्वास करते हैं कि वह आपकी सहायता करना चाहता है? क्योकि अथवा क्यों नहीं?

जो कुछ भी आपकी आवश्यकता है उसे नीचे लिखें। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह अनुग्रहपूर्वक आपकी आवश्यता की पूर्ति करें।

यह जानकर आप कैसा अनुभव करते हैं कि यीशु आपके कारण आनंदित होता है?

अनुग्रह पर आपका प्रिय गद्यांश कौन सा है उसे याद करें?

दिन 5 - अनुग्रह

ग्लश्रज्ञर्ठ रै ज्ञन्ज्ञ

हे सर्वश्रेष्ठ यीशु जो मेरे प्राण से प्रेम करते हैं,

आप यहोवा रोही, अच्छे चरवाहे हैं, जिसने मेरे लिए कलवरी क्रूस पर अपने प्राण दिए, जब मैं भटक जाता हूँ तो आप मुझे खोजते है, मेरा नाम लेकर बुलाते हैं, और मेज पर आपने मेरे लिए जगह बनाई है। आप जो हैं उस कारण मैं स्तुति करती हुई आपके सम्मुख नतमस्तक होती हूं। आपके उस अनुग्रह के लिए धन्यवाद जिसके कारण मैं आपकी अतिप्रिय पुत्री ठहरी हूँ आपकी दया और प्रेमभरी करुणा के लिए धन्यवाद। आपकी विश्वासयोग्यता के लिए धन्यवाद जो प्रतिदिन सुबह नये रूप से मिलती है। मेरा पथ प्रदर्शन करने के लिए धन्यवाद। हे प्रभु, मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ मुझे सुखदाई झरनों के पास ले जाएं। मेरे जी में जी लाएं। अपने नाम के निर्मित धार्मिकता के मार्गों में मेरी अगुवाई करें, अपने आनंद और शांति से मुझे परिपूर्ण करें। मेरे मित्रों और मेरे परिवार और मित्रों और मेरे आस–पास के लोगों के प्रति मुझे अपने प्रेम और अनुग्रह का माध्यम बनाएं। मुझे अवसर दें कि आपकी महानता और महिमा को बता सकूं। आज के दिन मेरे द्वारा अपना प्रकाश फैलायें।

आपके नाम में जो सब नामों में सर्वश्रेष्ठ है मैं यह प्रार्थना करती हूँ आमीन।

व्यवहारिक चरण:

☐ आपके प्रति अनुग्रह को क्या इतना आकर्षक बनाता है?

☐ आप अपने दैनिक जीवन में कैसे इसका उपयोग करेंगे?

☐ इसके साथ और कैसे आप सत्य की सहभागिता करेंगे?

अध्याय 2

प्रेम

दिन 1~ प्रेम

ळम्‍ प्श्रैम्श्व्श्र क्भ स।ह्ज्ञ ळै।

प्रेम: अन्य लोगों की भलाई के लिए निस्वार्थ निष्ठा और उदारताभरी चिंता करना है।

प्रार्थना:

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययन:

जब आप इस अध्ययन को आरम्भ करते हैं तो ध्यानपूर्वक प्रेम की परिभाषा को पढ़ें, वाचा की प्राथ.ना करें, और अपने स्मरण पद को दोहरायें।

परमेश्वर का प्रेम स्थिर सर्वसिद्ध और अनुसरण करने वाला प्रेम है। उसका प्रेम हम में है, हमारे द्वारा है और हमारे ऊपर है। यह कैसे हो सकता है कि परमेश्वर का अभूतपूर्व प्रेम तब भी हमारे साथ बना रहता है जबकि हम इससे दूर भागने की चेष्टा करते हैं? वह कभी समाप्त नहीं होने वाले सदैव और हमेशा के लिए बने रहने वाले प्रेम के साथ निरंतर हमारा अनुसरण करता है। प्रभु अनुग्रहकारी, करुणामाय और प्रेम का धनी है पौलुस इफिसियो 3:17—19 में कहता है—

''और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड पकडाकर और नेव डालकर सब पवित्र लोगों के साथ भलीभाती समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई, और ऊंच.ाई और गहराई कितनी है और मसीह के उस प्रेम को जान सकूं जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण होते जाओ।''

हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम को समझना सरल नहीं है: परन्तु जब हम यह करते हैं, तब हम उसकी परिपूर्णता से भरपूर होते हैं और उसका प्रेम हम में और हमारे द्वारा प्रवाहित होने लगेगा। हम स्वयं को उस दृष्टि से देखेंगे जैसा कि वह हमें देखता है और अन्य लोगों को उस दृष्टि से देखेंगे जैसा वह उन्हें देखता है। हम परमेश्वर के बिना शर्त के प्रेम को पाने के लिए व्याकुल रहते हैं क्योंकि हम इसके लिए रचे गए हैं।

टज्ञठल्भ्‍ क्भ क्ळज्ञभ्‍

यह वर्ष 1963 की बात है कि मेरी मॉ आइलीन एक होटल के कमरे में मुझे गर्भ में धारण किये हुए अकेली थीं वे यीशु से प्रार्थना कर रही थी कि यदि वास्तव में वह मसीह है तो उन्हें दर्शन दे।

आइलीन का जन्म यहूदी परिवार में हुआ था। मेरी माँ की मुलाकात 16 वर्ष की आयु में मेरे पिता से हुई थी और अपने अभिभावकों की सहमति से उन्होंने विवाह किया था। वहा केवल एक ही शर्त थी क्योंकि मेरे पिता ईतालवी थे (उनके अभिभावक सिसली से आये थे और न्यूयॉर्क नगर में बस गए थे) अत: इससे पहले की मेरे दादा उन्हें अपनी बेटी से विवाह करने की अनुमति

MEMORY VERSE:
See what great love the Father has lavished on us, that we should be called children of God (1 John 3:1).

देते, उन्हें अपना नाम, कारूसो से कॉर में बदलना था– जो एक सरल बात लगती थी।

मेरे पिता एक अच्छा जीवन यापन कर रहे थे और उनके परिवार की जीवन शैली ठीक चल रही थी, परंतु वे इससे पूर्णतया संतुष्ट नहीं थे। एक रात बिजली चली गई तो मेरे पिता ने एक ट्रांजिस्टर रेडियो चलाया और उस पर सुसमाचार के प्रसारण को पहली बार सुना। उसमें जब बिलिग्राहम ने निमंत्रण दिया तो मेरे पिता ने तुरंत प्रतिक्रिया करके यीशु मसीह को अपने उद्ध ारकर्ता के रूप में ग्रहण किया। उस क्षण से उनके जीवन में बड़ा बदलाव आया उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी क्योंकि इससे परमेश्वर को आदर नहीं मिलता था। वह एक दिन में सिगरेट के 3 पैकेट पी जाते थे जिसे उन्होंने तुरत छोड़ दिया। उन्होंने उन सबके साथ, जिनसे भी वे मिलते थे सुसमाचार की सहभागिता करना आरम्भ किया। मेरी माँ, और दोनों ओर के परिवारों के सदस्य, यह सोचने लगे कि उनका दिमाग खराब हो गया है, इसलिए वे एक न्यायाधीश के पास गए कि उन्हें एक मानसिक संस्थान में भर्ती कराया जा सके। इस पर परिवार के सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर किए, परन्तु अंतिम समय में मेरी मॉ ने यह करने से इंकार कर दिया और मेरे माता और पिता मे अलग–अलग रहने की सहमति बन गई।

इन सब बातों के बाद मेरी मां बहुत भ्रमित थी और वे अनेक प्रश्नों का उत्तर चाहती थी। सबसे पहले वे अपने पिता के पास गई जिन्होने उनसे रब्बी से बातचीत करने को कहा। उन्होंने मॉ से कहा, ''तुम पहले से ही हमारे परिवार के लिए लज्जा का कारण रही हो। तुम मुझसे बातचीत नहीं कर सकती हो।'' मेरी मां एक अन्य धार्मिक अगुवे के पास गई जिसने उनसे 25 डालरो की मांग की। मेरी मां बहुत अकेली थी अपने रहने के लिए कोई स्थान न पाकर वे एक होटल में रुकीं और वहां कमरे की अलमारी में उन्हें एक बाइबल मिली। उसके बाद उन्होंने प्राथ. र्ना करना आरम्भ किया और परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना को सुना।

उनके सामने बाइबल का भजन 116 खुला हुआ था

''मैं प्रेम रखता हूं इसलिए यहोवा ने मेरा गिड़गिड़ाने को सुना है उसने मेरी और कान लगाया है इसलिए मैं जीवन भर उसको पुकारा करूंगा।मृत्यु की रससिया मेरे चारों ओर थीं मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा। तब मैंने यहोवा से प्रार्थना की कि हे यहोवा विनती सुनकर मेरे प्राणों को बचा ले..... जब मैं बलहीन हो गया उसने मेरा उद्धार किया. .... ''तूने तो मेरे प्राण को मृत्यु से, मेरी आंख को आंसू बहाने से और मेरे पांव को ठोकर खाने से बचाया है।''

उस रात मेरी मां ने यीशु को अपने मसीहा उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में ग्रहण किया। फिर उन्होंने मेरे पिता को फोन किया और कहा कि वह घर लौटना चाहती हैं। पिता ने पूछा ''तुम कैसे आ रही हो और उन्होंने उत्तर दिया आनंदपूर्वक उद्धार प्राप्त करके।

इसके कुछ समय बाद मेरे माता–पिता ने पूर्णकालिक सेवकाई के लिए परमेश्वर की बुलाहट को सुना और बाइबल स्कूल में प्रवेश लिया। परन्तु उनके सामने आगे अनेक चुनौतियां थीं। जब आइलीन अपने माता पिता के पास गई कि यीशु को ग्रहण करने के अपने निर्णय को बताये तब उनकी मां ने उन्हें मार डालने का प्रयास किया उन्होंने कहा कि ''अच्छा होता कि मर जाओ बजाये इसके कि यीशु में विश्वास करो।'' फिर वहां पुलिस आयी। मेरे दादा को दिल का दौरा पड़ा। उसमें अनेकों साल लग गये कि वे दोबारा एक–दूसरे को देख पाते और अनेक वर्षों का समय लगा कि उनके आहत हृदय में दोबारा प्रेम और स्वीकृति लौट पाती।

जब मैं 6 वर्ष की थी, तो मेरे माता पिता ने कोलम्बस, ओहायो जाने का निर्णय लिया। वहॉ उन्होंने कनवर्जन सेंटर (परिवर्तन केंद्र) नामक एक सेवकई आरंभ की। मेरे पिता के पास एक छोटी ग्रहकलीसिया थी और बढ़ते हुए परिवार को चलाने के लिए मेरी मां दर्जी का काम करती थी। मेरे दादा–दादी हमसे मिलना चाहते थे और हम उनके पास गए। परमेश्वर ने उनके दिल में काम किया और वह आर्थिक रूप से हमारी सहायता करने लगे। तो यह प्रारंभ था जब टूटा हुआ दोबारा जुड़ने लगा था।

हम नियमित रूप से उनसे मिलते रहे । मेरे दादा बहुत प्रेम करने वाले, उदार तथा दयालु व्यक्ति थे। प्रत्येक बार जब हम मिलते थे तो मेरे माता–पिता उन्हें यीशु के बारे में बताते थे। प्रतिउत्तर में मेरे दादा कहा करते थे ''कि अब तो वे बहुत बूढ़े हो गए हैं, अच्छा होता कि युवा

अवस्था में वे इन बातों को जानते।'' हम उस समय बड़े आनंदित हुए जब मरने से पहले मेरे दादा ने यीशु को ग्रहण किया था। उनकी मृत्यु के बाद मेरी दादी ने भी यीशु को अपने मसीहा के रूप में स्वीकार कर लिया था।

परमेश्वर के प्रेम ने उसे जोड़ा है जो टूट गया था। उसने मृत्यु से जीवन में, और अन्धकार से ज्योति में प्रवेश कराया है। परमेश्वर के नाम उसके स्वभाव और सामर्थ को सुंदरता पूर्वक दर्शाते हैं। जब मैं अपनी मॉ की कहानी को दोहरा रही हूँ तो यह नाम मेरे लिए विशेष महत्व रखते हैं।

यहोवा रोही– प्रभु मेरा चरवाहा, मेरे जी में जी लाने वाला।
यहोवा शालोम – परमेश्वर जो शान्ति है, जो जीवन के तूफान को शान्त करता है।
यहोवा निस्सी– यहोवा मेरा पताका है जो हमें सुरक्षा और विजय देता है।
यहोवा यिरे– परमेश्वर जो आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
यहोवा राफा– परमेश्वर चंगाई देने वाला है जो शारीरिक और भावनात्मक जख्मों को चंगा करता है।
यहोवा सिद्धकेनू– यहोवा हमारी धार्मिकता है।

प्रश्नः
परमेश्वर कौन सा नाम आपके जीवन में विशेष महत्व रखता है और ऐसा क्यों हैं?

उन दो तरीकों को बताएं जहां इस कहानी में परमेश्वर का प्रेम प्रकट हुआ था?

जो कुछ भी हम करते हैं परमेश्वर का प्रेम, क्या उस पर निर्भर होता है?

दिन 2 - प्रेम

भजन 116

मननः

भजन 116 मेरी माँ का प्रिय भजन था। मैने उन्हे इसे इतनी बार बोलते सुना था कि एक लड़की के रूप में मुझें यह याद हो गया था। जैसा कि मैने कल के अध्ययन में बताया था, उन्होने इस भजन को बाइबिल के पृष्ठों में खोजा था। तब तुरन्त उनकी आँखों के छिलके जैसे गिर गये थे और उसी रात उन्होने अपने हृदय में यीशु को ग्रहण किया था और सदैव के लिये उसकी पुत्री बनी थी। मेरी माँ ने आरम्भ में ही शिष्यता की लागत– यीशु के पीछे चलने के मूल्य को समझ लिया था। परन्तु उसके लिये यह एक बलिदान देना नही था। वह यीशु के प्रेम में डूबी हुयी थी।

भ्झाज्ञ 116

मैं प्रेम रखता हूं इसलिए कि यहोवा ने मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है। उसने जो मेरी और कान लगाया है इसलिए मैं जीवन भर उसको पुकारा करूंगा। मृत्यु की रस्सियॉ मेरे चारों ओर थी मैं अधोलोक की सकेती में पडा था, मुझे संकट और शोक भोगना पडा।

तब मैंने यहोवा से प्रार्थना की, "हे यहोवा बिनती सुनकर मेरे प्राणों को बचा ले।" यहोवा अनुग्रहक. ारी और धर्मी है और हमारा परमेश्वर दया करने वाला है

यहोवा भोलो की रक्षा करता है, जब मैं बलहीन हो गया था उसने मेरा उद्धार किया। हे मेरे प्राण, तू अपने विश्राम स्थान में लौट आ क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है।

तूने तो मेरे प्राण को मृत्यु से, मेरी आंख को आंसू बहाने से, और मेरे पांव को ठोकर खाने से बचाया है। मैं जीवित रहते हुए अपने को यहोवा के साम्हने जानकर नित्य चलता रहूंगा। मैंने जो ऐसा कहा है इसे विश्वास की कसौटी पर कस कर कहा है कि "मैं तो बहुत ही दुखी हूं।" मैंने उतावली से कहा, "सब मनुष्य झूठे हैं"।

यहोवा ने मेरे जितने उपकार किये हैं उनका बदला मैं उसको क्या दूँ? मैं उद्धार का कटोरा उठ. ाकर, यहोवा से प्रार्थना करूंगा, मैं यहोवा के लिए अपनी मन्नतें सभो की दृष्टि में प्रगट रूप में उसकी सारी प्रजा के सामने पूरी करूँगा।

यहोवा के भक्तों की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल है। हे यहोवा, सुन मैं तो तेरा दास हूँ मैं तेरा दास, और तेरी दासी का पुत्र हूँ तूने मेरे बंधन खोल दिए हैं। मैं तुझको धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा और यहोवा से प्रार्थना करूंगा। मैं यहोवा के लिए अपनी मन्नतें, प्रगट में उसकी सारी प्रजा के सामने, यहोवा के भवन के आंगन में, हे यरूशलेम, तेरी भीतर पूरी करूँगा। याह की स्तुति करो।

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - प्रेम

स्त्फथ्त्ज्ञ्न

मननः

वह जो हमसे बलिदानयुक्त और बिना शर्त का प्रेम करता है उसके प्रति यह गीत, "मॉय जीसस आई लव दी" एक प्रशंसा गान है। चाहे आप इसके शब्दों को पढना चाहे और उन पर मनन करना चाहे इसे एक रिकॉर्डिंग के साथ गाना चाहें अथवा इसके संगीत पर आराधनापूर्वक नाचें, हर स्थिति में यीशु के प्रति यह आपका प्रेम गीत होना चाहिए।

मॉय जीजस, आई लव यू, 1864, विलियम आऱ फेदरसन

मेरे यीशु मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मैं जानता हूँ कि तू मेरा हैं।
तेरे लिए पाप की सभी मूर्खताओं को मैं त्यागता हूँ।
मेरा अनुग्रहकारी मुक्तिदाता, मेरा उद्धारकर्ता तू ही है
अगर कभी मैंने तुमसे प्रेम किया, तो मेरे यीशु यह अब है

मैं तुमसे प्रेम रखता हूँ क्योंकि तूने पहले मुझसे प्रेम किया है
और कलवरी के क्रूस पर मेरी क्षमा खरीदी।

अपने माथे पर कांटे पहनने के लिए मैं तुझे प्यार करता हूँ,
अगर कभी मैंने तुमसे प्रेम किया, तो मेरे यीशु यह अनन्त अब है

महिमा और आनंद के मकानों में,
मैं तुम्हें कभी भी स्वर्ग में इतना उज्जवल निहारूँगा
मैं अपने माथे पर चमकते मुकुट के साथ गाऊंगा।
अगर कभी मैंने तुमसे प्रेम किया, तो मेरे यीशु यह अब है

दिन 4 - प्रेम

ग्ळश्रज्ञर्ठ रै ज्ञन्ज्ञ

अध्ययन:

बलिदान युक्त और बिना शर्त के प्रेम का परम उदाहरण हमारे स्थान पर यीशु का मरना और हमें पापों से बचाना है। हमारे सृष्टिकर्ता विश्वमंडल के परमेश्वर ने हमारे स्थान पर अपने एकमात्र पुत्र को बलिदान किया। यूहन्ना 3:16 बताता है "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश न हो परंतु अनन्त जीवन पाए।" इस पद को, संपूर्ण बाइबिल में सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला पद कहा गया है। हममें से प्रत्येक के लिए परमेश्वर के प्रेम की गहराई को जानने और समझने के प्रति पूरे संसार के लिए यह एक विवश कर देने वाला आमंत्रण है, और पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर के साथ सदा के लिए आनन्त जीवन के आश्वासन और परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण करने के प्रति यह एक सरल निमंत्रण है। यह हमसे केवल विश्वास करने की मांग करता है उसमें विश्वास करना जिसने यीशु को भेजा है और यीशु में विश्वास करना जिससे कि हम उद्धार पा सके।

"यदि तू यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करें कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओ में से जिलाया तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।" (रोमियो १०:९)

उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" (प्रेरित १६रू३१

यह निमंत्रण पूरे विश्व में प्रत्येक पुरुष स्त्री और बच्चों के लिए हैं चाहे वह अमीर हो अथवा गरीब, युवा हो अथवा वृद्ध हो। परमेश्वर इतना ही अधिक आपसे प्रेम करता है और चाहता है कि आप उसके सदैव के परिवार के सदस्य बनें।

एक छोटी सी लड़की के रूप में मुझे अपने रसोई घर में लटकी हुई एक तख्ती अभी भी याद है जिस पर 1यूहन्ना 3:18 लिखा हुआ था। "हे बालकों हम वचन और जीभ ही से नही वरन काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।" यह हमें प्रतिदिन प्रेम में होकर जीवन जीने को याद दिलाता है।

हमें प्रेम करने के लिए चुना गया है। महानतम आज्ञा यह घोषित करती है कि हमें। मन, प्राण, बुद्धि और सामर्थ से परमेश्वर को प्रेम करना है और अपने समान दूसरों को प्रेम करना है (मती 22:37–39) हमारी प्राथमिकता प्रेम करना है, परमेश्वर को और लोगों को प्रेम करना।

परन्तु यीशु इससे भी आगे बढ जाता है जब वह यह निर्देश देता है कि हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करना है।

"मैं तुमसे कहता हूँ कि अपने बैरियो से प्रेम करो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की संतान ठहरोगे।" (मत्ती ५:४४-४५)

हमें ना केवल अपने शत्रुओ से प्रेम करने और उनके लिए प्रार्थना करने को कहा गया है परन्तु उनकी भलाई करने को कहा गया है। मैं आपके बारे में नहीं जानती हूँ परन्तु अपने में स्वयं की सामर्थ

में, ऐसा करने में मैं असमर्थता देखती हूँ। यीशु यहां इस बात पर केन्द्रित होना जारी रखते हैं और प्रोत्साहित करते हैं कि जो हमें प्रेम करते हैं उन्हीं से प्रेम करना कोई विशेष बात नहीं है इस प्रकार तो पूरा संसार भी करता है। दूसरे शब्दों में यीशु प्रेम के प्रति अपने मापदंड को और ऊंचा कर देता है और वह मांग करते हैं कि जो करना असम्भव लगता है। अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उनके प्रति भलाई करो और उसके बदले में किसी बात की आशा न रखो। फिर इसके बाद वह क्या कहते हैं? ''उसका तुम्हें बड़ा प्रतिफल मिलेगा और तुम परमप्रधान की संतान ठहरोगे।'' यीशु हमें ठीक इसी प्रकार के प्रेम को करने की चुनौती दे रहे हैं जैसा प्रेम उन्होंने तब किया था जब वे इस पृथ्वी पर थे। यदि हम वास्तव में उसकी संतान हैं तो हम वैसे ही प्रेम करेंगे जैसा वह प्रेम करता है– जिस तरीके से वह हमें प्रेम करने की आज्ञा देता है :

परंतु मैं तुम सनने वालों से कहता हूं कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखें, जो तुमसे प्रेम करे उनका भला करें। जो तुम्हें श्राप दे, उनको आशीष दो, जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिए प्रार्थना करो। (लूका ६:२७, २८)

यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बडाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखते हैं यदि तुम अपने भलाई करने वालों के ही साथ भलाई करोगे तो तुम्हारी क्या बडाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। यदि तुम उन्हें उधार दो जिसने फिर पाने की आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बडाई? क्योंकि पापी भी पापियों को उधार देते हैं कि उतना ही फिर पाए। वरन अपने शत्रु से प्रेम रखो और भलाई करो और फिर पाने की आशा ने रखकर उधार दो और तुम्हारे लिए बडा फल होगा और तुम परम प्रधान की संतान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो ध न्यवाद नहीं करते और बुरो पर भी कृपालु है जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो। (लूका ६:३२-३६)

और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया कि तुम भी उसके पद चिन्हों पर चलो। (१ पतरस २:२१)

यीशु ने कूस की वेदना सहते हुये पुकार कर कहा था, ''हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि यह नहीं जानते हैं कि क्या कर रहे हैं'' (लुका 23:34)। यीशु ने उनके लिये प्रार्थना की थी जिन्होंने उसे सताया था। यीशु का प्रेम, उनका सेवा करने वाला हृदय, और उसकी क्षमा यदि हमारे द्वारा प्रवाहित नहीं हो रही है तो यीशु के सामान प्रेम करना, यीशु के समान क्षमा करना, और यीशु के समान सेवा करना हमारे लिये असम्भव है।

परन्तु ऐसा हो सकता है यदि आप अभिप्रायपूर्वक यह प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर से मांगते हैं कि, **मेरी सहायता करें कि मैं अपने संपूर्ण मन से आपसे प्रेम करूँ, मेरी अन्य लोगों को उसी तरह से प्रेम करने में मदद करें जिस प्रकार आप मुझसे प्रेम करते हैं।**

यीशु इसे स्पष्ट करते हैं। जब हम यीशु में बने रहते हैं और उसका वचन हम में बना रहता है, तब हमारी यीशु केंद्रित प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा।

''यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बाते तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा'' (यूहन्ना १५:७)।

''और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उस से मिलता है क्योंकि हम उसकी आज्ञाओ को मानते हैं, और जो उसे भाता है वही करते हैं'' (१यूहन्ना ३:२१-२२)।

''और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते है, तो वह हमारी सुनता है (१यूहन्ना ५:१४)।

''और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। यदि तुम मुझसे मेरे नाम से कुछ मांगोगे तो मैं उसे करूंगा (यूहन्ना १४:१३-१४)

मैंने अपने जीवन में ऐसा अनेक बार अनुभव किया है, और मुझे पूरा आश्वासन है कि जब आप उसकी सिद्ध इच्छा को पूरा होने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं तब वह आपकी प्रार्थनाओ के उत्तर देगा और अतिशीघ्र उत्तर देगा। यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप उसे इस सारे विश्व में किसी भी बात के बजाय अधिक प्रेम करें जिसमें आपके पति/पत्नी, संतान, अभिभावक, मित्र और शत्रु भी सम्मिलित है अधिक प्रेम करें। और जब आप सब बातों से अधिक यीशु से प्रेम करते हैं तो आप अपने पति/पत्नी,

सन्तानों, अभिभावक, मित्र और शत्रु से भी प्रेम करने लगते हैं क्योंकि यीशु अपने द्वारा उसी अनुग्रह, क्षमा और भलाई के साथ प्रेम करेगा जिससे वह आपको प्रेम करता है।

मदर टेरेसा अपनी पुस्तक ''नो ग्रेटर लव'' मे इस बारे में लिखती है कि यीशु से कैसे प्रेम करें :

''उदारतापूर्वक यीशु से प्रेम करें ,पीछे देखे बिना और बिना भय के उस से विश्वासपूर्वक प्रेम करें। यीशु के प्रति स्वयं को पूर्ण तया समर्पित करें। वह आपको इस शर्त के साथ बड़ी-बड़ी बातों को पूरा करने में उपयोग करेगा कि आप अपनी कमजोरी के बजाय उसके प्रेम में कहीं अधिक विश्वास रखते हैं। उसमें भरोसा रखें, उस में एक अंधभक्ति और पूरे आश्वासन के साथ विश्वास करें क्योंकि वह यीशु है।

मननः

बाइबल में प्रेम पर अनेक पद मिलते हैं। प्रेम की आवश्यकता और हमें प्रेम रखने के लिए कैसे चुनौती दी गई है इसको नम्रतापूर्वक याद दिलाने के लिए यहां कुछ ऐसे पद दिए जा रहे हैं।

''और सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है'' (१पतरस ४:८)।

'मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो (यूहन्ना १३:१४-१५)।

'जो कुछ करते हो प्रेम से करो'' (१कुरिन्थियों १६: १४)।

'यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओ को मानोगे (यूहन्ना १४: १५)।

''यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मुझसे प्रेम रखे तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा और हम उसके पास आयेगे और उसके साथ वास करेंगे'' (यूहन्ना १४:२३)।

प्रश्नः

आपके लिए प्रेम का क्या अभिप्राय है?

इसका एक उदाहरण दें कि आपने कैसे और कब प्रेम का अनुभव किया है?

प्रेम का अत्यन्त चुनौती भरा पक्ष क्या है?

व्यक्तिगत रूप से क्या बात परमेश्वर के प्रेम को आपके प्रति इतना अदभुत बनाती है?

दिन 5 - प्रेम

ज्ञर्श्वन्ज्ञ टज्ञैश्र व्यळज्ञश्थ्श्रक च्श्रण्ज्ञ

प्रिय पिता तू जो स्वर्ग में है, आपने हमसे जो प्रेम किया है वह कितना महान है, कि हम आपकी सन्तान कहलाए आपके इस अनुग्रह के लिए आपका धन्यवाद जिसने मुझे आपकी अतिप्रिय पुत्री बनाया है। मेरी सहायता करें कि मैं अपने सारे मन से तुझे प्रेम करूँ। मेरी सहायता करें कि मैं वैसे ही दूसरों से प्रेम करूँ जिस प्रकार आपने बलिदान युक्त और बिना शर्त का प्रेम मुझसे किया है। मेरी सहायता करें कि मैं अपने शत्रुओं से प्रेम करूँ। हे पिता मैं ऐसा आपकी सहायता के बिना नहीं कर सकती हूँ। मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि उन सब लोगों से, जिन्होंने मुझे चोट पहुँचाई है, या मेरा विरोध किया है, आप मेरे द्वारा प्रेम करें। जब मैं ऐसा नहीं कर पायी हूं तो उसके लिए मुझे क्षमा करें। मैं निवेदन करती हूं कि मेरे अन्दर एक शुद्ध मन उत्पन्न करें, हे पिता, और मेरे भीतर एक उचित आत्मा दें। हे पिता जब मैं आपको वैसे प्रेम नहीं कर पाई हूँ जैसा मुझे करना चाहिए तो इसके लिए मुझे क्षमा करें। यीशु मेरी सहायता करें कि मैं आपके समान प्रेम करने और आपका आज्ञापालन करने वाली बनूँ। मेरे जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के लिए मुझे अपने प्रेम का माध्यम बनाये जिससे कि आपको मुझ में महिमा मिले। मेरे द्वारा प्रेम करें, मेरे द्वारा आशीष दे, मेरे द्वारा क्षमा प्रदान करें।

मैं यह सब कुछ आपके अनमोल और पवित्र नाम से मॉगती हूँ, आमीन।

व्यवहारिक चरण:

☐ आपके प्रति क्या बात प्रेम को इतना आकर्षक बनाती हैं?

☐ भ्आप इसे अपने दैनिक जीवन में कैसे लागू करेंगी?

☐ ॅकिसके साथ आप इस सत्य की सहभागिता करेंगी?

अध्याय 3

करुणा

दिन 1 ~ करुणा

थ्ब्न्ज़ घ्ज्ञश्र वै टज्ञैश्र टकैै ल्ज्ञैग

करुणा : अन्य लोगों की व्यथा के प्रति, एक सहानुभूतिपूर्ण विवेक जो उस व्यथा को हटाने की इच्छा रखता है।

याद करने के लिए पदः
मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा है वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। (यूहन्ना१५:१२)

प्रार्थनाः

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययनः

जब आप यह अध्ययन आरम्भ करती हैं तब ध्यानपूर्वक करुणा की परिभाषा का को पढें, दी गई प्रार्थना करें और अपने स्मरण पद का पुनावलोकन करें।

दा ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ सोशल वर्क की एक स्नातक छात्र की इस गवाही ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया था परमेश्वर ने उसके ह्रदय में बुजुर्ग लोगों के लिए एक गहरा सम्मान दिया है और वह उनके जीवनों को अच्छा बनाना चाहती है। नीचे उसने एक घटना का विवरण दिया है जो उसके साथ 2019 के क्रिसमस की शाम को घटी थी।

एल्भ् क्भ् क्ळझन्भ्

> *हमने प्रेम इसी से जाना है कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए पर जिस किसी के पास संसार की सम्पत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना ना चाहे तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? हे बालको हम वचन और जीभ ही से नहीं वरन काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। (१यूहन्ना ३:१६-१८)*

यह क्रिसमस की शाम थी जब मैं डाकघर से अपने घर लौट रही थी और एक किराने की दुकान के पास से गुजरी। वहाँ दुकान के प्रवेश के पास एक बेघर व्यक्ति खड़ा हुआ था और उसके हाथों में एक तख्ती थी। गर्मियों और पतझड में कई बार मैं उसे देख चुकी थी परन्तु मैंने उससे कभी बातचीत नहीं की थी। जैसे ही मैं उसके पास से गुजरी मेरे भीतर से आवाज आई "वापस जाओ और उसकी मदद करो।" मैंने सोचा बडी ठंडक है और मैं थकी हुई हूँ। मैं सीध ा अपने घर जाना चाहती थी। इसलिए मैंने घर की ओर गाड़ी चलाना जारी रखा। जब मैं घर पहुँचने ही वाली थी तो भीतरी आवाज और तेज हो गयी और मैं वापस उस जगह लौटी जहाँ मै. ने उसे देखा था। उसकी ओर जाते समय मैंने प्रार्थना की और मैं आस्वस्त थी उसे सन्तावना देने में कि परमेश्वर मेरी मदद करेगा।

मैंने पूछा, ''क्या तुम्हें भूख लगी है? ''उसने जवाब दिया कि वह भूखा था। वह अपने हाथों में एक छड़ी और कुछ थैले थामें हुए था। खाना लेने के लिए दुकान में घुसते समय मैंने थैलो को उठाने में उसकी मदद करनी चाही। ''मैं अपने थैले स्वयं उठाऊँगा अथवा दुकान वाले सोचेंगे कि मैं बेघर हूँ और भीख माँग रहा हूँ। इससे पहले भी दुकान से बाहर करने के लिये वे मुझे धमका चुके है। ''मैंने उससे कहा कि जब तक मैं उसके साथ हूँ उसे कुछ नहीं होगा।

दुकान में हमने कुछ पका हुआ चिकन खरीदा। वह उतना ही चाहता था। मैंने कहा, ''तुम चा. हो तो और ले सकते हो।'' फिर उसने मुझे बताना आरम्भ किया कि वह नेवी में पहले प्लम्बर था और उसने पहले खाड़ी युद्ध के समय पानी के एक जहाज पर काम किया था जो हवाई जहाज को लाया और ले जाया करता था। नेवी में वह घायल हो गया। और चिकित्सीय कारणवश उसे सेवानिवृत्त कर दिया गया था। राहत के रूप में उसे कुछ धन मिला था परंतु जीवन यापन के लिए उतना पर्याप्त नहीं था। इसी बीच उसकी पत्नी बीमार हो गई और उसे बुरी परिस्थितियों से गुजरना पड़ा था। डॉक्टरों ने उससे कहा था कि यदि वह उसे अस्पताल में नहीं रखेगा तो वह मर जाएगी। और अस्पताल छोडने के कुछ दिन बाद ऐसा ही हुआ।

उसने आगे बताना जारी रखा, ''कि मैंने सहायता में मिली अपनी आधी धनराशि अपनी बहन को दे दी थी जो डेटन नगर में उसकी 10 साल की बेटी को पाल–पोस रही थी।'' उसने मुझे अपनी सुंदर लाल बालों वाली बच्ची की तस्वीर दिखाई। उसने उन वस्तुओं के लिए बताया जो उसकी बेटी क्रिसमस पर चाहती थी उसने बताया कि महीने में एक बार ही वह उससे मिल पाता है और उसकी कमी महसूस करता है।

उसने मुझसे कहा कि उसे बताऊँ, कि अगले दिन जब क्रिसमस था तब डेटन पहुँचने के लिए बस में कितना किराया लगेगा। मैंने कहा, ''अगर तुम सुबह जल्दी जाते हो तो तुम्हें पाँच सौ रूपये खर्च करने होंगे।'' फिर मैंने अपना वीजा गिफ्ट कार्ड उसे दिखाया और उससे कहा, ''कल तुम अपनी बेटी से मिलने जा रहे हो।'' यह सुनकर उसकी आंखों में आंसू आ गए, और मुझे बार–बार धन्यवाद देने लगा। मैंने कहा, ''क्रिसमस पर हर एक को अपने बच्चों के साथ होना चाहिए। तुम एक अच्छे पिता हो और तुम्हें अपनी बेटी से जरूर मिलना चाहिए। उसने उत्तेजनाप. ूर्वक मुझे बताया कि वह उसकी बेटी के लिए क्रिसमस का उपहार भी ले जाएगा। उसके भोजन कर लेने के पश्चात जब हम दुकान से बाहर निकले और अपनी बातचीत खत्म कर रहे थे तब उसने मुझसे पूछा, ''तुम्हारा क्या नाम है?'' मैंने जवाब में कहा ''एली''। उसने अचम्भे से मुझे देखा और कहा, ''मेरी बेटी का भी यही नाम है, एलिसन मैरी। उस समय मैंने जाना कि परमेश्वर ने क्यों लौट कर उसके पास आने के लिए मेरी अगुवाई की थी। वह मुझसे गले मिला और इसके लिए दोबारा मुझे धन्यवाद दिया।

जब मैं अपनी कार में वापस लौटी, तो मैं जानती थी क्रिसमस की यह ऐसी याद है जो सदैव मेरे साथ बनी रहेगी।

हमने देखा कि एली थकी हुई थी, वहाँ बहुत ठंड थी, और वह घर लौट कर आराम करना चाहती थी। ऐसी परिस्थिति में दिल की आवाज को नकारना बडा आसान था परन्तु वह पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रति संवेदनशील रही और अपनी इच्छाओ, अपनी आवश्यकताओ और अपने आराम के बजाये एली ने इस बेघर आदमी को अधिक महत्व दिया उसने उसे यीशु की दृष्टि से देखा, और उस पर करूणा दर्शायी। ऐसे संसार में जहाँ हम स्वंय को पहिले रखना चाहते है व्यस्त रहते है और स्वार्थी हैं, इसके लिए अभिप्राय पूर्वक हमें प्रयास करना है कि अन्य लोगों से वैसे प्रेम करें जैसे यीशु ने किया है। यह हम स्वय अपनी सामर्थ में नहीं कर सकते हैं, यह तभी संभव होगा जब हम यीशु के प्रति अपने ह्रदय को खोलेंगे और उसका अनुसरण करेंगे।

प्रश्नः

इस कहानी को पढ़ते समय आपके भीतर कौन सी भावनाये जागी थीं?

इस कहानी में क्या बात आपको विशेष लगी?

इन्हीं परिस्थितियों में आप क्या प्रतिक्रिया कर सकते थे?

आवश्यकता में पड़े अन्य लोगों के प्रति आप कैसे अधिक अभिप्रायपूर्वक करुणा को दर्शा सकते हैं?

दिन 2 ~ करुणा

भ्झज्न १०३

मननः

क्या आप जानते थे कि परमेश्वर का प्रेम और उसकी करुणा का मुकुट पहिनाया गया है? उसने आपको अच्छी वस्तुओं से आशीषित किया है, वह आपको बीमारियों से चंगा करता है और आपके पापों को क्षमा करता है और आपको सामर्थ देता है और आपकी ऊकाब के पंखों पर ऊचें उठाता है। भजन 103 परमेश्वर की अनमोल पुत्रियों के रूप में उसकी आशीषों को ग्रहण करने के प्रति एक सुन्दर निमंत्रण है, और कि उसकी पुत्रियों के रूप में हम उसे उसकी प्रेमभरी कृपा, दया और भलाई जो वह प्रतिदिन हमे देता है उसके लिए उसे आशीषित करें, उसका आदर करें और उसे सम्मान दें।

भजन 103 एक सुन्दर प्रेमभरा ऐसा गीत है जो परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाता है और इसे आप गा सकते हैं अन्यथा इसके द्वारा प्रार्थना कर सकते हैं जितनी बार आप इसे पढ़ेंगे और यह आपको अद्‌भुत लगेगा, आपको आनंद और शांति प्रदान करेगा

भ्झज्न 103

हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,

वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है
यहोवा सब पिसे हुओं के लिये धर्म और न्याय के काम करता है।
उसने मूसा को अपनी गति, और इस्राएलियों पर अपने काम प्रगट किए।
यहोवा दयालु और अनुग्रहकरी, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करूणामय है।
वह सर्वदा वादविवाद करता न रहेगा, न उसका क्रोध सदा के लिये भड़का रहेगा।
उसने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हम को बदला दिया है।
जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, वैसे ही उसकी करूणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है।
उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है।
जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।
क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है
मनुष्य की आयु घास के समान होती है, वह मैदान के फूल की नाईं फूलता है,
जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता, और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है।
परन्तु यहोवा की करूणा उसके डरवैयों पर युग युग, और उसका धर्म उनके नाती– पोतों पर भी प्रगट होता रहता है,
अर्थात उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं
यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।
हे यहोवा के दूतों, तुम जो बडे वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो!
हे यहोवा की सारी सेनाओं, हे उसके टहलुओं, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको ध न्य कहो!
हे यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो।
हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - करुणा

स्तफथ्त्ज्ञन

मननः

विश्वास का यह गीत थॉमस चिसहोम द्वारा 1923 में लिखा गया। थॉमस ने अपने जीवन काल में 1200 आराधना गीत लिखे थे इसके प्रिया पवित्र शास्त्रों में से एक विलापगीत 3:22–23 हम मिट नहीं गए यह यहोवा की महा करुणा का फल है। क्योंकि उसकी दया अमर है प्रतिभोर वह नयीं होती रहती है तेरी विश्वासयोग्यता महान हैं। इन पदों से प्रेरित होकर उसने यह सुन्दर और लोकप्रिय गीत लिखा था ।

चाहे आप इसके शब्दों को पढना और मनन करना चाहें, एक रिकॉर्डिंग के साथ गाना चाहें अथवा इसके संगीत के प्रति आराधनापूर्वक नाचें, हमारी प्रार्थना है कि इससे आपका मन प्रफुल्लित हो और आपका आत्मा भरपूरी का अनुभव करें।

ग्रेट ठज छ्ज्ञर्ठ फैथ्ज्ञफफल्न्‍ 1923 थ्ज्ञॉम्‍ थ्च्स्ळ्ज्ञैम्‍ द्वज्ञश्रज्ञ

हे मेरे पिता परमेश्वर तेरी सच्चाई महान है,
तेरे साथ मुड़ने की कोई छाया नहीं है
तू नहीं बदलता, तेरी करुणा भी टलती नहीं,
जैसा तू था वैसा ही तू सदा रहेगा

गर्मी और सर्दी और बसन्त ऋतु और फल फसल
ऊपर अपने पाठ्यक्रम में सूर्य चन्द्रमा और सितारे,
सभी प्रकृति के साथ कई गुना गवाह में शामिल हो

तेरा महान विश्वास, दया और प्रेम।

पाप के लिए क्षमा और एक शांति जो कठोर हो जाती है,
जयकार करने और मार्गदर्शन करने के लिए आपकी अपनी प्रिय उपस्थिति
आज के लिए ताकत और कल के लिए उज्जवल आशा,
सभी को आशीर्वाद साथ में दस हजार।

हे मेरे पिता परमेश्वर तेरी सच्चाई महान है,
हे मेरे पिता परमेश्वर तेरी सच्चाई महान है,
सुबह–सुबह नई दया देखता हूँ।
मुझे जो कुछ चाहिए वह सब तेरे हाथ ने प्रदान किया है।
तेरी सच्चाई मेरे लिए महान है।

दिन 4 - करुणा

ग्ळश्रज्ञर्ठ रै ज्ज्ञन्ज्ञ

अध्ययनः

बहुघा यीशु करुणावश व्याकुल हो जाते थे। इस पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के मध्य उन्होंने इसके बारे में ना केवल सिखाया परन्तु इसका प्रदर्शन भी किया था।

यूहन्ना 8:3–11

तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उस को बीच में खड़ी करके यीशु से कहा।

हे गुरू,यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है।

व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करके मार डाला जाए, सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?

उन्होंने उस को परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएं,

परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा।

जब वे उस से पूछते रहे, तो उस ने सीधे होकर उन से कहा, कि तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उस को पत्थर मारे।

और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा।

परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई।

यीशु ने सीधे होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी।

उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं।

यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता जा, और फिर पाप न करना।

वर्तमान समयकाल की कुछ संस्कृतियों में भी यदि स्त्रियों को व्यभिचार करते पकडा जाता है तो पत्थरवाह करके उनकी हत्या कर दी जाती है। यीशु के समय काल में धार्मिक अगुवे एक ऐसी स्त्री का न्याय कर रहे थे जिसका किसी व्यक्ति के साथ सम्बन्ध था। उन शब्दों पर ध्यान दें जब वे उसे यीशु के पास ले गए और समूह के सामने उस पर दोष लगाया था। यह कितना लज्जाजनक था कि उन्होंने उसे भीड़ के सम्मुख खड़ा होने के लिए मजबूर किया और फिर उसे मृत्यु का दंड दे रहे थे।

यीशु मसीह शान्त थे और उन्होंने नीचे झुक कर रेत पर अपनी उंगली से कुछ लिखना आरंभ किया। वह क्या लिख रहा था? इन अगुवो ने इस स्त्री को सार्वजनिक रूप से लज्जित किया था और भीड़ के सम्मुख उसे पाप करने का दोषी ठहराया था। बाइबिल यह नहीं बताती है कि यीशु ने रेत पर क्या लिखा था, परन्तु क्या होता यदि वह वहाँ खडे लोगों के, जो उत्सुकतापूर्वक उस स्त्री को दण्ड दिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्हीं लोगों के पाप वह लिख रहा था?

यदि तुमसे कोई ऐसा है जिसने पाप ना किया हो तो वह उस पर पत्थर मारे।

उसने रेत पर लिखना जारी रखा..... झूठ बोलना? व्यभिचार? लालच? अहंकार? ईर्ष्या? उसके लिये जो सब कुछ देख सकता है यह बुरे काम स्पष्ट थे क्योंकि वह हृदय को जानता है (प्रेरित 15:8), यीशु दोष लगाने वालों के लिए पापों को तब तक प्रगट करता रहा जब तक वह वहाँ से चले नहीं गये और ध्यान दें कि यहाँ बुजुर्ग लोग पहले गये क्योंकि उन्होंने जान लिया था कि उनका पाप भरा जीवन जो छिपा हुआ था वह उन्हें इसी दण्ड के योग्य बनाता था

यीशु की यह प्रश्न पूछने का तरीका मुझे बहुत अच्छा लगता है, हे नारी वे कहाँ गये? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?''

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उस स्त्री ने कैसा अनुभव किया होगा? यह व्यक्ति जिससे वह पहले कभी नहीं मिली थी परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह उसके बारे में सुन चुकी थी, अब वह उसका अधिवक्ता और रक्षक था। उसने दोष लगाने वालों से और मृत्युदंड से उसे बचाया था। इसके बाद उसने उसे मुक्त कर दिया और करुणापूर्वक क्षमा प्रदान की, ''मैं भी तुझे दण्ड की आज्ञा नहीं देता, जा और फिर से पाप ना करना।''

यीशु ने मेरे और आपके साथ भी यही किया है। आपने अनुग्रह, प्रेम तथा करुणा के कारण उसने हमें मृत्यु और उस दण्ड से मुक्त किया है जिसके हम योग्य थे।

सो अब जो मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि वह शरीर में नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं इसलिए परमेश्वर के चुने हुओ के समान जो पवित्र और प्रिय है, बड़ी करुणा और भलाई और दीनता और नम्रता और सहनशीलता धारण करो। (कुलुस्सियों ३:१२)।

प्रश्नः
अपने पापों की एक सूची बनाये। फिर उस कागज को फाडकर फेंक दें।

रोमियो 8:1 लिखे

मती 7:1–2 में यीशु के द्वारा कहे गए वचनों को याद करें, ''दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो उसी प्रकार तुम पर दोष लगाया जाएगा, जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।''

क्या कोई ऐसे हैं जिन पर आपने अनुचित रूप से दोष लगाया है? इसके लिए यीशु से क्षमा माँगे और उन लोगों से भी क्षमा याचना करें।

दिन 5 ~ करुणा

ज्ञिंर्थ्र्ान्ज्ञ टज्ञैश्र व्यळ्ज्ञथ्श्रक च्श्रण्ज्ञ

हे पिता तू जो स्वर्ग में है, मैं आपका धन्यवाद करती हूँ कि आप प्रेम करने वाले, अनुग्रहकारी, दया में धनी और करुणा से परिपूर्ण है। आपका धन्यवाद करती हूँ कि आपने हमारे साथ वह व्यवहार नहीं किया जिसके हम योग्य थे। आपका धन्यवाद करती हूँ जो यीशु में हैं उन पर दण्ड की कोई भी आज्ञा नहीं है। मेरे अधिवक्ता और रक्षक होने के लिए आपका धन्यवाद करती हूँ कि आपने मुझे अपने प्रेम व करुणा का मुकुट पहिनाया है और मुझे अच्छी वस्तुओ से तृप्त किया है। हे पिता, मेरे आस–पास के लोगों के लिए मुझे अपने जैसी करुणा दे। वे बातें मुझे भी विचलित करें जिनसे आप व्याकुल होते हैं। मेरी सहायता करें कि मैं अन्य लोगों का न्याय ना करूँ परन्तु उन सब बातों में को जो करती हूँ तथा कहती हूँ, उनमे आपकी प्रेमभरी दया को दर्शा सकूँ। यीशु मुझे अपने समान बनाये।

यह प्रार्थना मैं आपके पवित्र नाम में करती हूँ आमीन।

व्यवहारिक चरण

☐ क्या बात करूणा को आपके लिए इतना आकर्षक बनाती है?

☐ अपने दैनिक जीवन में इसे आप किस प्रकार लागू करेंगे?

☐ कसके साथ आप इस सच्चाई की सहभागिता करेंगे?

अध्याय 4

पश्चाताप

दिन 1 ~ पश्चाताप

पश्चाताप

पश्चाताप : अपनी गलतियों अथवा नैतिक कमियों के लिये पछतावा करने की प्रतिक्रिया अथवा गतिविधियां

प्रार्थना:

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

याद करने के लिए पद:
Have mercy on me, O God, according to your unfailing love; according to your great compassion blot out my transgressions. Wash away all my iniquity and cleanse me from my sin (Psalm 51:1-2).

अध्ययन:

जब आप यह अध्ययन आरम्भ करते हैं तब ध्यानपूर्वक पश्चाताप की परिभाषा को पढें, यहाँ दी गयी प्रार्थना को करें और अपने स्मरण पद को दोहरायें।

"पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आने वाला है," (प्रकाशितवाक्य४:८)।

'परन्तु जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो, क्योंकि लिखा है कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (१पतरस१:५-१६)।

यीशु ने हमें पवित्र होने के लिए बुलाया है क्योंकि वह पवित्र है। जो कुछ भी पवित्र और शुद्ध है उस सब तक यीशु का विस्तार है। इस कारणवश हमें प्रतिदिन अपने पापों से या उन बातों से जो हमें यीशु से अलग करती हैं पश्चाताप करना चाहिए। यदि हममें कोई अस्वीकृत पाप है, यदि हमारे मन में दूसरो के प्रति कोई बुराई अथवा हमने मन से उन्हें क्षमा नहीं किया है तब हमारी प्रार्थनाये स्वर्ग तक नहीं पहुंचेंगी।

पश्चाताप और क्षमा एक–दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। कभी–कभी मसीहियो की क्षमा नहीं करने वाली आत्मा के प्रति पश्चाताप करना होता है। यह खतरनाक है, जो हमारे भीतर गहराई से बैठा रहता है और सर्वजनिक दृष्टिकोण से छुपा रहता है। एक क्षमा न करने वाली आत्मा का प्रभाव हमारे भीतर शारीरिक और साथ ही साथ आत्मिक और भावनात्मक रूप से बहुत कुछ नाश कर सकता है। पास्टरो, वकीलों और मेडिकल कर्मचारियों ने देह, मस्तिष्क और प्राण पर इसके कड़वे प्रभाव को देखा है। इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है कि यीशु ने बहुधा इसके बारे में बताया था और इसके दुष्परिणामों के बारे में चेतावनी दी थी।

एक समाज के रूप में हम जानते हैं कि चोरी करना, हत्या, अपहरण और व्यभिचार, करना बुराई और पाप है। यह आसान है कि हम बतशेबा की लालसा के प्रति दाऊद के पापों को देखे जहाँ वह व्यभिचार कर रहा है और उसके पति की हत्या कर रहा है जिससे कि वे विवाह कर सके, और इस प्रकार हम उसकी दुष्टता के कामों से परिचित होते हैं। हमें इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर उसके पास नातान भविष्यवक्ता को भेजता है कि वह उसे दोषी ठहराये।

परन्तु चुगली करने के पाप के विषय में आप क्या सोचते हैं? क्या यह ऐसा पाप नहीं है जो हमें परमेश्वर की पवित्रता से अलग करता हो? एक क्षमा न करने वाली आत्मा के बारे में आपके क्या विचार हैं? कभी–कभी हम किसी छोटी सी बात को लेकर अपने हृदय में कड़वाहट को पालने लगते हैं। हम इसे बढ़ावा देते हैं, शैतान को अनुमति देते हैं कि वह हमारे भीतर के क्रोध को और बढ़ाएं और यीशु के द्वारा इससे स्वतंत्र होने और उसकी सहायता मांगने के बजाये हम इसे भीतर छिपाये रखते हैं अथवा अन्य लोगों को इसे बताते हैं जो इसे और भी बुरा बना देता है और तब हम अचम्भा करते हैं कि क्यों हमारी प्रार्थना के उत्तर नहीं मिलते हैं और हम आनन्द और शांति का अनुभव नहीं कर पाते हैं। और अपने मन में ऐसी क्षमा न करने के बारे में क्यों सोचते हैं जो इसलिए उचित लगती है क्योंकि किसी ने आप से दुर्व्यवहार किया है? क्या यह पाप नहीं है?

इन रफलेक्शन आफ गोंड्स ग्लोरी में परमेश्वर की महिमा की सहभागिता करते समय कोरीटन बूम ने क्षमा पर एक बड़ी सामर्थी कहानी बतायी है म्यूनिक के एक चर्च में बोलने के बाद एक पूर्व नाजी अधिकारी जो यातना शिविर में उनकी रखवाली करता था उनकी तरफ बढ़ने लगा। वह उनसे हाथ मिलाना चाहता था परन्तु जो कष्ट और दुख उसके द्वारा कोरी को मिले थे उसके कारण उससे मिलना उनके लिए मुश्किल था। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह हमारे हृदयों को जानता है वह जानता था कि कोरी किस संघर्ष से गुजर रही थी जब कोरी ने उससे हाथ मिलाया तो उसका क्रोध और दर्द आनंद में बदल गया और उसने अनुभव किया कि यहाँ पवित्र आत्मा ने उसकी सहायता की थी कि आश्चर्यजनक रूप से उसने उस अधिकारी को क्षमा किया था।

पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा एकमात्र यीशु ही हमारी मदद कर सकता है कि हम असम्भव बातों को कर सकें। हमें केवल एक इच्छुक हृदय की आवश्यकता है। कोरी ने लिखा था, ''जब वह हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करने को कहता है तब वह इस आज्ञा के साथ–साथ स्वयं प्रेम को भी प्रदान करता है।''

प्रश्नः

पश्चाताप और क्षमा में क्या अन्तर है?

इनमें से क्या अधिक कठिन है और क्यों?

आपके विचारों अनुसार कोरीटन बूम को ऐसे व्यक्ति से मिलते समय कैसा अनुभव हुआ होगा जिसने उसे इतना अधिक कष्ट और दुख दिया था?

दिन 2 - पश्चाताप

भजन ५१

मनन:

प्रतिदिन अपना प्रार्थना का समय आरंभ करने का भजन 51 एक अद्भुत तरीका है यह दाऊद की वह प्रार्थना है जो उसने बतसेवा के साथ पाप करने के बाद नातान भविष्यवक्ता द्वारा दोषी ठहराए जाने पर की थी। यह नया बनाये जाने और फिर से स्थिर होने के लिए प्रार्थना है क्योंकि जब हम माँगते हैं तब परमेश्वर सब कुछ नया कर देता है

भजन 51

हे परमेश्वर, अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।
मुझे भलीं भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!
मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।
मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है, ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे।

देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।
देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।
जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा।
मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना, जिस से जो हड्डियां तू ने तोड़ डाली हैं वे मगन हो जाएं।
अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले, और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल।
हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।
अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल।
तब मैं अपराधियों को तेरा मार्ग सिखाऊंगा, और पापी तेरी ओर फिरेंगे।
हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले, तब मैं तेरे धर्म का जयजयकार करने पाऊंगा।

हे प्रभु, मेरा मुंह खोल दे तब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूंगा।
क्योंकि तू मेलबलि से प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता।
टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।
प्रसन्न होकर सिय्योन की भलाई कर, यरूशलेम की शहरपनाह को तू बना,
तब तू धर्म के बलिदानों से अर्थात सर्वांग पशुओं के होमबलि से प्रसन्न होगा तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढाएंगे।

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - पश्चाताप

स्फथत्ग्ज्ञन

मननः

''जैसा मैं हूँ'' यह वह महान गीत है जिसे बहुत से लोगों ने बिलीग्राहम क्रूसेड से जाना है और उन्हें बहुत प्रिय है। इसे 1836 में चार्लेट इलियट के द्वारा लिखा गया था। उनके खराब स्वास्थ्य ने उनके हृदय को कठोर कर दिया था और वह परमेश्वर के प्रति कडवाहट से भर गई थीं। अपनी बीमा. री के लिए वे परमेश्वर को दोषी ठहराती थी। मई 1922 में एक पास्टर उनसे मिलने कें लिए उनके घर आये। उनके साथ भोजन करते समय चार्लेट स्वयं पर काबू नहीं रख पाई और परमेश्वर तथा अपने परिवार के प्रति उनका गुस्सा फूट पड़ा। पास्टर ने प्रेमपूर्वक उन्हें बताया कि वे अपने क्रोध और घृण ाा से बन्धी हुई थी क्योंकि उनके पास सहारे के लिए और कुछ भी नहीं था। फिर पास्टर ने उन्हें उस आशा के बारे में बताया जो एकमात्र यीशु ही उन्हें दे सकता था। पास्टर ने उन्हें चुनौती दी कि अपने सारे क्रोध, भय और लज्जासहित स्वयं को यीशु के अधीन कर दें। इसके प्रति चार्लेट का उत्तर इस गीत का शीर्षक बनाः ''जैसा मैं हूँ वैसे ही परमेश्वर के पास आऊँगा?'' उन्होंने यूहन्ना 6:37 मैं दी गई प्रतिज्ञा का दावा किया..... जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी नहीं निकालूँगा। चार्लेट ने अपने जीवन काल में लगभग 150 गीत लिखे थे

जस्ट एज आई एम 1838 चार्लेट इलियट

जैसा मैं हूँ बगैर एक बात पर तेरे लहू से है ह्यात
अब तेरे नाम से है नजात मसीह, मसीह में आता हूँ

जैसा मैं कंगाल बदकार कमजोर नालायक और लाचार
ब तेरे पास मददगार मसीह, मसीह मैं आता हूँ

जैसा मैं हूँ कमबख्त नापाक और मेरी हालत दहशतनाक
लडाई भीतर बाहर पाक मसीह, मसीह मैं आता हूँ

ैसा मैं हूँ कबूल कर ले मुआफी और तसल्ली दे
सर्फ तेरे ही वसीले से मसीह, मसीह मैं आता हूँ

जैसा मैं हूँ तेरा प्यार मुझको उठावेगा हर बार
ैर बरकत देगा बेषुमार मसीह, मसीह में आता हूँ।

चाहे आप इसके शब्दों को पढ़ना चाहें और उन पर मनन करना चाहें, अथवा इसे एक रिकॉर्डिंग के साथ गाना चाहे अथवा इसके संगीत पर आराधनापूर्वक नाचे, हर स्थिति में यीशु के प्रति यह आपका प्रेम गीत होना चाहिए।

दिन 4 ~ पश्चाताप

ग्ळश्रइर्ठ रै ज्ञान्झ

अध्ययनः

हमारे पहले अध्याय अनुग्रह को याद करें। अनुग्रह ऐसा कुछ है जिसे हम अर्जित नहीं करते थे और यह कुछ ऐसा है जिसके योग्य हम नहीं थे। क्या हम परमेश्वर के अनुग्रह को आगे बढ़ाने और उन लोगों को क्षमा करने के योग्य हैं जिन्होंने हमारे प्रति अनुचित किया है? क्या हम परमेश्वर से इतना प्रेम करने के योग्य है जैसी आज्ञा उसने दी है वैसे ही उन लोगों को क्षमा करें जिन्होंने हमें कष्ट दिया है? क्या हम उनके विरुद्ध अपने क्रोध व बदला लेने की भावना को लाने के योग्य है? क्या हम यीशु के समान क्षमा करने के योग्य हैं?

मत्ती 6:15 में यीशु इस प्रकार से कहते हैं और यदि तुम मनुष्यो के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा। सी. एच. लूईस ने अपनी पुस्तक में मियर क्रिश्चयनिटी में लिखा था कि उनके अनुसार अत्यन्त अलोकप्रिय मसीही नियम यह है, ''तू अपने समान अपने पड़ोसी से प्रेम कर। ''आगे उन्होंने इसे समझाना जारी रखा, ''क्योंकि मसीही नैतिकता में, अपने पड़ोसी में अपना शत्रु भी सम्मिलित होता है और इस प्रकार हम अपने शत्रुओं को क्षमा करने के कठिन कर्तव्य का विरोध करते हैं........... प्रत्येक कहता है कि क्षमा करना तब तक एक बड़ा अच्छा विचार है जब तक हमें इसका सामना ना करना पड़े।

क्षमा करना बहुधा एक लिटमस टेस्ट है जिसे परमेश्वर किसी भी पुरुष अथवा स्त्री को सेवकाई मे भेजने से पहले करता है यह इतना महत्वपूर्ण सिद्धान्त है और अभी तक के हमारे सभी विषयों को एक साथ बाँधता है। क्षमा करने के कार्य में अनुग्रह, प्रेम, करुणा और पश्चाताप सम्मिलित होते हैं। प्रार्थना वाचा पुस्तक की सभी विषय वस्तुएं एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं जैसा कि हम आगे जानेंगे जब समर्पण, निर्भरता, (पवित्र आत्मा), प्रभाव, शिष्यता और अधिकार पर परिचर्चा करेंगे। क्षमा करने के लिए अनुग्रह आधार है। परमेश्वर अपने असीमित अनुग्रह, सीमारहित प्रेम और करुणा के कारण हमारे प्रति अपनी करुणा का विस्तार करता है। परन्तु यह केवल आरम्भ है। जब हम अपने पाप और स्वार्थ की गंभीरता को पहचानते हैं, जब हम देखते हैं कि एक सर्वसिद्ध, पवित्र और निर्दोष उद्धारकर्ता की उपस्थिति में हम कितने पतित हैं तब हम यह देख सकते हैं कि किसी ऐसे व्यक्ति को जिसने हमारे विरोध में पाप किया है क्षमा करने के प्रति हम अनइच्छुक हो सकते हैं? वैसे ही प्रेम करने के लिए जैसे परमेश्वर करता है हमें अन्य लोगों तक उसकी क्षमा को पहुंचाने के लिए इच्छुक रहना चाहिए।

मति 18: 21–35 में क्षमा न करने वाले सेवक की कहानी के बारे में सोचें। राजा अपने एक ऐसे सेवक का बहुत बड़ा कर्जा माफ कर देता है जिसे वह जीवन भर नहीं चुका सकता था। इस सेवक ने दया की याचना की और एक भले राजा के प्रेम, अनुग्रह, करुणा और क्षमा का अनुभव किया था। परन्तु जब उसके पास एक ऐसा अवसर आया कि वह एक छोटे से कर्जे के लिए किसी अन्य व्यक्ति को क्षमा करें तो उसका ह्रदय कठोर हो गया और उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया। और दया की उसकी याचना की अपेक्षा करते हुए उसे जेल में डलवा दिया। जब उसके द्वारा किये गए इस कार्य का पता राजा को चला तो वह नाराज हुआ और वह दण्ड दिया जिसके वह योग्य था। इसलिए यीशु ने चेतावनी दी है कि यदि तुम दूसरों के पापों को क्षमा नहीं करते हो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे पापों को क्षमा ना करेगा।

हमारे परिवार के सदस्य के द्वारा ही हमने एक अत्यंत कष्टदायक और दुखद अनुभव को सहा था। इससे हमारा पूरा परिवार बिखर गया था। उस समय के मध्य क्षमा पर सुना गया एक उपदेश मुझे याद है: ''जिस व्यक्ति ने तुम्हें हानि पहुँचाई है उसके लिए प्रार्थना करना आरम्भ करें। यदि आप केवल यही प्रार्थना कर सकते हैं कि परमेश्वर अमुक व्यक्ति को आशीषित करें तो केवल इन्हीं शब्दों के साथ आरम्भ करें।'' यद्यपि यह सरल नहीं था, लेकिन मैंने ऐसा किया मेरे प्रार्थना करने के तुरन्त बाद ही कुछ वक्त के लिए जिसने हानि पहुँचाई थी उसके प्रति मैंने करुणा और दुख का अनुभव किया। यह इस प्रकार से था जैसे कि यीशु प्रतीक्षा कर रहा था कि मैं वह आरम्भिक कदम उठाऊँ जो मेरे इच्छुक हृदय को दर्शाये, तब वह आलौकिक ढंग से इसमें सम्मिलित हुआ। परमेश्वर के आत्मा ने सभी बातों को ठीक किया।

मैं जितना अधिक परिपक्व होती गई उतना ही मैंने यह जाना कि परमेश्वर की एक सन्तान होने के प्रति मैं कितनी अयोग्य हूँ। 1तीम0 1:15 मे पौलुस कहता है, ''यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया जिनमें सबसे बड़ा पापी मैं हूँ।'' यशायाह ने लिखा था हमारे सब कार्य मैले चिथड़ों के समान है। तीतुस 3:4–6 में दिये गए वचन कितने अनमोल और आश्वासन देने वाले हैं, ''पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यो पर उसकी प्रीति प्रकट हुई तो उसने हमारा उद्धार किया और यह धर्म के कामों के कारण नहीं जो हमने आप किये। पर अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के द्वारा हमें नये बनाने से हुआ था।''

प्रश्नः

एक उदाहरण की सहभागिता करें जब आपने क्षमा का अनुभव किया था।

किसी एक उदाहरण को बतायें जब आपने किसी दूसरे को क्षमा किया था और उस पर कृपा की थी।

क्षमा पर ऐसे पद की सहभागिता करें जिसने आपके हृदय को छुआ है।

क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे आपको क्षमा करना है? आज ही यह करें। बिना विलम्ब किए हुए!

दिन 5 ~ पश्चाताप

ज्ञिंर्थ्ज्ञेन्ज्ञ ट व्यळ्ज्ञथ्श्रक चश्रण्ज्ञ

हे पिता तू जो स्वर्ग में है, हम स्वीकार करते हैं कि आप एक पवित्र परमेश्वर हैं और आपके सिंह. ासन से सच्चाई और धार्मिकता प्रवाहित होते हैं। हम जानते हैं कि आपके प्रेम, अनुग्रह और कृपा के बिना हम आपकी सन्तान नही बन सकते थे। आप के पुत्र यीशु के उस लहू के लिए आपका धन्यवाद जो मुझे सारे पापों से शुद्ध करता है। मैं प्रार्थना करती हूँ कि मेरे भीतर एक शुद्ध हृदय उत्पन्न करें और अपनी आत्मा को नये सिरे से मुझमें डालें। अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई करें दिन प्रतिदिन मुझे अपने पुत्र की छवि में बदलें। यदि मेरे जीवन में कोई पाप है तो वह मुझे दर्शाये और पश्चाताप करने में और उन सभी बातों को त्यागने में मेरी सहायता करें जो मुझे आपके प्रेम से अलग करती है। टूटे हुए संबंधों को जोड़ें और हर एक कड़वाहट को दूर करें। जिस प्रकार से आपने मुझे क्षमा किया है वैसे ही सदा अन्य लोगों को क्षमा करने में मेरी सहायता करें, जीवन की नवीनता में चलने के मुझे योग्य बनाये और आपकी पुत्री होने का आनन्द मुझमें उत्पन्न करें। यीशु के नाम में मैं यह प्रार्थना करती हूँ, आमीन।

व्यवहारिक चरण:

☐ पश्चाताप और क्षमा को क्या बात आपके लिए इतना आकर्षत बनाती है?

☐ प्रतिदिन के जीवन में कैसे आप इसे लागू करेंगे?

☐ किसके साथ आप इस सच्चाई की सहभागिता करेंगे?

अध्याय 5

आराधना

दिन 1 ~ आराधना

म्थ्श्रयम् क्ज्ञ म्थ्ळम्ज्ञग्ज्ञन

आराधना : एक सर्वोच्च के प्रति अत्यधिक आदर अथवा श्रद्धा अथवा भक्ति।

याद करने के लिए पदः
Let everything that has breath praise the Lord (Psalm 150:6).

प्रार्थनाः

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययनः

जब आप यह अध्ययन करते हैं तब ध्यान से आराधना की परिभाषा को पढ़े यहाँ दी गयी प्रार्थना करें, और अपने स्मरण पद को दोहराये।

जब मैं आराधना के बारे में सोचती हूँ तब तुरन्त मेरे ध्यान में लुका 1:46—55 में दी गई मरियम की प्रार्थना आती है। स्वर्ग दूत जबराईल मरियम के पास आकर उसे यह बताने के बाद, कि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा गर्भवती होगी और यीशु को जन्म देगी, मरियम अपना सामान लेकर अपनी एक सम्बन्धनी इलीशिबा के पास शीध्र चली गई थी।

एलीशिबा और उसका पति जकरयाह को भी स्वर्गदूत जिब्राइल ने दर्शन दिया और उन्हें आश्चर्यजनक सूचनाये दी थी। एलीशिवा अपनी वृद्धावस्था में गर्भवती होगी और महान भविष्यवक्ता यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को जन्म देगी जो यीशु मसीह का अग्रदूत बनेगा।

यहाँ हम दो स्त्रियो, दो आश्चर्यकर्मों, एक स्वर्गदूत के द्वारा दो दिव्य मुलाकातों और दो अजन्मे व्यक्तियों को देखते हैं— एक व्यक्ति जो परमेश्वर के मेमने के आने की उद्घोषणा करेगा, और दूसरा व्यक्ति जो परमेश्वर का मेमना था।

मरियम एक युवा अविवाहित लड़की, जिसकी मंगनी युसूफ से हुई थी और जो परमप्रधान की सामर्थ के द्वारा गर्भवती पाई गई थी और इलीशिबा, एक वृद्ध महिला जो बांझ थी, परन्तु परमेश्वर की अलौकिक मध्यस्थता उसके जीवन में परमेश्वर की भलाई के आश्चर्यकर्म के कारण अब जकरयाह के बच्चे की माँ बनेगी।

यहाँ मैं केवल कल्पना ही कर सकती हूँ कि मरियम मन में क्या सोच रही थी जब उसे यह पता चला था कि वह परमेश्वर के पुत्र को अपने गर्भ में धारण करेंगी। वह इतनी युवा होने के बावजूद भी महान विश्वास से भरी हुई थी जबकि उसके आगे अनेक कठिनाईयां आने वाली थी। मुझे पद 37 में जिब्राईल के वचन बडे अच्छे लगते हैं, ''क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से हा. `ता है वह प्रभावरहित नहीं होता। ''यदि इस बात पर हम अपने मनों में विश्वास करें तब परमेश्वर

हमें कितनी सामर्थ के साथ उपयोग कर सकता है? जिब्राइल के प्रति मरियम की प्रतिक्रिया विश्वास और नम्रता से भरी हुयी थी, ''देख मैं प्रभु की दासी हूँ मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।''

इस पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि इलीशिबा ने मरियम से कैसे भेंट की थी। उसका अभिवादन स्वीकार करने के बाद उसने एक सुन्दर आशीष उसे दी थी।

''तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे पेट का फल धन्य है। और यह अनुग्रह मुझे कहाँ से हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आयी?..... और धन्य है, वह जिसने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से कही गयी, वे पूरी होंगी'' (लुका १:४२-४३, ४५)।

जो कुछ भी हो रहा था उससे मरियम भयभीत और अनिश्चित थी शायद अपने से अधिक उम्र तथा बुद्धिमान स्त्री से आश्वासन पाना चाह रही थी। इलीशिबा के द्वारा दी गई आशीष को सुनकर वह अवश्य ही आनंदित हुई थी। यहाँ ध्यान दें कि पद 41 बताता है कि इलीशिवा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थी। उसकी दीनता इस बात को जानने में उजागर होती है कि जिस बच्चे को वह जन्म देने जा रही है उसकी अपेक्षा मरियम का पुत्र अधिक महत्वपूर्ण था। वहाँ कोई ईष्या अथवा तनाव नहीं था, वह एकमात्र प्रेम आनंद और सुनिश्चितता थी।

वह आशीषित है जिसने विश्वास किया है कि परमेश्वर उसके प्रति अपनी प्रतिज्ञाओ को पूरा करेगा,''

इसके आगे मरियम का विशेष गीत अथवा महिमा गान आता हैः लुका 1:46–55

तब मरियम ने कहा, मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है।
और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई।
क्योंकि उस ने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है, इसलिये देखो, अब से सब युग युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे।

और उस की दया उन पर, जो उस से डरते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।
उस ने अपना भुजबल दिखाया, और जो अपने आप को बड़ा समझते थे, उन्हें तित्तर-बित्तर किया।
उस ने बलवानों को सिंहासनों से गिरा दिया और दीनों को ऊंचा किया।
उस ने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया, और धनवानों को छूछे हाथ निकाल दिया।
उस ने अपने सेवक इस्राएल को सम्भाल लिया।
कि अपनी उस दया को स्मरण करे, जो इब्राहीम और उसके वंश पर सदा रहेगी, जैसा उस ने हमारे बाप-दादों से कहा था।

क्या हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के ऊपर विश्वास करते है? वह अपने वचन के द्वारा हमसे बात–चीत करता है, उसने हमें अपना पवित्र आत्मा दिया है कि हमें सिखाये और हमारा पथ प्रदर्शन करें। क्या हम उसे सुन रहे हैं? जो प्रतिज्ञाएं उसने की हैं क्या हम उस पर विश्वास कर रहे हैं? क्या हम प्रतिदिन उसके साथ समय बिता रहे हैं? क्या हम उसकी समानता में बदल रहे हैं?

प्रश्नः
मरियम के गीत में आपको क्या महत्वपूर्ण लगता है?

क्या परमेश्वर ने आपको कभी इस प्रकार से विचलित किया हैं कि आप अचानक एक गाना गुनगुनाने

लगे या एक प्रर्थना करने लगे यदि ऐसा हुआ है तो उसे यहा लिखे।

नीचे अपना स्वयं की आराधना कविता अथवा अपना प्रिय आराधना पद लिखें।

दिन 2 - आराधना

भजन १५०

मनन:

जब मैं युवा हो रही थी तब मेरे जीवन में एक पास्टर थे जो सदैव मेरे द्वारा यह पूछे जाने पर कि आप कैसे हैं, बड़े विश्वासपूर्वक उत्तर देते थे, ''परमेश्वर की महिमा हो। ''ऐसा करना सदैव सरल नहीं होता है। कठिन परिस्थितियों, व्यस्त दिनचर्या, आर्थिक चिन्ताओ, परिवारिक आपदा और ऐसी अन्य बातों में हम बहुधा यह भुला देते हैं कि सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है। वह सदैव विश्वासयोग्य, सर्वसामर्थी, सर्वज्ञानी और सर्वव्यापी है, वह समय और शाश्वतकाल का परमेश्वर है।

हम कैसे कठिनाइयों के मध्य उसकी स्तुति करना सीख सकते हैं? रविवार की आराधना समय से आगे हम कैसे एक स्तुति भरा मन रख सकते हैं? हम कैसे इस समझ में बढ सकते हैं कि हम उसके द्वारा और उसके लिए रचे गए है और वह हमसे महिमा पाने की इच्छा रखता है?

हम अपने जीवनों में स्तुति को कैसे एक प्राथमिकता बनाते हैं?

इसका उत्तर तब मिलता है जब हम प्रार्थना में विकसित होते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, तब हम अपने ध्यान को उस पर केंद्रित कर रहे होते हैं जो हमारी स्तुति के योग्य है।

भजन 95 हमें प्रभु परमेश्वर की आराधना करने के प्रति आमंत्रित करता है :

आओ हम यहोवा के लिये ऊंचे स्वर से गाएं, अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें!
हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएं, और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें!

क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है।
पृथ्वी के गहिरे स्थान उसी के हाथ में हैं और पहाड़ों की चोटियां भी उसी की हैं।
समुद्र उसका है, और उसी ने उसको बनाया, और स्थल भी उसी के हाथ का रचा हैं।
आओ हम झुक कर दण्डवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के साम्हने घुटने टेकें!
क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है, और हम उसकी चराई की प्रजा, और उसके हाथ की भेड़ें हैं।

भजन 100 एक अन्य सामर्थी स्तुतिगान है :

हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा का जयजयकार करो!
आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!
निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं।
उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!
क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी र हती है।

एक विश्वासयोग्य पिता के द्वारा दी गयी यह कितनी बहुमूल्य प्रतिज्ञा है। वह हमें आश्वासित करता है कि उसकी विश्वासयोग्यता पीढी दर पीढी जारी रहेगी।

मेरी प्रार्थना है कि उसकी प्रतिज्ञाओं के प्रति आपका हृदय अशीषित और आस्वस्त हो। जब आप भजन 150 से प्रार्थना करते हैं इसे गाते अथवा इसे पुकारते हैं तो उसकी शांति और आनन्द आपको परिपूर्ण करें।

भ्ज्ञज्ञ 150

याह की स्तुति करो!

ईश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो
उसकी सामर्थ् से भरे हुए आकाशमण्डल में उसकी स्तुति करो!
उसके पराक्रम के कामों के कारण उसकी स्तुति करो
उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उसकी स्तुति करो!
नरसिंगा फूंकते हुए उसकी स्तुति करो
सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो!
डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो
तार वाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो!
ऊंचे शब्द वाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो
आनन्द के महाशब्द वाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो!
जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करें!

याह की स्तुति करो!

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - आराधना

स्फथ्त्ज्ञन

मननः

इस विषय–वस्तु के लिए गीत चुनने में अधिक समय नहीं लगा था। इस समयसीमाहीन गीत के द्व ारा जब मंडली में आराधना समाप्त की गई थी तब हम में से कितने लोग वहा रहे थे अथवा हममें से अनेक लोगों को अवसर मिला था कि परिवार और मित्रों के घनिष्ठ समूह में परमेश्वर की प्रत्येक

आशीष की स्तुति करने के लिये इस गीत को गाये? मरियम और इलिशिवा इसके सुन्दर उदाहरण हैं कि हम जब परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं और उसकी महानता और सामर्थ के लिये जब उसे धन्यवाद दे रहे हों, तब कैसे हम एक दूसरे को उत्साहित कर सकते हैं।

चाहे आप इन वचनों को पढ़ना अथवा मनन करना चुने, रिकॉर्डिंग के साथ–साथ गाना चाहे, अथवा संगीत के प्रति आराधनापूर्वक नाचे मेरी प्रार्थना है कि आपका मन प्रफुल्लित हो और आपकी आत्मा सन्तुष्टि का अनुभव करें।

ैंजि ग्झड र्फझैम् ळम् टॉल ब्झलैथ्स्।ग्स् फ्ल्झै 1974, थ्झॉम्स् कैन्

हो सिताइश बाप की, और बेटे की,
और रूह–उल कुदूस की भी।
जैसी इब्तिदा में हुयी, है अब भी,
और रहेगी हमेशा तक। आमीन।

दिन 4 ~ आराधना

ग्ळश्रझर्ठ रै ज्झन्ध्झ

अध्ययन:

आराधना के अत्यंत सुन्दर तरीकों में से एक मरकुस 14:3–9 में मिलता है जहाँ एक पापी स्त्री के द्वारा यीशु का अभिषेक किया गया था।

शमौन नामक एक फरीसी ने कुछ अन्य मेहमानों के साथ यीशु को भोजन पर बुलाया था यहाँ जो हुआ उस विशेष घटना का सारांश नीचे दिया गया है

"जब वह बेतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आयी और पात्र तोडकर इत्र को उसके सिर पर उड़ेला परन्तु कोई-कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे, इस इत्र को क्यों सत्यानाश किया गया? क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दिनार से अधिक मूल्य में बेचकर कंगालो को बांटा जा सकता था और बे उसको झिड़कने लगे। यीशु ने कहा, उसे छोड़ दो, उसे क्यों सताते हो? उसने तो मेरे साथ भलाई की है। कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं और तुम जब चाहो उनसे भलाई कर सकते हो पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा जो कुछ वह कर सकी उसने किया, उसने मेरे गाड़ें जाने की तैयारी में पहले ही से मेरी देह पर इत्र मला है। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।"

मती और लूका ने भी इस कहानी के अपने संस्करण लिखे थे। लूका 7:39 में लूका ने लिखा था कि फरीसी ने उसे एक पापी स्त्री के रूप में पहचाना था और यीशु पर दोष लगाया था और कि वह उसे अपने पाँव का अभिषेक करने की अनुमति दे रहा था:

"यदि यह भविष्यवक्ता होता तो जान जाता, कि यह जो उसे छू रही है वह कौन और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिनी है यह सुन यीषु ने उनके उत्तर में कहा, कि है षमौन मुझे तुझसे कुछ कहना है वह बोला हे गुरू कह। कि एक महाजन के दो देनदार था, एक पाँच सौ और दूसरा पचास दीनार ध ारता था जब कि उनके पास पटाने के कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया सो उनमें से कौन सबसे अधिक प्रेम रखेगा। शमौन ने उत्तर दिया मेरी समझ में वह जिसका उसने अधिक छोड़ दिया उसने उससे कहा तूने ठीक विचार किया है और उस स्त्री की ओर फिरकर उसने षमौन से कहा, क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया परन्तु तूने मेरे पाँव धोने के लिए पानी न दिया, पर इसने मेरे पॉव आंसुओं से भिगाए, और अपने बालों से पोछा: तूने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूँ तब से इसने मेरे पॉव को चूमना न छोडा तूने मेरे सर पर तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पांव

पर इत्र मला है इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि इसके पाप जो बहुत थे क्षमा हुए क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया, पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है वह थोड़ा प्रेम करता है और उसने स्त्री से कहा तेरे पाप क्षमा हुए।"

प्रभु यीशु ने अनुग्रहपूर्वक इस स्त्री की आराधना को ग्रहण किया और उसके सभी कर्ज, लज्जा और ग्लानि को उससे दूर कर दिया था। कल्पना करें कि इस स्त्री ने कितने अधिक आनन्द का अनुभव किया है।

क्या कभी आपने अपनी आँखें बंद करके यह सोचा है कि भौतिक रूप से आप यीशु के साथ एक कमरे में हो तो यह कैसा होगा? उसकी आराधना करना, उसके साथ संगति रखना, भोजन करना, अथवा उसे बोलते हुए सुनना?

जबकि शमौन ने इन दोनों गंद्याशो में इस स्त्री के कामों को बहुत कम करके आँका था कि उसने धन बरबाद किया और वह ऐसी स्त्री थी जिसे उस कमरे में नहीं होना चाहिए था, वहीं यीशु ने उस स्त्री की प्रतिरक्षा और प्रशंसा करी थी। इससे और भी अधिक उसने शमौन को डांटा था कि उसने एक अनुग्रही मेजबान की भूमिका नहीं निभाई थी क्योंकि उसने एक चुम्बन के साथ उसका अभिनंदन नहीं किया था, उसके पैरों को नहीं धोया था और उसके सिर पर तेल से अभिषेक नहीं किया था जैसे कि वहाँ परम्परा थी।

उसने उस पतित स्त्री की प्रशंसा की जिसने शायद कभी प्रोत्साहन का एक शब्द न सुना हो, उसे कभी आश्वस्त किया गया हो या उसे जीवन में सराहना मिली हो। यीशु ने बताया कि इस बिना नाम की स्त्री ने उसकी कहीं अधिक आराधना की और प्रेम किया क्योंकि उसे अधिक क्षमा प्राप्त हुई थी।

हमें भी अत्यधिक क्षमा प्राप्त हुई है। हम सभी को यीशु की आराधना करने और उसके प्रति अपना प्रेम और भक्ति प्रकट करने के अवसर दिए गए हैं, जैसा कि इस स्त्री ने दो हजार वर्ष पूर्व किया था। क्या हम यीशु के लिए समय दे रहे हैं? क्या हम उसे हमारे जीवनों का केंद्र बना रहे हैं? क्योंकि जब हम ऐसा करते हैं तो हमें बहुतायत से आशीष मिलती है।

प्रश्नः

आपके विचार से उस समय उस स्त्री को कैसा लगा होगा जब यीशु ने उसके कार्यों के लिए उसकी सराहना और प्रतिरक्षा की थी?

जब यीशु ने शमौन को डांटा था तब शमौन को कैसा लगा था?

बाइबल के समय काल में मेहमानों का स्वागत करने के लिए बहुधा क्या रीति–रिवाज थे?

उस परंपरा के अनुसार इस स्त्री का व्यवहार किस प्रकार समानता रखता था अथवा उनसे भिन्न था?

दिन 5 - आराधना

ज्ञिंर्थ्ज्ञंन्ज्ञ त्थ्ज्ञज्ञ व्यळ्ज्ञथ्श्रक चश्रण्ज्ञ

हे पिता तू जो स्वर्ग में है मेरी हार्दिक इच्छा है कि आपसे प्रेम करूँ, आपकी आराधना और प्रशंसा करूँ। मेरे परमेश्वर और उद्धारकर्ता मेरे प्राण आप की स्तुति करते । महिमा देते हैं मेरी आत्मा आप में आनंदित होती है। मुझे ग्लानि और लज्जा से मुक्त करने के लिए आपका धन्यवाद। जैसी मैं हूँ वैसे ही मुझे स्वीकार करने के लिए आपका धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि आपकी सारी परिस्थितियों के वजाये आपमें सदा आनंदित रहूँ। यह जानने में मेरी सहायता करें कि आप मेरे साथ और मेरे लिए हैं। एकमात्र आपको महिमा देने के लिए जो कुछ भी मैं कहती, सोचती और अनुभव करती हूँ उसके लिए मेरी सहायता करें। आपकी दृष्टि में मेरी आराधना ग्रहणयोग्य और आनन्द देने वाली हो। आपकी स्तुति करने और इसके लिए दूसरों की अगुवाई करने में मेरी सहायता करें क्योंकि आप भले और सारी प्रशंसा के योग्य है।

आपके पवित्र और अद्‌भुत नाम में यह प्रार्थना माँगती हूँ आमीन।

व्यवहारिक चरणः

☐ क्या बात आपके लिए आराधना को इतना आकर्षक बनाती है?

☐ अपने दैनिक जीवन में आप किस प्रकार से लागू करेंगी?

☐ किसके साथ आप इस सच्चाई की सहभागिता करेंगी?

अध्याय 6

समर्पण

दिन 1 ~ समर्पण

मरियम मगदलीनी

समर्पण : भविष्य में कुछ करने की सहमति अथवा शपथ

याद करने के लिए पदः
मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढाया गया हूँ और अब मैं जीवित ने रहा, पर मसीह मुझमें जीवित है, और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आपको दे दिया। (गलातियों २:२०)

प्रार्थनाः

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययनः

जब आप यह अध्ययन आरम्भ करते हैं तब ध्यानपूर्वक समर्पण की परिभाषा को पढें दी गई प्रार्थना करें और अपने स्मरण पद को दोहराये

किसी बात के प्रति पूरी तरह से समर्पित होने का क्या अभिप्राय होता है? चाहे एक पति–पत्नी हो, एक खेल की कोई गतिविधि हो अथवा एक उद्देश्य हो यहाँ समर्पण की आवश्यकता होती है। इन सब में हमारा समय, योग्यताएं और हमारे संसाधन उपयोग होते हैं। परन्तु इससे पहले कि हम समर्पित हो आवश्यक है कि हम इसमें अपने ह्रदयों को सम्मिलित करें। यीशु मसीह के अनुयायी होने के लिए ह्रदय और सोच के एक निर्णय को आशापूर्ण, समर्पित और प्रतिबंध होना चाहिए।

यहा मैं अपने एक प्रिय मित्र सहकर्मी और यीशु की एक जोशीली अनुयायी की व्यक्तिगत गवाही लिख रही हूँ। यीशु के लिए उसका प्रेम संक्रमित करने वाला है और उसकी कहानी दर्शाती है कि बहुद्द ाा यीशु के साथ एक संबंध सरल नहीं है। उससे दूर भागने और छिप जाने के प्रति 10 वर्ष बीत गए जब यीशु ने कैटी को ढूंढा, उसे वापस लाया और उसके जीवन के प्रभु के रूप में उचित स्थान प्राप्त किया।

वैटभ क्भ क्ळझ्न्भ

प्रिंस विलियम साउंड, अलास्का में मैंने स्वयं को कैसे एक बडे तूफान के केंद्र में एक छोटी नौका में अकेले बैठे हुए पाया था? मेरे चारों ओर लहरें उठ रही थी और तेज हवाये चल रही थी। मैं उस छोटी नौका में बैठी हुई डर से चिल्ला और रो रही थी। नौका मेरा जीवन थी, और मेरे तथा अन्य लोगों के पापों के परिणाम का तूफान मुझे सताता था। जब लज्जा और ग्लानि की लहरें मुझे डुबाने पर थी तभी मैंने एक आवाज सुनी। यह आवाज कृपा और आश्वासन से भरी थी और मैंने इसे पहले कभी नहीं सुना था। इस आवाज को जाने बिना कैसे मैंने 29 वर्ष बिता दिए थे? इस आवाज ने तूफान को शान्त कर दिया था और मैंने अपने मन में सुना,''बस बहुत हो गया क्योंकि तुम मेरी हो पिता परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा के द्वारा मुझसे बात कर रहा था। इस

दर्शन, मे मैंने देखा कि एक हाथ ने मुझे नौका से बाहर निकाला और सुरक्षित भूमि पर मेरे पॉव को स्थिर किया। जबकि अन्य लोग मुझे एक विद्रोही–जंगली बदसूरत और बेकार लड़की समझते थे–वही मेरे पिता परमेश्वर ने मुझे अपनी अनमोल, बहुमूल्य, निष्ठावान और सुंदर पुत्री के रूप में देखा था। 2009 की गर्मियां जब मेरी आयु 29 वर्ष की थी तो यह समय मेरी माँ और मेरे बहुत अच्छे चाचा जेरी की बहुत दिनों से की जा रही प्रार्थनाओं का प्रतिउत्तर था।

मैं अपने भले चाचा और चाची के साथ 1999 में 1 वर्ष तक तब रही थी जब मैं अपने साथ किए गए दुर्व्यवहार के कारण आत्महत्या का एक असफल प्रयास कर चुकी थी मेरे चाचा जेरी ने मुझे पिता परमेश्वर के प्रेम को दर्शाने की कोशिश की थी, परन्तु मैं स्वयं को इतना टूटा हुआ महसूस कर रही थी कि मैंने इस प्रेम के विरुद्ध जीना ठान लिया था। एक दिन मुझे उन दोनों ने अपने पास बिठाया और कहा,''बेटी हम तुमसे प्रेम करते हैं और चाहते हैं कि तुम हमारे पास रहो। परन्तु यदि तुम अपना व्यवहार नहीं बदलती हो तो तुम्हें यहाँ रहने की अनुमति नहीं दे सकते हैं। जो प्रेम वे मुझ पर दर्शा रहे थे वह मेरे लिए असहनीय था। और मैंने उनका घर छोडने का चुनाव किया। इसके बाद में अनेक टूटने वाले रिश्तो में जुडती रही। 10 वर्षों तक मैंने एक जेरी चाचा के फोन कॉल्स का जवाब नहीं दिया था।

यीशु के साथ हुई मेरी भेट के बारे में जब मेरे चाचा को मालूम पडा तब वह बहुत खुश थे। उन्होंने शीघ्र ही मुझे आमंत्रित किया कि उनके साथ एक प्रार्थना बाचा में सम्मिलित हूँ,''क्या तुमने यीशु से कहा है कि वह प्रतिदिन तुम्हारे जीवन का स्वामी हो वह जैसा भी तुम्हें बनाना चाहता है वैसे ही तुम्हें बनाये? उनकी यह बात गहराई से मेरे हृदय में बैठ गई। मैं जानती थी कि यीशु से पृथक जीवन खाली और व्यर्थ और दण्ड के योग्य था। मैंने तुरंत उन्हें उत्तर दिया था,''जी हाँ मैं ऐसा करना चाहती हूँ।'' मैं इस बात के लिए व्याकुल थी कि यीशु की उपस्थिति मेरे जीवन को प्रचुरता और सुंदरता से भर दे। जेरी ने आगे कहना जारी रखा ''कैटी जब तुम अपने लिए प्रार्थना करती हो तो क्या उसमें मेरे लिए भी प्रार्थना करने के लिए इच्छुक हो?''

और इस प्रकार मैंने अपनी प्रार्थना यात्रा शुरू की अन्य लोगों के साथ मिलकर जब हमने यीशु के पीछे चलने का समर्पण किया था। तो मैं उनके साथ और उनके लिए प्रार्थना कर रही हूँ।

परमेश्वर के वचन ने मुझसे वार्तालाप करना आरंभ किया कि मैं अपने को बदल दूँ मैं जो स्वयं की व्यर्थ और मूल्यहीन समझती थी उससे प्रेमी परमेश्वर ने मुझे उसकी दृष्टि अनुसार अनमोल बना दिया। इन सभी लोगों से जो अपने प्रार्थनाओं के उत्तरों की लंबे समय से प्रतीक्षा कर रहे मैं केवल यह कहना चाहती हूँ की प्रयास करना ना छोडे। पीडा के संसार में यीशु आपके साथ है वह आपकी प्रार्थनाये सुनता है और अपने उचित समय के अनुसार उनका प्रतिउत्तर देने में विश्वास योग्य है।

प्रश्नः

कैटी की कहानी से आपने क्या सीखा है?

क्या आपके जीवन में कोई ऐसा है जिसके लिए आप चाहते हैं कि वह परमेश्वर के प्रेम की सामर्थ में बदला जाये?

यीशु के प्रति अपने जीवन के प्रत्येक को समर्पित करने का आपके लिए क्या अभिप्राय है?

ॅींजए पि ंदलजीपदहए ंतम लवन ंिवसकपदह इंबाः

ॅींज कव लवन ूंदज जव ींअम श्रमेने बींदहम पद लवनः

भजन

दिन 2 ~ समर्पण

भजन ६३:१–८

मननः

शब्दकोश में समर्पण को इस प्रकार परिभाषित किया गया है अभिप्रायपूर्वक समझते हुए किया गया व्यवहार है। जैसा कि केटी की कहानी दर्शाती है समर्पण कमजोर इच्छाशक्ति रखने वालों के लिए नहीं है। आपको इसे प्राप्त करने के लिए अपना पूरा मन और प्राण लगाने पडते हैं यह एक व्याकुल करने वाली चाहत है जैसे ''यीशु में आपके पीछे चलना चाहता हूँ। यीशु मैं आपका हूँ आप जैसा भी चाहते हैं आप मेरे साथ करें मुझे अपनी समानता में बदलते जाए, मुझे अपने सामान बनाये मुझे रूपांतरित करें।

भजन 16:1–8 पढे। दाऊद की प्रार्थना में उसकी व्याकुलता को देखें। अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव करने के लिए क्या आप उसके व्याकुलता भरे जोश को अनुभव कर सकते हैं? क्या आप अपने हृदय में इस प्रकार की लालसा को अनुभव कर सकते हैं

भ्झ्जन 63:1–8

ळे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूँढूगा,
सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है,
मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।

इस प्रकार से मैं ने पवित्रास्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं।
क्योंकि तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है मैं तेरी प्रशंसा करूंगा।
इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूंगा और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊंगा।
मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा,
और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूंगा।

जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा,
तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा।
क्योंकि तू मेरा सहायक बना है, इसलिये मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करूंगा।
मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता है और मुझे तो तू अपने दाहिने हाथ से थाम रखता है

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - समर्पण

स्तुतिगान

मननः

हमारी अनेक कहानियों में ऑलवेज जीजस'' गीत ने हृदय को स्पर्श करते हुए हमसे बात की है।''यीशु मेरा अगुवा है, वह तूफान भरे सागर में मेरा सहारा है वही मार्ग, सत्य और जीवन है।'' यीशु का प्रभुत्व उसके प्रति हमारे समर्पण को चाहता है जिसने हमें अपने हाथ की हथेली में थाम रखा है, और जो शान्ति प्रदान करता है

चाहे आप इस गीत शब्दो को पढना और उन पर मनन करना चाहे, एक रिकॉर्डिंग के साथ गाना चाहे अथवा इसके संगीत में आराधनापूर्वक नाचना चाहे, आपका हृदय विचलित होना चाहिए साथ ही आपके प्राण प्रफुल्लित होने चाहिए।

ऑलवेज जीजस

मेरे होठों पर पहला नाम,
जिस दोस्त के साथ बैठ सकूँ
मेरे दैनिक अधिवक्ता,
आपके राज्य की सुरक्षा,

आप हमेशा कारण रहेंगे।
आप हमेशा पर्याप्त रहेंगे।
यीशु हमेशा यीशु
यीशु हमेशा।

मेरे लिए आपके प्यार की गहराई
प्रचण्ड समुन्द्र में मेरा लंगर है।
आप बोलते हैं और आप शांति लाते हैं
तुम हमेशा मुझे पकडे रहते हो।

आप हमेशा कारण रहेंगे।
आप हमेशा पर्याप्त रहेंगे।

मेरे जीवन का स्वामी, द्वार, मार्ग, दाखलता।
यीशु हमेशा यीशु। आप समय के बाहर खडे हैं
वचन, सत्य, जीवन
यीशु हमेशा यीशु।

दिन 4 - समर्पण

गहराई से जानना

अध्ययनः

मरियम मगदलीनी समर्पण को समझती थी परमेश्वर द्वारा दिया गया जो चरित्र समर्पण से आता है वह उसके पास थाः बहादुरी/वीरता, विश्वासयोग्यता, सामर्थ तथा भक्ति। यीशु के माता मरियम के साथ खडे हुए कुछ अनुयायियों में वह एक थी जब यीशु को क्रूस पर चढाया गया था। उसने वहाँ खडें होकर उस क्रूरता को देखा था हम उसके गहरे दुख के बारे में केवल कल्पना ही कर सकते हैं जब उसने उसकी अपने प्राण देते हुए देखा था जिसने उसे जीवन दिया था, उस पर दया की थी उसमे से सात दुष्टात्माओं को निकाला था वह जिसने उसे सेवा के योग्य समझा था और वह जिसने उसे बिना शर्त प्रेम किया था, अब स्वयं कूसकी वेदना सह रहा था और अपने पिता से प्रार्थना कर रहा था।

समर्पण, बलिदान चाहता है। मरकुस 15:4–41 में हम मरियम को स्त्रियों के एक ऐसे समूह में पाते हैं यीशु का न केवल अनुसरण कर रही थी परन्तु वह अपने काम में सहायता करने और उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी समर्पित थी। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं कि वह यीशु की कब्र पर जाने वाली स्त्रियों में से एक थी। (लुका 23– 55–56,24:1)।

यूहन्ना ने उसे बहुत सामर्थी ढंग से लिखा है जो कब्र पर हुआ था। यूहन्ना 20: 1–18

सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा। तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैंय और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहां रख दिया है। तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले। और दोनों साथ साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहिले पहुंचा। और झुककर कपड़े पड़े देखे तौभी वह भीतर न गया। तब शमौन पतरस उसके पीछे पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे। और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं, परन्तु अलग एक जगह लपेटकर रखा हुआ देखा। तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहिले पहुंचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया। वे तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा। तब ये चेले अपने घर लौट गए।

मरियम मगदलीनी सबसे पहले कब्र पर पहुंची थी वह पत्थर को कब्र पर से हटा हुआ देखती है और वापस दौडती हुई पतरस और यूहन्ना के पास जाती हैं। बे उसके साथ कब्र पर आकर देखते हैं और वहाँ उस कपडें की केवल पटिया पडी देखते हैं कुछ समय वे पूर्णतया पूर्नरूत्थान को नहीं समझते हैं वापस घर लौट जाते हैं। परंतु मरियम वही खडी रहती है

परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते रोते कब्र की ओर झुककर, दो स्वर्गदूतों को उज्ज़वल कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की लोथ पड़ी थी। उन्होंने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? उसने उनसे कहा, वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है। यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है। यीशु ने उस से कहा, हे नारी तू क्यों रोती है? किस को ढूंढती है? उस ने माली समझकर उस से कहा, हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी। यीशु ने उस से कहा, मरियम! उस ने पीछे फिरकर उस से इब्रानी में कहा, रब्बूनी अर्थात हे गुरू। यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं। मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, कि मैं ने प्रभु को देखा और उस ने मुझ से ये बातें कहीं।

यह अद्भुत नहीं है कि यीशु ने सबसे पहले एक स्त्री के प्रति स्वयं को प्रगट करने के लिए चुना था? यीशु ने मरियम मगदलीनी के ऊपर प्रेम और भक्ति को जाना था और उसे इसका प्रतिफल दिया था। यीशु ने उस समय उसके आभार को भी देखा था जब उसमें से उसने दुष्टआत्माओं को निकाला था– यीशु के प्रेम के कारण उसका जीवन नाटकीय ढंग से बदल गया था। उसमें भय और पीडा की जगह सहास और सामर्थ आ गयी थी और मरियम, कुछ दिन के बाद अभी अपने मुक्तिदाता से प्रेम करने वाली समर्पित अनुयायी बन गई थी उसने क्रूस तक और फिर उसकी कब्र तक उसका अनुसरण किया और फिर उसे यह सम्मान मिला इन सबसे पहले अपने पुनरुत्थान प्राप्त प्रभु के दर्शन प्राप्त करें।

यीशु ने उसे अकेला देखा और अपने लिए रोते पाकर यीशु अवश्य ही विचलित हुआ था। जब मरियम ने उससे पूछा था हे महाराज की यदि तूने उसे उठा लिया है मुझसे यह कह कि उसे कहाँ रखा है और मैं उसे ले जाऊँगी तब यीशु ने करुणा से भरकर उसके दुख को समझा था। यह मरियम की परमभक्ति थी। और फिर यीशु ने केवल उसका नाम मरियम कहकर अपनी कोमल प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। और तुरन्त ही उसने अपने चंगाई कर्ता, अपने मित्र अपने मुक्तिदाता की आवाज को पहचान लिया और उसे रब्बूनी अर्थात हे गुरु कहकर पुकारा। जो कुछ भी मरियम ने सहा था क्या इसका उसे इससे बडा प्रतिफल मिल सकता था यीशु को आमने–सामने देख पाना यह जानना है कि वह वास्तव में जीवित है और सबसे पहले उसकी कोमल आवाज को सुनना है उसका बडा प्रतिफल था।

मरियम ने वह सब कुछ जो अनुभव किया था उसका अनुभव हमें मदरटेरेसा के यह शब्द प्रदान करते हैं,''यीशु ने कहा था मैंने तुझे तेरे नाम से पुकारा है। तुम मेरी दृष्टि में अनमोल हो। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ यदि आप यीशु से प्रेम करते हैं तो इसके लिए पूर्णतया समर्पित होना और प्रत्येक को यीशु के बारे में बताना आपके लिए सरल होगा।

मरियम मगलीनी अपने उद्धारकर्ता की उपस्थिति से सम्मोहित थी पूर्ण आज्ञाकारिता के जीवन के द्व ारा उसका पाप छुपा दिया गया था और यीशु की सामर्थ ने तब उसे अपनी परीक्षाओं में स्थिर रहने के योग्य बनाया था जब उसकी आशीशों ने उसके प्राण को प्रफुल्लित किया था। मरियम ने जीवन और मृत्यु में यीशु का अनुसरण किया था। उसने सम्पूर्ण और आज्ञाकारिता को समझा था। उसने अपने दुख में उसकी शांति को जाना था– सर्वप्रथम जब उसने दुष्टआत्माओं से उसे चंगाई दी थी और इसके बाद कब्र पर वह उससे मिला था– यीशु को देखकर उसके श्रमित प्राण प्रफुल्लित हो गए थे

मैं और आप प्रतिदिन यीशु से भेंट कर सकते हैं– यीशु जो चंगाई देने वाला, जीवन देने वाला, प्राण को नया बनाने वाला, हमारा अधिवक्ता, हमारा मुक्तिदाता हमारे जीवन की रोटी है। यह हर समय तब होता है जब हम उसके अनुग्रह के सिहासन के पास आते हैं जब आप प्रार्थना करते,''अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहता हूँ जैसा आप चाहते है वैसा मुझे बनाये''

उसकी आवाज को सुने और उसे अपने प्राण की गहराई में सेव करने की अनुमति दें। उसकी उपस्थिति में समय व्यतीत करे। अपने को उसकी निकटता में ले जाएं। मेरी प्रार्थना है कि प्रार्थना करने में हमारी विश्वास योग्यता यीशु के प्रति हमारे प्रेम, समर्पण और अमर भक्ति की एक गवाही हो।

प्रश्नः

इस कहानी में आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है?

इस कहानी में समर्पण को कैसे दर्शाया गया है?

आप किस प्रकार से मरियम मगदलीनी के समान है ? किन बातों में आप उससे भिन्न है?

आप क्यों सोचती है कि यीशु ने एक स्त्री को चुना था कि उसके पुनरुत्थान के बाद सबसे पहले वह उसे दिखे?

कोई ऐसी बात बताये जो यीशु के प्रति पूर्णतया समर्पित होने से आपको रोकती है?

दिन 5 ~ समर्पण

ड्रिंर्थ्झन्झ टङ्गैश्र व्यळ्झथ्श्रक च्श्रण्झ

हे पिता तू जो स्वर्ग में है, मैं अपने सारे ह्रदय से आपको प्रसन्न करना चाहती हूँ। मुझे अपनी पुत्री बनाने के लिए आपका धन्यवाद। जब भी मैं आपको पुकारती हूँ तो आप मुझे अपनी निकटता में लाते हैं इसके लिए आपका धन्यवाद। मैं अपने को आपके प्रति समर्पित करती हूँ आज आप मेरे जीवन के प्रभु हो और जैसे कि आप चाहते हो मुझे बदले मुझे अपनी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करें। मुझमें और मेरे द्वारा स्वयं को महिमा दे। अनन्त के मार्गो में मेरी अगुवाई करें।

यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करती हूँ। आमीन।

व्यवहारिक चरण:

☐ समर्पण में क्या बात जो आपको अधिक आकर्षक लगती है?

____

____

____

____

____

____

☐ इसे आप दैनिक जीवन में कैसे लागू करेंगी?

____

____

____

____

____

☐ किसके साथ आप इस सच्चाई की सहभागिता करेंगी?

____

____

____

____

____

____

अध्याय 7

निर्भरता

दिन 1 ~ निर्भरता

ध्व्त्र टझत्म्झ क्भ डप्थ्स्थ्झथ क्झ टभ्यझरू क्श्रन्झ

निर्भरता : किसी अन्य के द्वारा प्रभावित अथवा निर्धारित होने या उस के अधीन होने की अवस्था अथवा गुण

याद करने के लिए पदः
और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। (इफिसियों ५:१८-२०)

प्रार्थनाः

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययनः

जब आप इस अध्ययन को आरम्भ करते हैं, तब ध्यानपूर्वक निर्भरता की परिभाषा को पढें, यहाँ दी गयी प्रार्थना करें और अपने स्मरण पद को दोहरायें ।

हमारा समाज अनेक प्रकार की बुरी आदतों से ग्रसित है जैसे मदिरा पान, नशीली दवाइयाँ, गलत यौन सम्बंध अथवा धन। यह दुखद वास्तविक है कि मानव समाज इन व्यवहारो पर निर्भर है जिससे कि अपने भीतर के खालीपन को भर सके। शैतान की तीन गुना युक्ति, पहले ढूंढना फिर मारना और नाश कर देना है। ऐसा केवल चर्च के बाहर ही नहीं है परंतु दुखपूर्वक यह हमारी कलीसियाओ और घरों में भी मिलता है। संसार जो आत्मिक रूप से हमें नाश करने वाली निर्भरताओं को प्रस्तुत करता है उससे हम कैसे सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई गवाही इसका एक अदभुत उदाहरण है कि यीशु पर निर्भर रहने का क्या अभिप्राय होता है और कैसे हम अपने को उसके प्रभुत्व के अधीन कर सकते हैं।

एक थ्म्त्र क्भ क्ळझन्भ

सब कुछ बाहर से बड़ा अच्छा दिखता था। हम अपने तीन अद्‌भुत बच्चों और एक प्यारे कुत्ते के साथ एक सुन्दर घर में रहते थे, हमारे चारों ओर का वातावरण भी बहुत अच्छा था। मेरे पति अपने काम के सम्बन्ध में बहुधा यात्राएँ किया करते थे, और मैं घर में रहकर व्यस्त रहती थी। सब कुछ बहुत अच्छा प्रतीत होता था, पर क्या वास्तव में ऐसा था?

हम अपने घर में लम्बी अवधि की कुछ बहुत कठिन परिस्थितियों से जूझ रहे थे। हमारे बच्चों में से एक बच्चा मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना कर रहा था और इससे मुझे कठिन दिन बिताने पड़ते थे। मेरे पति और मेरे बीच वैवाहिक सम्बन्ध खराब होने लगे थे। वे बहुध ा यात्राओं पर बाहर रहते थे और अपने दो बच्चों की देखभाल करने के साथ-साथ मुझे अकेले अपने बीमार बच्चे को भी संभालना पड़ता था। मैंने तनाव मुक्त होने के लिए सप्ताह के अंत पर मदिरा पीना आरम्भ कर दिया, जो आगे अनेक दिनों तक नशा करने और शाम को जल्द ही पीना आरम्भ करने की आदत बन गयी थी। मैंने अपनी सोच के अनुसार बस थोड़ा तनाव मुक्त होने के

लिए पीना शुरू किया था जो पूरे दिन काम में मेरे व्यस्त रहने के एक पुरस्कार के रूप में था। परन्तु परमेश्वर मेरी इस छोटी सी आदत को पुरस्कार नहीं कहता था, उसने इसे एक व्यसन अथवा एक मूर्ति कहा था। मैं परमेश्वर की उपस्थिति के बजाये अपने इस दैनिक मद्यपान पर निर्भर हो रही थी।

एक दिन जब मैं अपने घर के सामने पौधों को पानी दे रही थी तो मुझे स्पष्ट रूप से याद आया कि परमेश्वर प्रेमपूर्वक मुझे उसकी इच्छा याद दिला रहा था कि मैं मदिरा पीना छोड़ दूँ। यह मुझे बहुत बुरा लगा था। क्या मैंने उसे अपना सब कुछ नहीं दे दिया था? फिर वह मेरे जीवन के इस क्षेत्र में क्यो हस्तक्षेप कर रहा था? मैंने उससे कहा कि अपने जीवन के इस क्षेत्र में मैं उसकी इच्छा के अनुसार नहीं चलूँगी। दिन बीतते गए, और मैं बहुत परेशान थी। मैंने प्रभु के साथ एक समझौता किया। मैंने स्वयं से कहा कि मैं सप्ताह के अन्त के दिन में नहीं पीयूँगी, क्योंकि वह सप्ताह के अन्त पर मदिरा पान को त्यागने का आशय नहीं रखती थी। और मैंने कुछ दिनों तक इसी योजना का पालन किया।

इसके बाद मैंने सप्ताहान्त की सच्ची परिभाषा को ढूंढना आरंभ किया। क्या यह केवल शुक्रवार से शनिवार था, अथवा इसमें रविवार भी सम्मिलित था? और क्योंकि बृहस्पतिवार की रात शुक्रवार के अति निकट होती है तो क्या गुरुवार को भी सप्ताहांत में सम्मिलित होना चाहिए था यह मूर्खता भरा समझौता लगभग एक साल तक जारी रहा, पर मैं अभी भी परेशान थी। मैंने बाइबल अध्ययन का आनन्द खो दिया और मेरा प्रार्थना का समय कठिन होने लगा था। लगता था कि परमेश्वर बहुत दूर है। इस प्रकार स्वयं को बीमार बनाने के बाद मैं परमेश्वर के पास लौटी और उससे कहा कि मेरा सब कुछ उसके अधीन है। अपनी भलाई के लिए जब मैंने मदिरा पान बन्द करने का समर्पण किया तो शीघ्र ही उसने मेरी पीने की इच्छा को हटा दिया। मैं अब उसकी शांति से परिपूर्ण थी और उसकी उपस्थिति का अनुभव करने लगी थी। यह बडा आशीष भरा था!

परमेश्वर जानता था कि मेरा भविष्य कैसा था और अपनी कृपा में होकर उसने मुझे एक स्पष्ट और सन्तुलित सोच रखने के लिए मजबूर किया था। अभी अन्धकार भरे दिनों का आना बाकी था और मुझे मदिरा का सहारा लेने के बजाय उसकी उपस्थिति, ज्ञान तथा शान्ति पर निर्भर होने की आवश्यकता थी।

प्रश्नः

इस कहानी में किस बात ने आपका ध्यान आकर्षित किया है?

उसके संघर्षों के प्रति आप स्वयं को कैसे जुड़ा देखती हैं?

क्या आपके जीवन में कोई ऐसी बात है जो यीशु पर आपकी पूरी निर्भरता से आपको रोकती है?

आनंद और खुशी के लिए आप किस पर निर्भर है?

दिन 2 - निर्भरता

भजन १३

मनन:

जब आप भजनों को पढ़ते हैं तो परमेश्वर की उपस्थिति पर दाऊद की निर्भरता आपको स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वास्तव में तो वह अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति इतना अधिक संवेदनशील था कि उन समयकालो में भी जब उसने उसकी घनिष्ठता की संवेदना को खो दिया था तो उसने व्याकुलतापूर्वक इसे पुनः पाने का प्रयास किया था। हमें जब प्रार्थनाओ के उत्तर नहीं मिलते हैं अथवा ऐसा लगता है कि परमेश्वर बहुत दूर है तो बहुधा हमारी प्रतिक्रिया अपनी प्रार्थनायें बन्द करना होती है। परन्तु यही वह महत्वपूर्ण समय है कि हमें प्रार्थना जारी रखना है– प्रार्थना करना जब सब कुछ शांत हो, और तब भी प्रार्थना करना जब जीवन तूफानों से घिरा हों। यीशु पर सच्ची निर्भरता केवल उस समय नहीं है जब हम पर्वत के शिखर पर हो परन्तु यह तब भी है जब हम गहरी वादी में हों। अधिकतर यह गहरी वादियों में बिताया समय होता है जब हमारी परीक्षा ली जाती है हमें गाढ़ा जाता है और हम अपने घुटनों पर आने के लिए मजबूर होते हैं। हम समझ जाते हैं कि इसे अकेले नहीं कर सकते हैं हमें अपने पिता के प्रेम, यीशु के अनुग्रह और पवित्र आत्मा की संगति की आवश्यकता होती है जिससे कि आगे बढते जायें (2 कुरिन्थियों 13:14)।

भजन 13

हे परमेश्वर तू कब तक? क्या सदैव मुझे भूला रहेगा? तू कब तक अपना मुखड़ा मुझ से छिपाए रहेगा?

मैं कब तक अपने मन ही मन में युक्तियां करता रहूं, और दिन भर अपने हृदय में दुखित रहा करूं, कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा?

हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे, मेरी आंखों में ज्योति आने दे, नहीं तो मुझे मृत्यु की नींद आ जाएगी।

ऐसा न हो कि मेरा शत्रु कहे, कि मैं उस पर प्रबल हो गया और ऐसा न हो कि जब मैं डगमगाने लगूं तो मेरे शत्रु मगन हों।

परन्तु मैं ने तो तेरी करूणा पर भरोसा रखा है मेरा हृदय तेरे उद्धार से मगन होगा।

मैं परमेश्वर के नाम का भजन गाऊंगा, क्योंकि उसने मेरी भलाई की है।

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 ~ निर्भरता

स्तफथ्त्झन

मननः

“स्प्रिट ऑफ गॉड” गीत हमें सुन्दर ढंग से याद दिलाता है कि हमें पवित्र आत्मा को आमंत्रित करना है कि वह हमारे जीवनों में अपना उचित स्थान ग्रहण करे।

हम जो विश्वासी हैं हमारी आंखें और हृदय उसकी अतुलनीय महान सामर्थ को पहचानने (इफिसियों1:19)। जब वह आपको पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करता है तब हमारे हृदय आभार से परिपूर्ण हों, जहाँ हम सदैव प्रत्येक बात के लिए परमेश्वर पिता का धन्यवाद कर रहे हो क्योंकि जो भी हमारी, आपकी और मेरी आवश्यकता होगी वह सब उपलब्ध है।

चाहे आप वचनों को पढ़ना अथवा उस पर मनन करना चाहें, चाहे आप एक एक रिकॉर्डिंग के साथ गाऐ अथवा संगीत में आराधनापूर्वक नाचने लगे, मेरी प्रार्थना है कि आपका हृदय प्रफुल्लित हो और आपके प्राण संतुष्ट हो।

प्श्रैम्श्श्र क्झ टझत्म्झ

क्या आप इसे सुन सकते हैं? अचानक शांत
जब आत्मा अन्दर आता है तो आप इनकार नहीं कर सकते।
हवा बदल रही है

जमीन हिल रही है।
यही रहने के लिए उनकी उपस्थिति की आशा करना।

जब तुम गिरते हो, जब तुम गिरते हो,
मेरी दीवारें टूटने लगती है।

परमेश्वर का आत्मा, परमेश्वर को आत्मा
आओ और अपनी जगह ले लो
आओ और अपनी जगह ले लो,
यहाँ हमारे दिल में,
यहाँ हमारे दिल में,
आओ और अपना रास्ता बनाओ,
आओ और अपना रास्ता लो।

जैसा कि हम विश्वास कर रहे हैं परमेश्वर आप आगे बढ रहे हैं
अंधे देख रहे हैं
हर घाव भरने लगता है
क्या आप सामर्थ के साथ आएंगे
आपकी पवित्र अग्नि को जागने दो
स्थान को स्तुति से गूंजने दो।

दिन 4 - निर्भरता

ग्ळश्रझ्ठ रै ज्झन्झ

अध्ययनः

टनत उमउवतल अमतेम पे विनदक पद म्चीमेपंदे 5रू18.20रू

और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।

और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो।

और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।

पौलुस निर्देश देता है कि हमें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना है, प्रत्येक दिन क्षण प्रतिक्षण उस पर निर्भर होना है। यह केवल प्रार्थना के द्वारा प्राप्त होता है। यह परमेश्वर से अभिप्रायपूर्वक मांगना है कि वह आपको अपने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करें।

पवित्र आत्मा एक उपहार है जिसके लिए यीशु ने अपने शिष्यों से प्रतिज्ञा की थी कि जब वह स्वर्ग में अपने पिता के पास लौटेगा तब पवित्र आत्मा आएगा और उसके प्रति सेवकाई करेगा। शिष्य यीशु के ऊपर निर्भर थे। वह उनका शिक्षक, पथप्रदर्शक चंगाई देने वाला और मित्र था। यूहन्ना 14 उन प्रतिज्ञाओं को बताता है जो यीशु ने उन्हें दी थी उस दुख की कल्पना करें जिसका अनुभव वे तब कर रहे थे जब उन्होंने जाना था कि यीशु उनके साथ नहीं रहेगा। उनकी अभी पवित्र आत्मा से भेंट होनी थी और उसकी सामर्थ को जानना था जो शीघ्र ही आयेगा।

जब हम परमेश्वर के वचन का गहराई से अध्ययन करते हैं तब हमें पवित्र आत्मा पर अनेक विवरण मिलते हैं। नीचे ऐसे ही कुछ गद्यांश दिए गए हैं जो हमें जानकारी देंगे जब यीशु ने पहली बार शिष्यों से प्रतिज्ञा की थी, कैसे उसकी प्रतिज्ञा की पूर्ति हुई थी और उस प्रतिज्ञा को हम प्राप्त करें इसके लिए हमें क्या निमंत्रण दिया गया है। आइऐ, एक साथ मिलकर यूहन्ना 14:16–21, यूहन्ना14:15–27 और यूहन्ना16:13 में शांति देने वाले यीशु के सन्देश को पढ़ें।

और मैं पिता से बिनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।

अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।

मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ। (यूहन्ना १४:१६-२१),

ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं।

परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूंय जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देतारू तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। (यूहन्ना१४:२५-२७)

परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। (यूहन्ना१६:१३)

यहाँ हम देखते हैं कि यीशु ने अपने शिष्यों से एक मित्र, एक अधिवक्ता की प्रतिज्ञा की थी जो ना केवल उनके साथ होगा परंतु हमेशा के लिए उनकी सहायता करेगा। और वे जानते थे कि यीशु सदैव अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करता है। वह हमेशा सत्य बोलता है।

आइए उसकी प्रतिज्ञा को पुन: अवलोकन करें :

तुम अनाथ नहीं होंगे।

मैं तुम्हारे पास आऊंगा।

क्योंकि मैं जीवित हूँ इसलिए तुम जीवित रहोगे।

तुमसे प्रेम किया जाएगा।

मैं तुम पर अपने को प्रगट करूँगा,

मैं तुम्हें सब बातें सिखाऊँगा,

जो तुम सीख चुके हो वह याद दिलाऊंगा

तुम्हें अपनी शांति दूंगा।

इन प्रतिज्ञाओं को करने के पश्चात उसने इस प्रकार अपनी बात समाप्त की थी, ''तुम्हारा मन ना घबराए और ना डरे। (यूहन्ना 14:27)

मैं जब यह बातें लिख रही हूं पूरे संसार में कोविड–19 फैला हुआ है। पूरा संसार बहुत बड़ी विपदा में है। अनेक लोग लॉकडाउन में बन्द है, बहुतों की नौकरी छूट गई है, और स्टॉक मार्केट बहुत गिर चुकी है, परिवारों ने अपने बहुत से प्रियजनों को खोया है और विश्व शांति के लिए व्याकुल है क्योंकि सब लोग घबराए हुए हैं। हम जानते हैं कि कोविड–19 चला जाएगा परन्तु हम सदा विभिन्न प्रकार के उन दुखों का सामना कर रहे होंगे जो हमें चुनौती देते हैं कि प्रभु पर विश्वास रखें। विपदा का यह समय हम सबसे मांग करता है कि स्वयं को जाँचे और कठिन प्रश्नों को पूछें।

सबसे अधिक मैं किस पर निर्भर हूँ? मेरा स्वास्थ्य? मेरे आर्थिक संसाधन? मेरी नौकरी अथवा व्यवसाय?

क्या मैं पूरे आश्वासन के साथ यह कहता हूँ, ''मेरा परमेश्वर'' भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरा करेगा (फिलि0 4:19)।

जब आप तनाव का अनुभव कर रहे हो, निराश अथवा भयभीत हो तब कलपना करे कि यीशु ने जिस प्रकार अपने शिष्यो को वचन दिया था, वैसे ही वह आप से कह रहा है। निचे खली स्थान में अपना नाम लिखे।

_____ एक अनाथ के रूप में मैं तुम्हें छोडूंगा।

_____ मैं तुम्हारे पास आऊँगा।

_____ क्योंकि मैं जीवित हूँ इसलिए तुम्हें भी तुम भी जीवित रहोगे।

_____ तुमसे प्रेम किया जाएगा।

_____ मैं तुम पर अपने आप को प्रकट करूँगा।

_____ मैं तुम्हें सब बातें सिखाऊँगा।

_____.मैं तुम्हें अपनी शांति दूँगा।

पेन्तेकुस्त के दिन यीशु के द्वारा की गई प्रतिज्ञा के बाद, एक तेज आंधी आई और उसने प्रत्येक को अपने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण किया।

और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे। (प्रेरित के काम २:२-४)

वही पवित्र आत्मा हममें से प्रत्येक के भीतर निवास कर सकता है और जब हम निवेदन करते हैं तो वह हमारा हो सकता है आपके लिए मेरी प्रार्थना हैः

"परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करें, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए" (रोमियो १५:१३)।

यदि हम पवित्र आत्मा पर निर्भर है, तब हम उसके आत्मा के फल से परिपूर्ण होंगे। यह जानना कितना शान्तिदायक है कि अपनी परिस्थितियों के बावजूद हम उसके आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण हो सकते हैं।

क्योंकि पवित्र आत्मा हम में है हम आशा से भर सकते है। यह जानना कितना उत्साहवर्धक है कि परमेश्वर का आत्मा हमें जोश के साथ परमेश्वर तक ऊचें उठा रहा है। वह अपनी सन्तान के लिए आहें भर भर कर बातें करता है। और हम में से प्रत्येक के भीतर आत्मा का फल भी जीवित रहता हैं (रोमियों ८:२६)

और आत्मा का फल भी हम में से प्रत्येक के भीतर पाया जाता है

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें (गलातियो ५:२२-२६)।

यह हमें जीवन के प्रत्येक चरण में अपनी आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहने के लिए कोमलता पूर्वक याद दिलाता है। पवित्र आत्मा हमारी सामर्थ का स्रोत है। यदि आपने बल्ब को बिजली से नहीं जोड़ा है तब इसमें प्रकाश नहीं होता है। मेरे और आपके लिए भी यह इसी प्रकार से है। यदि आप प्रार्थना में समय नहीं बिता रहे हैं, अभिप्रायपूर्वक उसकी आत्मा से परिपूर्ण होने का निवेदन नहीं कर रहे हैं, तो हम खाली हाथ रहते हैं और शाश्वत फल धारण करने के योग्य नहीं होते हैं।

प्रेम, आनन्द, शान्ति धीरज, कृपा, भलाई फलदायक होने दयालु, और आत्मनियंत्रण यीशु में और उसकी पवित्र आत्मा की सामर्थ में मिलता है। हममे से प्रत्येक के लिए उसका उपहार उसकी सदा रहने वाली उपस्थिति है। प्रार्थना अति महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवनदायक है।

हमारी पहली प्राथमिकता यीशु के साथ समय बिताना होना चाहिए। उसके वचन में समय व्यतीत करना और प्रार्थना में समय बिताना, पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर, और पवित्र आत्मा परमेश्वर पर हमारी निर्भरता को दर्शाता है।

प्रश्नः

उपरोक्त गद्यांशों में से किसने आपके हृदय से बात की है और क्यों?

उन तीन प्रतिज्ञाओं को बतायें जो यीशु ने अपने शिष्यों से की थी?

क्या बात हमें शाश्वत फल धारण करने के योग्य बनाती है।

आप कब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं, इससे आपको कैसा लगता है?

वह कौन सी एक बात हम कर सकते हैं जिससे आश्वासित हों कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है?

दिन 5 ~ निर्भरता

झिंर्थ्झन्झ त्थ्झझ व्यळझथ्श्रक च्श्रण्झ

हे पिता तू जो स्वर्ग में है मैं आपका धन्यवाद और स्तुति करती हूं कि आपने मुझसे बिना शर्त प्रेम किया है। लम्बे समय तक दुख उठाने, धीरज रखने, और कृपा करने के लिए आपका धन्यवाद। मैं आपका धन्यवाद करती हूँ जब मैं भटक जाती हूँ आप तब भी मेरे साथ है और कोमलतापूर्वक मुझे वापस घर लाते हैं। आपके पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा आप पर पूर्णतया निर्भर रहने के लिए मेरी सहायता करें। मेरे शान्तिदाता, शिक्षक और पथप्रदर्शक के रूप में मेरी अगुवाई करें। मेरे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मेरा मार्गदर्शन करें आपकी इच्छा की पूर्ति करने वाली और प्रतिदिन आप का अनुसरण करने वाली स्त्री मुझे बनाये। मुझमें सिद्धतापूर्वक वास करें जिससे कि अपनी महिमा के लिए आप मुझे सामर्थपूर्वक उपयोग कर सकें।

यह प्रार्थना मैं यीशु के नाम से माँगती हूँ, आमीन।

व्यवहारिक चरणः

☐ निर्भर रहने में आपको क्या बात आकर्षित करती हैं?

☐ अपने दैनिक जीवन में आप इसे कैसे लागू करेंगी?

☐ किसके साथ आप इस सच्चाई की सहभागिता करेंगी?

अध्याय 8

प्रभाव

दिन 1 ~ प्रभाव

स्बै वथ्व्व ल्झैग्झै। वै थिं सैव्क्झर्ठ क्श्रन्झ

प्रभाव : वह सामर्थ अथवा क्षमता जिससे कि अप्रत्यक्ष अथवा अदृश्य तरीकों से एक परिणाम प्राप्त हो

याद करने के लिए पदः
उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में हैं बढाई करें। (मती ५:१६)

प्रार्थनाः

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययनः

जब आप इस अध्ययन को आरंभ करते हैं तब ध्यानपूर्वक प्रभाव की परिभाषा को पढ़ें, यहाँ दी गई प्रार्थना करें और अपने स्मरण पद को दोहराए।

यह मेरी प्रिय मित्र अनुजा की गवाही है जिससे मैं एशिया में रहते समय मिली थी। दशको से उनकी सेवकाई को देखना हमारे लिए एक आशीष है।

टन्फज्झ क्भ क्ळझन्भ :

मैंने कैम्पस क्रूसेड के साथ 15 से अधिक वर्षों तक कार्य किया था। मैंने समाज पर प्रभाव डालने वाले लोगों को शिष्य बनाया था। परंतु नई दिल्ली की एक झोपड़पट्टी में जाने के बाद मैने जाना कि यीशु मुझे इन वंचित लोगों के प्रति सेवकाई करने के लिए बुला रहा था।

मैंने झोपड़पट्टीयों में जाना आरंभ किया और स्वंय इन बेघर लोगों से मिली। वहाँ बच्चे कूड़ों के ढेरों पर खेल रहे थे और उनके पास भोजन, कपड़े तथा कोई आशा नहीं थी। उनके लिए तो यह केवल उनकी दुर्भाग्यपूर्ण नियति थी।

मेरा हृदय टूट गया और मैंने परमेश्वर से प्रार्थना करना और पूछना आरम्भ किया कि मैं बिना संसाधनों अथवा निपुणता के कैसे उनके जीवनो को बदल सकती थी। जब हम प्रार्थना कर रहे थे तब परमेश्वर ने हमें कूड़ा बीनने वालों के बच्चों के साथ काम करने का दर्शन दिया। हमने झोपड़पट्टी में एक छोटा कमरा किराए पर लिया और 15 बच्चों में अपनी सेवकाई आरम्भ की। हमने उन्हें साफ–सफाई सिखाई, उन्हें पोषक भोजन, चिकित्सीय सहायता और प्राथमिक शिक्षा दो वर्षों तक प्रदान की।

कुछ समय के पश्चात हमने उनकी सहायता करना आरम्भ किया, कि वे अपने उचित कागज. ात बनवाकर सरकारी स्कूलों में प्रवेश लें। उसी समय हमने पूरे उत्तरी भारत में ट्यूशन सेंटर भी आरम्भ कियें। आज हमारे पास 130 ऐसे केंद्र हैं जहाँ 4000 से अधिक बच्चे दो घंटे के लिए आते हैं कि वह एक अच्छी शिक्षा पा सकें और परमेश्वर के प्रेम को अनुभव करें।

शायद हममें से प्रत्येक को एक लम्बी अवधि का ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने का अवसर हमारे देश में ना मिल पाए, परन्तु विचार करें कि परमेश्वर आपको अपने समुदाय में क्या करने के लिए बुला रहा है? अभिप्रायपूर्वक परमेश्वर से निवेदन करें और उसकी प्रतिक्रिया को सुनें।

मुझे यह प्रार्थना अति प्रिय है जो ''दा बुक ऑफ कॉमन प्रेयर एअकॉर्डिंग टू द यूज इन किंग्स चैपल'' 1986 के 9वे संस्करण से ली गई है

परमेश्वर मेरी समझ और सोच में हो;
परमेश्वर मेरी आंखों और दृष्टि में हो;
परमेश्वर मेरे मुख और मेरी बातचीत में हो;
परमेश्वर मेरे ह्रदय और मेरी सोच में हो;
परमेश्वर मेरे अंत और अंतिम समय में हो;

प्रश्न:
आपने अनुजा की कहानी से क्या सीखा है?

अपने जीवन के किन क्षेत्रों में आप परमेश्वर को अधिक कार्यरत देखना चाहती हैं?

अपने समुदाय में क्या करने के लिए परमेश्वर आपको बुला सकता है?

अनुजा ने जब झोपड़पट्टी मे देखा तो परमेश्वर उसकी दृष्टि में था और उसने वह देखा जो यीशु ने देखा था। परमेश्वर अनुजा के वार्तालाप था जब उसने कलीसियाई अगुवों और दान देने वालों के साथ अपने इस दर्शन की सहभागिता की थी। जब उसने योजनायें बनाई थी, शिक्षकों को नियुक्त किया था और अनौपचारिक शिक्षा केंद्र बनायें थे जिससे कि इन बेघरों की सहायता करें, तब परमेश्वर उसके ह्रदय और उसकी सोच में था।

परमेश्वर ने वचन दिया हैं कि वह हमारे साथ और हमारे लिए है। और जब हम उसकी इच्छा को पूरा करने का प्रयास करते हैं तब वह हमारा मार्गदर्शन करता है।

अपने मार्ग की चिंता यहोवा पर छोड़ और उस पर भरोसा रख वही पूरा करेगा। और वह तेरा धर्म ज्योति के नाई और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले की नाई प्रगट करेगा। (भजन ३७:५-६)

दिन 2 - प्रभाव

भजन १४६:५-१०

मनन:

जब आप भजन 146:5–10 पढ़ते हैं तब परमेश्वर से मांगे कि वह आपके प्रतिदिन के जीवन में सेवकाई करने के प्रति तरीकों को दर्शाये। यह सामूहिक भोजन बनाने में लोगों को कपडे देने में अथवा गर्भवती महिलाओं को एक स्वास्थ्य केंद्र में सहायता करना हो सकता है। यह कलीसिया में बच्चों की सेवकाई में अथवा वंचित बच्चों को पढ़ाना हो सकता है। शायद यह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जो यीशु को नहीं जानता है सुसमाचार की सहभागिता हो सकता है। परमेश्वर जो कुछ आपको करने के लिए कहता है उसके लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया करें। संभवतः आप सोच सकती हैं इसके लिए आवश्यक कुशलतायें अथवा अनुभव आपके पास नहीं हैं– यह बहुधा उन लोगों के साथ होता है जिन्हें परमेश्वर सेवा करने के लिए बुलाता है। वह आपका पथ प्रदर्शन करेगा। वह बहुधा आपको आपके आरामदेह वातावरण से बाहर निकालेगा क्योंकि वह चाहता है कि आप उस पर भरोसा करें। वह चाहता है कि आपका पूरा आश्वासन एकमात्र उसमें हो। और वह सारी महिमा ग्रहण करना चाहता है। आपमें और आपके द्वारा उसे महिमा मिलने दे!

भजन 146:5–10

> क्या ही धन्य वह है, जिसका सहायक याकूब का ईश्वर है, और जिसका भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है।
> वह आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उन में जो कुछ है, सब का कर्ता है और वह अपना वचन सदा के लिये पूरा करता रहेगा।
> वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता है और भूखों को रोटी देता है। यहोवा बन्धुओं को छुड़ाता है।
> यहोवा अन्धों को आंखें देता है। यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता हैय यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है।
> यहोवा परदेशियों की रक्षा करता है और अनाथों और विधवा को तो सम्भालता है परन्तु दुष्टों के मार्ग को टेढा मेढ़ा करता है।
> हे सिय्योन, यहोवा सदा के लिये, तेरा परमेश्वर पीढ़ी पीढ़ी राज्य करता रहेगा। याह की स्तुति करो!

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - Influence

स्तुतिगान

मनन:

यह गीत एक प्रार्थना है जहाँ हम यीशु से निवेदन करते हैं कि हमारे प्रत्येक भाग को अपने अधीन करें– हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जिससे कि उसके शास्वत उद्देश्य पूरे हों। चाहे यह आपके हाथ हैं, आपके पाँव हैं, आपकी आवाज है अथवा आपकी भौतिक सम्पत्तियाँ हो, जब हम पूरी तरह से उन्हें

यीशु को समर्पित करते हैं, तब उसका प्रेम हमें विवश करता है कि जो हमारे मध्य में है उनकी सेवा करें, और हमें यह उसकी सामर्थ् में हो कर उसकी महिमा के लिये करना हैं।

चाहे आप इन शब्दों को पढें अथवा उन पर मनन करें, रिकॉर्डिंग के साथ इसे गाये अथवा आराध ाना पूर्वक संगति के प्रति नाचे, मेरी प्रार्थना है कि आपका हृदय प्रफुल्लित हो और आपके प्राण भरपुरी का आनंद लें।

टैक म्झठ ल्झठफ ए।ड लै्ट ठट ब्,1874, फ्झन्सै- टझश्र0 ळैव्श्रग्झल

मेरा जीवन ले लो और इसे पवित्र होने दो
हे यहोवा अपने लिए, मेरे हाथ ले लो और इन्हें अपने प्रेम के आवेग में चलने दो।
मेरे पैर ले लो और उन्हें तुम्हारे लिए तेज और सुन्दर होने दो।
मेरी आवाज ले लो और मुझे हमेशा, केवल मेरे राजा के लिए गाने दो।
मेरे होठों को ले लो और उन्हें तुम्हारे लिए संदेशों से भर दो।
मेरी चाँदी और मेरा सोना ले लो, मैं एक सिक्का भी नहीं रखना चाहूँगा।
मेरे प्रेम को लो, हे मेरे परमेश्वर मैं तेरे चरणों में उसका खजाना उड़ेलता हूँ।
मुझे ले लो और मैं हमेशा केवल सब तुम्हारे लिए रहूँगा।

दिन 4 ~ प्रभाव

ग्ळश्रझर्ठ रै ज्झन्झ

अध्ययन:

जैसा कि अनुजा की कहानी सुंदरतापूर्वक दर्शाती है, कि हमारे पास अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह, सत्य और न्याय के उपकरण बनने के अनेक अवसर आते हैं। यीशु के शिष्य के रूप में इस संसार में एक सुनिश्चित जिम्मेदारी है। कलीसिया के भीतर भी यौन उत्पीड़न और प्रोनोग्राफी का विस्तृत उपयोग होता है। पूरे विश्व में जाति, लिंग अथवा सामाजिक आर्थिक विषमता के कारण सामाजिक अन्याय व्याप्त है। विश्व में बच्चों की लगभग आधी आबादी गरीबों में रहती है। यह सब ऐसी बुराइया और दुखद दृश्य हैं जिन्होंने हमारे विश्व को अंधकारमय बना दिया है। उन लोगों के लिये जो आगे आकर बोल नहीं सकते हैं हमें उनकी आवाज बनना है, जिसके लिये हमें चुना गया है और बाध्य किया गया है कि प्रभु के अतुल्यनीय उदाहरण के द्वारा ऐसा आदर्श प्रस्तुत करें।

"गूंगे के लिये अपना मुंह खोल और सब अनाथों का न्याय उचित रीति से किया कर अपना मुहं खोल और धर्म से न्याय करे, और दीन दरिद्रों का न्याय कर" (नीति वचन ३१:८-९)

यीशु की सेवकाई समाज के दबे कुचले और वंचित लोगों पर केंद्रित थी। उसने वंचित, बीमार, अनाथ, अशुद्ध जाति बहिष्कृत लोगों के प्रति सेवकाई की थी। उसने स्त्रियों और बच्चों को सम्मान दिया था जबकि इन दोनों वर्गों को नीचा देखा जाता था और उन्हें महत्व नहीं दिया जाता था। यीशु ने प्रतिदिन न्याय कर ने का आदर्श अपनी प्रतिदिन की सेवकाई में रखा था और इसके द्वारा हमें प्रेरित होना चाहिए कि जो कष्ट में है, जो अजन्मे बच्चे हैं जो पीडित है और जो यीशु को नहीं जानते हैं ऐसे लोगों की सहायता करनें के प्रति स्वयं को समर्पित करें।

आप सम्भवतः यह पूछ सकती हैं, "मैं कैसे सहायता कर सकती हूँ?" इसके लिए प्रार्थना करें, करुणा दर्शायें सुसमाचार की सहभागिता करें। चाहे आपको केवल एक व्यक्ति को ही प्रभावित करने का अवसर क्यों ना मिले वहाँ यीशु का प्रेम प्रभावकारी होगा।

जब आप अभिप्राय पूर्वक परमेश्वर से ऐसे अवसर प्रदान करने का निवेदन करती हैं कि जब आप उसके अनुग्रह, सत्य और न्याय के सन्देशवाहक हो तब उस पर विश्वास करें कि वह अनापेक्षित द्व ारों को खोलेगा और आपको इसके योग्य बनायेगा की उनसे गुजर सके। साहस रखे। निर्भय बने।

इस क्षण आपको शायद कोई अनुमान नहीं हो कि किसी भी परिस्थिति में परमेश्वर आपको कैसे उपयोग कर सकता है और करेगा। हो सकता है कि आपके व्यवसाय का, न्याय के मुददें से कोई सम्बंध नहीं हो। हो सकता है कि आप सेवकाई में अथवा बिना लाभ वाली संस्था में कार्यरत में नहीं हों। न्याय, बिना लाभ वाले काम से कहीं बड़ा है। न्याय, आपको बताता है कि आपको सुसमाचार की सहभागिता के द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति की चिंता करनी है जो परमेश्वर रहित अनन्तकाल की ओर बढ़ रहा है। न्याय, अभिप्रायपूर्वक आपके आस–पास के उन लोगों के लिए, उनका नाम लेकर प्रार्थना करना है, जो यीशु को नहीं जानते हैं, यह उन लोगो के स्थान पर निवेदन करता हैं। जैसा कि यीशु ने किया था वैसे ही न्याय, अगली पीढी को, भटके हुए लोगों की चिंता करने के लिए तैयार करना न्याय है।

लुका के अध्याय ४ में आप पाते हैं कि यहूदी आराधनालय में यीशु अगुवों के सामने यशायाह अध्याय ६१ पढ रहा है-:

यह पढ़ने के बद उसने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दी और बैठ गया और घोशणा की कि आज ही यह लेख तुम्हारे समाने पूरा हुआ है।

यीशु मसीह यशायाह 61 की पूर्ति था। इस पृथ्वी पर अपनी सेवकाई में, यीशु बीमारों को, अन्धों को, चंगाई दे रहा था, दबे कुचलो हुओं को छुडा रहा था। दोषी और बन्दियों के प्रति सेवकाई कर रहा था, और आशारहित लोगों को आशा प्रदान कर रहा था। वह जीवन और ज्योति के अपने सन्देश को उन सब लोगों के पास लाया था जिनसे वह मिला था।

प्रश्नः
अपने जीवन में कब आप अपनापेक्षित न्याय अथवा अनुग्रह के पात्र बने हैं? उस समय आपको कैसा लगा था?

जब आपने किसी अन्य व्यक्ति के प्रति यह अनापेक्षित न्याय अथवा अनुग्रह दिखाया था उन्हें कैसा लगा था?

वर्तमान समय में जब आपने किसी व्यक्ति के साथ यीशु के आशा प्रदान करने वाले सन्देश की सहभ. ागिता की थी तो अपने अनुभव को बतायें। उस व्यक्ति की क्या प्रतिक्रिया थी?

ॅइस वार्तालाप को किस बात ने प्रभावकारी बनाया था अथवा नही बनाया था और उससे अपने क्या सीखा था?

दिन 5 - प्रभाव

झिंर्थ्झन्झ टझैश्र व्यव्ळझथ्श्रक च्श्रण्झ

हे पिता तू जो स्वर्ग में है, मेरी हार्दिक इच्छा और प्रार्थना है कि मैं आपके अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनू। मुझे वह दृष्टि प्रदान करें जिससे आप इस संसार को देखते हैं। अपने आस–पास के लोगों के लिए मुझे बोझ दो जो लोग बोल नहीं सकते हैं उनके लिए मैं एक आवाज बनूँ इसका साहस मुझे दों उन लोगों के लिए भी जो हमारे वर्तमान संसार में अन्याय का सामना कर रहे है। आपके अनुग्रहकारी संदेश वाहक के रूप में मुझे उपयोग करने के अवसर के द्वार खोले। मेरे द्वारा क्षमा करे। मेरे द्वारा सेवा करें। सक्रिय होने में मेरी सहायता करें। आपका प्रकाश मुझमें और मेरे द्वारा फैले जिससे कि जो कुछ भी मैं करती और कहती हूँ उसके द्वारा आपको महिमा मिले।

आपके बहुमूल्य नाम मे यह प्रार्थना करती हूँ आमीन।

व्यवहारिक चरणः

☐ क्या बात प्रभाव को आपके लिए आकर्षत बनाती है?

☐ इसे आप अपने दैनिक जीवन में कैसे लागू करेंगी?

☐ इस सच्चाई की सहभागिता आप किसके साथ करेंगी?

अध्याय 9

शिष्यता

दिन 1 - शिष्यता

THE WOMAN AT THE WELL

शिष्य: वह व्यक्ति जो किसी अन्य की शिक्षाओं को ग्रहण करता है और उसे फैलाने में सहायक होता है

प्रार्थना:

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययन:

जब आप इस अध्ययन को आरम्भ करते हैं तब ध्यान से शिष्यता की परिभाषा पढें, दी गई प्रार्थना करें और अपने स्मरण पद को दोहरायें।

मति 28:18– 20 यीशु ने महान आदेश दिया था जो उसकी अंतिम आज्ञा थी उसने घोषणा की थी–:

> *'ीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।*
>
> *इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।*

हम अपने जीवनों में यीशु की अंतिम आज्ञा को एक प्राथमिकता कैसे बनाते हैं? पौलुस इफिसियों। अध्याय 6 में इसका मार्गदर्शन देता है।

> *और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार बिनती किया करो। और मेरे लिये भी, कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए, कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बता सकूं जिस के लिये मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूँ। (इफिसियों ६:१८-१९)*

आज कलीसिया के पास आशा के सुसमाचार के लिए खड़े होने और उसकी सहभागिता करने का सबसे अच्छा अवसर है। हम यह पवित्र आत्मा के द्वारा कर सकते हैं जो हममें निवास करता है। परमेश्वर से अभिप्रायपूर्वक माँगे और प्रार्थना करें कि अन्य लोगों के साथ सहभागिता करने के प्रति अवसर के द्वारों को खोलें। जैसा पौलुस निर्देश देता, प्रार्थना करें कि जब आप सहभागिता करते हैं तब पवित्र आत्मा आपको उचित वचन प्रदान करें और फिर उस व्यक्ति के लिए उसका नाम लेकर प्रार्थना करें। आपको अचरज होगा कि कैसे परमेश्वर प्रकट होता है और आपको तुरन्त आपकी विनती का उत्तर प्राप्त होता है। उसका पवित्र आत्मा आपको सामर्थी बनायेगा। वह आपको उचित वचन देगा। वह आपके द्वारा बोलेगा और आपके द्वारा प्रार्थना करेगा।

याद करने के लिए पद:
Therefore, go and make disciples of all nations, baptizing them in the name of the Father and of the Son and of the Holy Spirit, and teaching them to obey everything I have commanded you. And surely I am with you always, to the very end of the age.
Matthew 28:19-20

संसार के लिए परमेश्वर की इच्छा को याद करें, यह संसार जिससे उसने इतना प्रेम रखा कि इच्छापूर्वक अपने प्राण दे दिए।

ससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं की कोई अपने मित्रों के लिए अपने प्राण दे। (यूहन्ना १५:१३)

प्रभु............... देर नहीं करता जैसा कितने लोग समझते हैं तथा तुम्हारे विषय में धीरज ध ारता है और नहीं चाहता कि कोई नाश हो वरन यह की सबको मन फिराने का अवसर मिले। (पतरस ३:९)

जसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा वरन उसे हम सबके लिए हे दिया वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा? (रोमियो ८:३२)

जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा वे जिन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया वे उसका नाम क्योंकर ले? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें। और प्रचारक बिना क्यों कर सुने? और यदि भेजेन जाए तो क्यों कर प्रचार करें? (रोमियो १०:१३-१४)

यद्यपि हममें से अनेक लोग स्वतंत्र देशों में रहते हैं, पर बहुधा अपने विश्वास की सहभागिता करने से डरते हैं, उन्हें घबराहट होने लगती है। हम इस योग्य क्यों नहीं है इसके लिए अनेक बहाने सोचने लगते हैं, ''मैं कभी सेमीनरी में नहीं गया हूँ..............'' ''मुझे सुसमाचार प्रचार करने का वरदान नहीं मिला है'' ''मैं नहीं जानता हूँ कि मुझे क्या कहना है?'' तब केवल प्रार्थना करें ''प्रभु यीशु............. के साथ प्रेम के अपने संदेश की सहभागिता करने का मुझे अवसर दे। मुझे उचित वचन प्रदान करें जिससे कि मैं बिना भय के आपके सुसमाचार की स्पष्टतापूर्वक सहभागिता कर सकूँ।'' क्या आप सोचते हैं कि यीशु आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा? निश्चित रूप से!

स्वयं से इन प्रश्नों को पूछें: क्या यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप अन्य लोगों के साथ सुसम. ाचार की सहभागिता करें? क्या आप उस पर अवसर के द्वारों को खोलने के प्रति भरोसा करते हैं? क्या आप विश्वास में होकर आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं और उसकी अगुवाई पर विश्वास रखते हैं?

प्उंहपदम लवन ींअम इममद `मदजमदबमक जव कमंजी ूपजी दव ीवचम व ि इमपदह `मज तिममए चंतकवदमक वत तमेबनमकण ल्वन ंतम सवबामक पद ं बमससए ति तिवउ ीवउमण ल्वन ंतम ंसवदमए जमततपपिमकए मगींनेजमक ंदक ूममचपदहण ठनज जीमद ं जवजंस `जतंदहमत मदजमते लवनत सपमिण श्क्वदष्ज इम ंतिंपकण् ंबंउम रनेज वित लवनण् ंउ ीमतम जव `मज लवन तिममण् ंउ ीमतम जव जांम लवनत चमदंसजलण् ंउ ूपससपदह जव कपम वित लवनए जव हपअम उल सपमि `व लवन बंद सपअमए ंदक दवज रनेज सपअम इनज मगचमतपमदबम ंइनदकंदज सपमिण ठमबंनेम ् सवअम लवनए ्ूपसस जांम लवनत चमदंसजल ंदक कपम वित लवनण्श ॅवनसक जीपे `बतपपिबपंस हपजि बवउचमस लवन जव ींतम पज ूपजी ंदलवदम ंदक मअमतलवदम लवन उमजघ

प्रश्नः

क्या कुछ आपको अपने विश्वास की सहभागिता करने से रोकता है?

आप कैसे एक ऐसे वार्तालाप को आरम्भ कर सकते हैं जो आपकी अपने विश्वास की सहभागिता करने में अगुवाई करें?

क्या आप ऐसे दो तीन लोगों के नाम लिख सकते हैं जो आप को विवश करते हों कि उनके साथ अपने विश्वास की सहभागिता करें और आगे के समय ऐसा करने के लिए स्वयं को समर्पित करें?

दिन 2 - शिष्यता

भजन ९६

मनन:

प्रार्थना और सुसमाचार प्रचार एक दूसरे से घनिष्ठतापूर्वक जुड़े हुए हैं। हम एक के बिना दूसरे को पूरा नहीं कर सकते हैं। मैं बहुधा स्वयं एक दुकान में अथवा हमारे घर के काम में सहायक किसी व्यक्ति के साथ एक सुसमाचार केंद्रित बातचीत आरम्भ करने में घबराती हूँ। तब मैं रुक कर तुरन्त यीशु से कहती हूँ कि मुझे साहस और सहभागिता करने के वचन प्रदान करें। बहुत सी बार इसका परिणाम होता है कि मैं स्वयं उनकी एक जरूरी आवश्यकता अथवा चिंता के लिए प्रार्थना कर रही होती हूँ।

परमेश्वर ने हमें आशा का एक सन्देश दिया है, और हमें उससे विनती करनी है कि जिन लोगों से हम मिलते हैं उनके साथ उस आशा की सहभागिता करने की एक तीव्र इच्छा हमें प्रदान करें।

भजन 96 एक सामर्थी भजन है। पहले से कहीं ज्यादा आज के इस तकनीकी दौर में, परमेश्वर को महिमा मिल रही है जब पूरे विश्व में प्रतिदिन उसके उद्धार का प्रचार प्रत्येक जाति, कुल, राष्ट्रों तथा लोगों के प्रति किया जा रहा है। यदि हम चाहे एक ही व्यक्ति के साथ सुसमाचार की सहभागिता करते हैं तो यह बड़े आनन्द की बात होती है। यीशु के अनुयायियों के रूप में यह हमारा सौभाग्य और एक उत्तरदायित्व दोनों है कि उसका अनुसरण करने के लिए अन्य लोगों की अगुवाई करें।

भजन 96

यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा के लिये गाओ!

यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो दिनप्रति दिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो।

अन्य जातियों में उसकी महिमा का, और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।

क्योंकि यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है वह तो सब देवताओं से अधिक भय योग्य है।

क्योंकि देश देश के सब देवता तो मूरतें ही हैं परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है।

उसके चारों और वैभव और ऐश्वर्य है उसके पवित्र स्थान में सामर्थ् और शोभा है।

हे देश देश के कुलों, यहोवा का गुणानुवाद करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ् को मानो!

यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है भेंट ले कर उसके आंगनों में आओ!

पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत करो हे सारी पृथ्वी के लोगों उसके साम्हने कांपते रहो!

जाति जाति में कहो, यहोवा राजा हुआ है! और जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने का नहीं वह

देश देश के लोगों का न्याय सीधाई से करेगा।

आकाश आनन्द करे, और पृथ्वी मगन हो समुद्र और उस में की सब वस्तुएं गरज उठें।

मैदान और जो कुछ उस में है, वह प्रफुल्लित हो उसी समय वन के सारे वृक्ष जयजयकार करेंगे।

यह यहोवा के साम्हने हो, क्योंकि वह आने वाला है। वह पृथ्वी का न्याय करने को आने वाला है, वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा।

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - शिष्यता

स्त्फथ्त्ज्ञन

मननः

सैंडल बैक वर्शिप ने चर्च से बाहर पार्क में जाकर परमेश्वर की महिमा करने का साहसिक कदम उठाया था। मेरी प्रार्थना है कि भटके हुए लोगों तक पहुँचने के लिए परमेश्वर हम में से प्रत्येक को अपना जोश प्रदान करें।

यीशु ने मती २४:१४ में कहा था, ''और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जायेगा।''

चाहे आप इस गीत के शब्दों को पढ़ना चाहें, अथवा उस पर मनन करना चाहें, एक रिकॉर्डिंग के साथ गायें अथवा इसके संगीत के साथ आराधनापूर्वक नाचने लगें, हमारी प्रार्थना है कि आपका हृदय प्रफुल्लित हो और आपके प्राण भरपूरी का अनुभव करें।

ळभ्। टव्श्य ज्ञ्न्ज्ञ ळै,

ग्लानि में पड़े हुए लोगों के लिए,
उसके महान नाम के कारण
हमें अवश्य जाना चाहिए,
हमें अवश्य जाना है
खोए हुए से दोस्ती करने के लिए,
हर कीमत पर शान्ति के वाहक, हमें अवश्य जाना चाहिए,
धरती के हर कोने में जिस दिन तक हमें घर घर बुलाया जाता है,

आशा बने
रोशनी बने
पृथ्वी के छोर तक
पृथ्वी के छोर तक
आवाज बने
प्यार बने
पृथ्वी के छोर तक
पृथ्वी के छोर तक
हमें अवश्य जाना है

दूर और पास दोनों आत्माओं के लिए
उनके लिए वह मरा और जी उठा
हमें अवश्य जाना है धरती के हर कोने में
जिस दिन तक हमें घर बुलाया जाता है
आशा बनो
रोशनी बनो
पृथ्वी के अन्त तक
पृथ्वी के अन्त तक
आवाज बनो
प्यार बनो
पृथ्वी के छोर तक
पृथ्वी के छोर तक
बडे काम अभी बाकी हैं
यीशु के नाम में
यीशु के नाम में
र्स्वग आ तेरी इच्छा पूरी हो
यीशु के नाम में

दिन 4 - शिष्यता

ग्ळश्रइाठ रै ज्ञान्ज्ञ

अध्ययनः

यीशु ने अपनी सेवकाई मे जिस तरह से पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के प्रति सेवकाई की थी वह मुझे अति प्रिय है। उसने यह कहकर इसे आरम्भ नहीं किया था, ''तुम एक पापी हो। पश्चाताप करो यह प्रार्थना करो और तुम बच जाओगे।'' इसके बिल्कुल विपरीत। उसने अर्थपूर्ण प्रश्नों को पूछ कर ला. `गों का ध्यान आकर्षित किया था। उसने उन्हें सुना था। उसने करुणा प्रगट की थी। उसने क्षमा प्रस्तुत की थी और फिर उन्हें उसका अनुसरण करने की चुनौती दी थी। यह हमारे लिए एक सुन्दर नमूना है कि हम भी ऐसे ही करें।

यूहन्ना अध्याय 4 में हमें यीशु और सामरी स्त्री की कहानी मिलती है। यीशु, यहूदिया से यरूशलेम जा रहा था परन्तु उसे समारिया होकर जाना अवश्य था। वह थक गया था और सुस्ताने के लिए याकूब के कुयें के पास बैठ गया। यीशु ने, एक सामरी स्त्री से जो प्रतिदिन वहाँ पानी भरने के लिए आती थी, पानी पिलाने के लिए कहा।

वह स्त्री अचम्भित हुयी, ''तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? क्योंकि यहूदी सामरियो के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते थे।

पद 10 में यीशु उसे उत्तर देना आरम्भ करते हैं ''यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती और वह तुझे जीवन का जल देता।'' उस स्त्री को पहले तो यह बात समझ में नहीं आयी। अतः यीशु ने कहना जारी रखा ''कि जो कोई इस जल में से पियेगा वह फिर प्यासा होगा। परन्तु जो कोई उस जल में से पिएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा। वरन जो जल में उसे दूंगा, वह उसमें से एक सोता बन जायेगा, जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।''

उस स्त्री ने उस से कहा ''हे प्रभु वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ और ना जल भरने के लिए इतनी दूर आऊँ (यूहन्ना 4:15)।

यीशु ने उससे कहा, ''जा अपने पति को यहाँ बुला ला। ''उस स्त्री ने उसे सच्चाई से उत्तर दिया कि वह बिना पति की थी।''' फिर यीशु ने उससे पद 17 में कहा था, ''तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूँ। क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं है, यह तूने सच कहा है।''

अब स्त्री ने यह जान लिया था कि वह एक भविष्यवक्ता है, ''यह मनुष्य कैसे मेरे बारे में यह जानता है?''

यीशु ने आगे कहना जारी रखा, ''तुम सामरी जिसे नहीं जानते हो उसका भजन करते हो, और हम जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें। उस स्त्री ने इस बात का समर्थन किया, मैं जानती हूँ कि मसीही जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आने वाला है जब वह आयेगा, तो हमें सब बातें बता देगा। ''यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुम से बोल रहा हूँ वही हूँ।'' उसके अचम्भे की कल्पना करें। यह कोई साधारण यहूदी पुरुष नहीं था, यह तो स्वयं मसीहा था।

यीशु ने महिलाओं के प्रति समझ, करुणा, और कोमलतापूर्वक सेवकाई की थी। कलीसिया ने प्राय पूर्व और वर्तमान दोनों समय में उनके प्रति जिन्हें एक चिकित्सक की आवश्यकता होती है, जिनके लिए यीशु ने अपने प्राण दिए थे न्याय और तिरस्कार के साथ व्यवहार किया है। जब उसने सच्चाई से उत्तर दिया कि वह पाँच पति कर चुकी थी तब यीशु ने उसे दोषी नहीं ठहराया था अथवा कुछ कम करके नहीं जाना था, उसने उसे अपने से दूर करके यह नहीं कहा था, ''तुम एक पापी हो मैं तुम्हारे साथ संगति नहीं रख सकता हूँ।'' वह जिस दशा में थी उसी दश में यीशु उसे मिला था। उसने उसके साथ आदर के साथ व्यवहार किया था। उस स्त्री ने जब सच्चाई प्रकट की तब सत्य बोलने के लिए यीशु ने उसे प्रशंसा की थी।

जबकि वह समाज बहिष्कृत थी और तब अपना पानी भरने आती थी जब वहाँ कोई नहीं होता था, तब भी यीशु ने उसे तुच्छ नहीं जाना था। उसने उसके हृदय को और उसकी गहरी इच्छा को समझा था। वह जानता था कि वह केवल जल के बजाये कहीं अधिक पाना चाहती थी। वह आशा की लालसा रखती थी और वह स्वीकारे जाने के प्रति प्यासी थी। वह शांति और आत्मिक रूप से वह जीवन जल पाने की आशा रखती थी जो केवल मसीही ही दे सकता था। कुए पर बिताए गए थोड़े से समय ने उसके प्राण को आनन्द से भर दिया था और उसको विवश का किया था कि वह जाकर अन्य लोगों को अपना अनुभव बतायें।

प्रश्नः

इस कहानी में किस बात ने आप को आकर्षित किया था?

यीशु ने जब इतने प्रभावकारी ढंग से इस सामरी स्त्री के प्रति सेवकाई की थी तब उसने किस बात पर ध्यान दिया था?

जो लोग यीशु को नहीं जानते हैं उनके पास यीशु के समान हम कैसे पहुंच सकते हैं?

दिन 5 - शिष्यता

झिंर्थ्झन्झ त्थ्झझ व्यव्ळझथ्श्रक च्श्रण्झ

हे पिता तू जो स्वर्ग में है, मेरे जीवन में आपके अनुग्रह और भलाई के लिए मैं स्तुति और धन्यवाद के साथ आपके सम्मुख आती हूँ। जो लोग विश्वास करते हैं उनके प्रति आपकी शाश्वत प्रतिज्ञाओं के लिए मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। मैं आपका धन्यवाद करती हूँ कि आप मेरे शरणस्थान, मेरा सुदृढ़ गढ़ और मेरे विश्वास योग्य परमेश्वर हैं। मेरे लिए आपके महान और अद्‌भुत प्रेम के लिए आपका ध न्यवाद। मैं विनती करती हूँ मेरे द्वारा आपका प्रेम प्रभावित हो। जिन लोगों से मैं मिलती हूँ उनके साथ साहसपूर्वक आपके प्रेम का संदेश की सहभागिता करूँ, उसके लिए मुझे उपयोग करें। आपको संपूण र् मन से प्रेम करने में यदि मैं कोई बात मुझे रोकती है तो उसे दूर करें और मेरे मन को आपसे अलग हटने से बचायें। आपकी सिद्ध इच्छा में जीवन जीने के लिए मेरा मार्गदर्शन करें। मुझे ऐसे शब्द दें कि आपकी कृपा और आशा के उपहार के बारे में मैं बता सकूँ। मैं सभी जातियों को आपके पास लाती हूँ और आपसे विनती करती हूँ कि उन तक आपका सुसमाचार पहुँचाने के लिए सच्चे संदेशवाहकों को खड़ा करें। मैं प्रार्थना करती हूँ की सभी देशों में आप की महिमा प्रगट हो। मेरी विनती है कि हर एक बच्चा, बच्ची, पुरुष और महिला को यीशु की कहानी सुनने का अवसर मिले जिससे कि वह आपके दिए गए उपहार को ग्रहण करें और हमेशा के लिए उनका जीवन बदल जाए।

यह प्रार्थना मैं यीशु के नाम से मांगती हूँ। आमीन।

व्यवहारिक चरणः

☐ शिष्यता को क्या बात आपके लिए आकर्षक बनाती हैं?

☐ दैनिक जीवन में इसे कैसे लागू करेंगे?

☐ इस सच्चाई की सहभागिता आप किसके साथ करेंगे?

अध्याय 10

अधिकार

दिन 1 ~ अधिकार

ल्ळॅ ब्ळैन्न क्भ स्म्स्यज्ञ रै र्गस्त स्त्रभ

परिभाषा : किसी के विचार, अभिमत, अन्यथा व्यवहार को प्रभावित करने अथवा आदेशित करने के प्रति सामर्थ।

याद करने के लिए पदः
Therefore God exalted him to the highest place and gave him the name that is above every name, that at the name of Jesus every knee should bow, in heaven and on earth and under the earth, and every tongue acknowledge that Jesus Christ is Lord, to the glory of God the Father (Philippians 2:8-9).

प्रार्थनाः

हे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
मुझसे प्रेम करने और मुझे अपनी संतान बनाने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें कि मैं अपने पूरे मन के साथ आपसे प्रेम करूँ।
मेरी सहायता करें कि मैं दूसरों से वैसा ही प्रेम करूं जैसा प्रेम आपने मुझसे किया है।
मेरे पापों को धोने के लिए और मुझे शुद्ध करने के लिए आपका धन्यवाद।
मेरी सहायता करें जैसी भी परिस्थिति में हूँ सदैव आप में आनंदित रहूँ।
अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मैं आपके पीछे चलना चाहती हूँ।
अपने पवित्र आत्मा से मुझे परिपूर्ण करें। मुझे एक ऐसी महिला बनाएं जो आपकी इच्छा पूरी करें।
मुझे अपने अनुग्रह, सत्य और न्याय का एक उपकरण बनायें।
अपनी महिमा और दूसरों के प्रति आशीष होने के लिए मेरा उपयोग करें।
हे अनुग्रहकारी पिता मै यह प्रार्थना अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर माँगती हूँ, आमीन।

अध्ययनः

जब आप अध्ययन आरम्भ करते हैं तब ध्यानपूर्वक निर्भरता की परिभाषा को पढ़ें, यहाँ दी गई प्रार्थना करें और अपने स्मरण पद को दोहरायें।

जब आप परमेश्वर के बारे में सोचते हैं तब आपकी सोच में अधिकार शब्द का क्या अर्थ होता है? परमेश्वर के इन गुणों के बारे में विचार करें :

- कैसे उसके बोलने से संसार बना (उत्पत्ति,1 यशायाह 40:28)
- उसका सर्वज्ञानी होना। (भजन 139:1—4 यशा 46:9—10, मती 10:30)
- उसका सर्वव्यापी होना। (भजन114:7, मती 18:20, कुलुस्यिो1:17)
- उसका सर्वसामर्थी होना। (लुका1:27 मती 19:26)

इन पर उसके अधिकार के बारे में विचार करें—:

- मृत्यु (यूहन्ना 11:24—25,38—44, प्रेरितो26:8 प्रकाशितवाक्य 1:18)
- बीमारी (मत्ती 4:23, लूका 8:43—48, लूका 17:11—19)
- शैतान (मती 4:1—11, लूका 10:19)

परमेश्वर कौन है उसका अधिकार, उसकी सामर्थ और उसकी महिमा को जानने वाली एक प्रिय बहन की कहानी इसकी एक महिमामय घोषणा और समीक्षा हैः

एक थ्म्त्र क्भ क्ळज्ञन्भ

जब कभी मैं अधिकार शब्द सुनती थी तब मुझे गुस्सा आता था। अगर पूरी तरह से बताऊँ तो परमेश्वर के साथ अपने जीवन के बिताए गए प्रत्येक सत्र में मैं अधिकार वाले पक्ष से संघर्ष करती रही हूँ। मैं सदैव से एक दबंग, मजबूत निश्चित विचार रखने वाली जोशभरी महिला रही हूँ जिसे जोखिम उठाना नए लोगों से मिलना और जितना भी सम्भव हो वह सीखते रहना मुझे अच्छा लगता है। मैं स्वयं को और कभी—कभी अन्य लोगों को भी नियंत्रित करना पसन्द करती हूँ।

मैंने युवा अवस्था में यीशु को जाना था और एक ऐसी कलीसिया में जाती थी जहाँ बच्चों तक को वचन को पढ़ने, उसका अध्ययन करने और उस पर मनन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। जब मैं केवल 10 वर्ष की थी तब भी मेरे पास रायरी अध्ययन बाइबल थी। मैंने उस परमेश्वर के बारे में सब कुछ पढा था जो मूसा से मिलने के लिए एक आग से प्रजज्वलित पर्वत पर आया था। जिससे कि अपने चुने हुए लोगों के साथ एक सदा की वाचा निर्धारित करें। मैंने भविष्यवक्ताओं के बारे में पढ़ा था। जिन्होंने व्यक्तिगत जीवन को त्याग दिया था जब उन्हें पवित्र परमेश्वर की सेवा करने के लिए जीवित गवाहियाँ और प्रतीक होने की बुलाहट मिली थी। उनके जीवन जीने का तरीका बदल गया था जब उन्होंने स्वयं को नग्न, घृणा का पात्र, जेल और बंदी, व्यभिचारिणी स्त्री से विवाहित देखा था और अपने को रेगिस्तानों, गुफाओं और विधवाओं के घर में रहते हुए पाया था। मैंने देखा था कि यीशु ने कैसे पुराने नियम की हर एक बात को पूरा किया था और अपने बोले गए प्रतीक वचन के द्वारा उन्हें वास्तव में नए नियम में लाया था। परमेश्वर की महिमा और उसके यथार्थ प्रतिनिधित्व को यीशु ने प्रगट किया था जहाँ उसने अपनी वचन की सामर्थ के द्वारा स्वभाव को दर्शाया था। मैं परमेश्वर से प्रेम करती थी और गहराई से इस बात को जानती थी कि सच्चाईपूर्वक पूरी तरह से और निश्चित रूप से उसके अनुसरण करने का अभिप्राय, संपूर्ण त्याग है। परमेश्वर अपनी पवित्रता के कारण डराने वाला, अपनी महिमा में सुंदर और अपनी सामर्थ में अद्भुत है। उसका अधिकार सुनिश्चित, असीमित और अतुलनीय है फिर भी जब उसने अपने अधिकार में मुझे बुलाया तो मुझे अच्छा नहीं लगा। यह सामान्य, और अचंभित करने वाला नहीं था, परंतु उस परमप्रधान से डरने और उसके सर्वसामर्थी होने के कारण था। क्या वास्तव मैं यह विश्वास करती थी कि क्या वह वही है जो वह स्वयं के बारे में कहता है? क्या मैं वास्तव में मानती हूँ कि क्या मैं वह हूं जो वह कहता है?

जब मैं महिमामय सर्वसत्ता संपन्न इस विश्व के परमेश्वर को देखती हूँ जो संसार की सृष्टि के पहले से मुझे जानता है– जिसने मुझे मेरी मां के गर्भ में रचा था, जिसने अपने वचन से इस संसार को रचा था, जो सदैव से था, और है और सदैव रहेगा, वह जिसने आकाश के तारामंडल को सजा और उनमें से प्रत्येक को उनका नाम लेकर बुलाया, जो बोलते समय गजरता है और बादलों के रथों पर सवार होता है, जो इस पृथ्वी पर आया और अनंत काल के लिए एक मनुष्य का रूप लिया जिससे कि मुझे मेरे उस प्रत्येक पाप से बचाये जो मैं अपने जन्म लेने से पहले करूँगी तब उसकी महिमा की मैं कल्पना भी नहीं कर सकती हूँ। यह परमेश्वर व उस पृथ्वी पर आया जहाँ में रहती हूँ जिसने भोजन किया, सोया और एक कमजोर और जिसने कोमल शिशु के रूप में जन्म लिया था जोकि उसकी दीनता को स्पष्ट रूप से दर्शाता था। इसी परमेश्वर, इसी मनुष्य ने उन्हीं लोगों के हाथ एक क्रूर मृत्यु सही जिन्हें वह बचाने आया! वह पापरहित, त्यागा हुआ, मारा कूटा गया, और एक क्रूस पर उसे कीलो से ठोककर लटका दिया गया था यह मनुष्य का पुत्र जिसकी अंतिम सांस ने परमेश्वर और मेरे बीच पर्दे को हमेशा के लिए फाड़ दिया था और मुझे उस तक पहुंचने का एक पूर्ण और प्रत्यक्ष पहुँच प्रदान की थी। जब मैं इस मनुष्य को देखती हूँ तब मैं उनके आभार में रोती और काँपती हूँ। और मैं यह पहचान लेती हूँ कि उसके अधिकार के द्वारा प्रत्येक बार में ''हॉ'' कहूँगी। और उसके अधिकार में होकर मैं दुष्टआत्माओं को निकालूँगी, बीमारों को चंगा करूँगी, और गरीबों को भोजन दूँगी। उसके लिए मैं जाऊँगी। मैं अपना घर त्याग दूँगी, मैं अपना परिवार त्याग दूँगी, और मैं पृथ्वी के छोर तक जाऊँगी जिससे कि मैं उस परमेश्वर की जिसने स्वर्ग को त्याग दिया था। उसकी अचंभित करने वाली कृपा, उसकी भलाई, तथा उसके हृदय के बारे में सबको बताऊँ– जो हमें बचाने के लिए आया है। मैं जाऊँगी, जब तक हर जगह, प्रत्येक इस अद्भुत और महिमा में शुभ समाचार को नहीं सुन लेते हैं।

जब उसने मुझे बुलाया था तो उसने मुझे सब कुछ अपना सौंपने को कहा था। उसका अधिकार संपूर्ण त्याग और प्रतिबद्धता की माँग करता है और उसका प्रेम भरा अनुग्रह, उसका बलिदान, उसकी सुन्दरता और उसकी कृपा यह सुनिश्चित करती है कि वह इस के योग्य है। और जब मैं अपना जीवन उसमें होकर उसे देती हूँ– तो वास्तव में मैं इसे पाती हूँ (मती 10:39)। वह मुझे अपनी भलाई प्रदान करता है वह अपना अधिकार मुझे देता है। जब मैं उसमें, उसके द्वारा, उससे और उसके लिए सक्रिय होती हूँ तब वह पहाड़ों को हटा देता है और मृतकों को जीवित कर देता है। वह अपनी प्रत्येक प्रतिज्ञा और मेरे मन की प्रत्येक इच्छा को पूरा करता है– उन इच्छाओं को भी जिन्हें मैं नहीं जानती हूँ। उसका अधिकार वास्तव में मेरे हृदय को बदल देता है।

जब यह मनुष्य बुलाता है तब संभवतः हमारा उत्तर क्या होगा हाँ! हाँ! हाँ! ओ यीशु मेरे यीशु हाँ।'' और इस तंरह हमारा साहसिक अभियान आरम्भ होता है।

प्रश्नः

जब आप अधिकार के बारे में सोचते हैं तब आपके मन में कौन सी भावना उत्पन्न होती है?

आपके प्रति परमेश्वर के अधिकार का क्या अभिप्राय है?

अपने जीवन में परमेश्वर के अधिकार के अधीन होना कहाँ आपको चुनौतीपूर्ण लगता है?

ˇपरमेश्वर के अधिकार के प्रति आप तब कैसे आधीन हुए हैं जब यह आपकी इच्छा के विरुद्ध हो?

जब आपके अधिकार पर प्रश्न चिन्ह लगा था अथवा उसका पालन नहीं किया गया था इसका एक उदाहरण दे और बतायें कि तब आपको कैसा लगा था?

Think of an example and how you felt when your authority was questioned or not followed.

दिन 2 ~ अधिकार

भ्ज्ञज्न १३६

मननः

जब इस गवाही की इतनी भावपूर्ण ढंग से सहभागिता की गई, वही भजन 139 अपने पाठकों को एक अत्यंत व्यक्तिगत ढंग से परमेश्वर के अधिकार–उसकी सर्वव्यापकता और सर्वव्यापी होने को बताता है। हमारा सृष्टिकर्ता जो सर्वसामर्थी और सर्वज्ञानी है वह हमसे अधिक अच्छी तरीके से हमें घनिष्ठ रूप से जानता है क्योंकि उसने हमें आंशिक रूप से हमारी माता के गर्भ में रचा था।

इस भजन में परमेश्वर अपने मन में दाऊद के लिए जो आनन्द रखता था यहाँ दाऊद को उसका प्रकाशन मिला था। जब परमेश्वर हमारे बारे में सोचता है और हमारे लिए जो योजनाएँ रखता है तब उसका मन हममें से प्रत्येक के लिए आनन्द से परिपूर्ण होता है। हमारा उद्देश्य हमारे पिता परमेश्वर को आनंद देना होना चाहिए, और जब हम जीवन जीते हैं तो हमें उसके अधिकार में रहना और सक्रिय होना है। वह हमें अपने आनंद से परिपूर्ण करता है जब आप इस भजन को पढ़ते हैं तो आप अपने जीवन में उसकी उपस्थिति, सामर्थ और अधिकार के प्रति आश्वासित होना है। इस भजन की सहभ. ागिता अन्य लोगों के साथ करें। इसे अपने बच्चों को पढ़कर सुनायें। यह उन्हें आश्वासित करेगा और इस समझ से कि परमेश्वर सदैव उनके साथ है बड़ी शांति प्रदान करेगा।

''यदि मैं आकाश पर चढूँ तो तू वहाँ है यदि मैं अपना विछौना अधिलोक में विछाऊँ तो वहाँ भी तू है...................... यदि मैं कहूँ कि अंधकार में तो मैं छुप जाऊँगा और मेरे चारों ओर का उजाला रात का अंधेरा हो जाएगा तो भी अंधकार तुझसे ना छिपाएगा रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी। क्योंकि तेरे लिए अंधियारा और उजाला दोनों एक समान है।''

ैश्रभ ड्ढिंर्थ्झन्ड्ढ ळै थ्ऌ प्श्रैम्श्व्श्र क्ज्ञ किंड्ढश्ज्ञ टज्ञप्क्ड्ढै श्ज्ञफद्ध क्श्रै। टङ्ढैश्र टन्न्त वै म्ड्ढर्ग ै। टज्ञप्कभ टग्व्ज्ञर्ठ क्श्रै।।

हे यहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है।
तू मेरा उठना बैठना जानता है और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।
मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।
हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो।
तू ने मुझे आगे पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है।
यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है।
मैं तेरे आत्मा से भाग कर किधर जाऊं? वा तेरे साम्हने से किधर भागूं?
यदि मैं आकाश पर चढूं, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है!
यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़ कर समुद्र के पार जा बसूं,
तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।
यदि मैं कहूं कि अन्धकार में तो मैं छिप जाऊंगा, और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अन्धेरा हो जाएगा,
तौभी अन्धकार तुझ से न छिपाएगा, रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी क्योंकि तेरे लिये अन्धियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं।
मेरे मन का स्वामी तो तू है तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा।
मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं।
जब मैं गुप्त में बनाया जाता, और पृथ्वी के नीचे स्थानों में रचा जाता था, तब मेरी हड्डियां तुझ से

छिपी न थीं।
तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहिले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।
और मेरे लिये तो हे ईश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है।
यदि मैं उन को गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हूं, तब भी तेरे संग रहता हूं।
हे ईश्वर निश्चय तू दुष्ट को घात करेगा! हे हत्यारों, मुझ से दूर हो जाओ।
क्योंकि वे तेरी चर्चा चतुराई से करते हैं तेरे द्रोही तेरा नाम झूठी बात पर लेते हैं।
हे यहोवा, क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रखूं, और तेरे विरोधियों से रूठ न जाऊं?
हां, मैं उन से पूर्ण बैर रखता हूं मैं उन को अपना शत्रु समझता हूं।
हे ईश्वर, मुझे जांच कर जान ले! मुझे परख कर मेरी चिन्ताओं को जान ले!
और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!

जिस बात ने आपके हृदय को छुआ है, उस लाल रंग से दर्शाएं।
परमेश्वर आपको जो करने के लिए आमंत्रित कर सकता है उसे पीले रंग से दर्षाएं।
परमेष्वर की प्रतिज्ञाओं को नीले रंग से दर्षायें।

दिन 3 - अधिकार

स्फथ ग्ज्ञन

मनन:

यीशु! यीशु! यीशु! ''मेरे होठों पर पहला नाम'' इस गाने में यीशु की ओर हमारे मन के झुकाव को सुन्दरतापूर्वक दर्शाया गया है,

विश्वासयोग्य, सत्य सब नामों में से श्रेष्ठ (फिलिपियो २:९)

सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के और हर एक नाम के ऊपर जाने केवल इस लोक में पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा बैठाया (इफिसियो १:२१)

यीशु! यीशु! यीशु! चंगाई देने वाले। सब कुछ वापस दिलाने वाला। मित्र।

मार्ग, सत्य, जीवन (यूहन्ना १४:६) हमारे प्रभु?

हमारी स्तुति? हमारी प्रशंसा? के योग्य क्या कोई इससे अधिक सुंदर नाम हो सकता है?

चाहे आप इसे पढ़ें इस पर मनन करें, एक रिकॉर्डिंग के साथ इसे गायें अथवा आराधनापूर्वक संगीत के साथ नाचे मेरी प्रार्थना है कि आपका मन प्रफुल्लित हो और आत्मा भरपूरी का अनुभव करें।

ैमजीमत लवन बीववेम जव तमंक ंदक उमकपजंजम वद जीम ूवतकेए ेपदह ंसवदह ूपजी ं तम. बवतकपदहए वत ूवतीपचनिससल कंदबम जव जीम उनेपबए उंल लवनत ैमंतज इम ेजपततमकए ंदक लवनत ेवनस पिससमकण

ऑलवेज जीजस

मेरे होठों पर पहला नाम ,
जिस दोस्त के साथ में बैठ सकता हूँ
मेरे दैनिक अधिवक्ता,
आपके राय की सुरक्षा

आप हमेशा कारण रहेंगे
आप हमेशा पर्याप्त रहेंगे।

यीशु, हमेशा यीशु
यीशु, हमेशा।

मेरे लिए आपके प्यार की गहराई
प्रचंड समुद्र में मेरा लंगर है।
आप बोलते हैं और आप शांति लाते हैं।
आप हमेशा मुझे पकड़े रहते हो।

आप हमेशा कारण रहेंगे।
आप हमेशा पर्याप्त रहेंगे।

मेरे जीवन का अगुवा, द्वार, मार्ग, दाखलता।
हमेशा यीशु आप समय के बाहर हैं
शब्द, सत्य, जीवन
यीशु, हमेशा यीशु।

दिन 4 ~ अधिकार

ग्ळश्रझर्ठ रै ज्ञन्ज्ञ

अध्ययन:

यीशु ने पीड़ितों को चंगा करके बहुधा बीमारी पर अपने अधिकार को प्रकट किया था। मरकुस की पुस्तक में एक ऐसी स्त्री की विचलित करने वाली कहानी मिलती है जिसे लहू बहने का रोग था वह इससे बारह वर्षों से पीड़ित थी। कोई भी इलाज इसे ठीक नहीं कर पाया था। उसने डाक्टरों पर इस आशा में अपना सारा धन खर्च कर दिया था कि वह चंगी हो जाएगी, परंतु चंगाई पाने के लिए बजायें उसकी हालत और खराब होती जा रही थी।

म्श्रक्फर 5:25–34

और एक स्त्री, जिस को बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था।

और जिस ने बहुत वैद्यों से बड़ा दुख उठाया और अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी।

यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू लिया।

क्योंकि वह कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी।

और तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया और उस ने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई।

यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया, कि मुझ में से सामर्थ निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा मेरा वस्त्र किस ने छूआ?

उसके चेलों ने उस से कहा तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है कि किस ने मुझे छुआ?

तब उस ने उसे देखने के लिये जिस ने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की।

तब वह स्त्री यह जानकर, कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर, उस से सब हाल सच सच कह दिया।

उस ने उससे कहा पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।

इस नाम रहित स्त्री ने यीशु के अधिकार को समझ लिया था। मरकुस हमें बताता है कि जब उस स्त्री ने यीशु और चंगाई देने की उसकी सामर्थ के बारे में सुना, तब वह बड़ी भीड़ में पीछे से आयी और यीशु के वस्त्र को उसने केवल स्पर्श किया क्योंकि उसने सोचा ''कि यदि मैं उसके वस्त्र को ही छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी।'' यह स्त्री एक महान विश्वास रखती थी। उसने यीशु के वस्त्र को छूने के लिए अपने हाथ को बढ़ाया था और वह तुरंत चंगी हो गयी। मरकुस लिखता है कि उसका लहू बहना बंद हो गया और उसने अपनी देह में जान लिया कि वह बीमारी से अच्छी हो गयी थी।''

यीशु ने यह जाना कि किसी ने उसे छुआ था क्योंकि यह गंद्याश बताता है, यीशु ने तुरंत अपने में जान लिया कि मुझ में से सामर्थ निकली है। और भीड़ में पीछे फिर कर पूछा, ''मेरा वस्त्र किसने छूआ ?'''' यहाँ शिष्यों का उत्तर सुनकर मुझे हंसी आती है, ''तू देखता है कि भीड तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है कि किसने मुझे छुआ?''

वह स्त्री तुरंत आकर यीशु के पैरों पर गिर गयी। वह भयभीत थी और डर से कांप रही थी उस से सब हाल सच–सच बताया। मुझे यीशु की करुणा से भरी हुयी प्रतिक्रिया बहुत अच्छी लगती है, ''पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल से जा और अपनी बीमारी से बची रह।''

यीशु जो सब नामों में सर्वश्रेष्ठ है, वह जिसे सारा अधिकार दिया गया है, वह हमारा चंगाई दाता, हमारा मुक्तिदाता, हमारा मध्यस्थ, हमारा मित्र है। यीशु ने चंगाई देते समय इस स्त्री को अपनी सामर्थ से भर दिया था। उसने जब उसकी उपस्थिति और उसकी आवश्यकता को जाना तब उसने उसे अपने प्रेम से परिपूर्ण कर दिया था।

जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात जितने उसको सच्चाई से पुकारते हें उन सभों के वह निकट रहता है। वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करता है, ओर उनकी दोहाई सुनकर उनका उद्धार करता है। (भजन १४५:१८-१९)

जब हम यीशु के पास आते हैं, जब हम उसके अधिकार के प्रति स्वयं को समर्पित करते हैं। वह अनुग्रह पूर्वक अपने हाथों को बढ़ाता है, वह हमें अपनी पुत्री कह कर बुलाता है, और वह हमें अपने प्रेम और सामर्थ से भर देता है।

प्रश्नः

मरकुस 5 में दी गयी स्त्री की कहानी का आपके लिए क्या महत्व है?

यीशु की प्रतिक्रिया किस प्रकार उसके चरित्र को प्रगट करती है?

आपके अपने जीवन अथवा अन्य किसी जीवन से जिसे आप जानते हैं, वह कहानी कैसे सम्बन्धित हो सकती है?

यदि यीशु से आपकी भेंट हो सकती थी, तब आप उससे क्या मांगती?

इस समय आप उस पर किस बात के लिए विश्वास कर रहे हैं?

दिन 5 ~ अधिकार

झिंर्थ्झन्झ टझैश्र व्यव्ळझथ्श्रक च्श्रण्झ

हमने परमेश्वर की दो असाधारण महिलाओं से दो सामर्थी गवाहियों को अभी पढ़ा है। एक गवाही वर्तमान समय काल से और दुसरी दो हजार वर्ष पूर्व की है। दो स्त्रियां जो यीशु से प्रेम करती हैं। दो स्त्रियां जिन्हेंने यीशु के अधिकार को स्वीकारा था। दो स्त्रियां जो उसके प्रति पूर्णतया समर्पित थी जिसने उनका नाम लेकर उन्हें बुलाया था कि उद्धार और कहीं नहीं मिल सकता है। क्योंकि आकाश के नीचे मानव जाति को अन्य कोई ऐसा नाम नहीं दिया गया है जिससे हम उद्धार पा सके। हम में से प्रत्येक की उसके अधिकार तक पहुंच हैं। हम में से प्रत्येक के पास बताने के लिए एक कहानी है।

हे पिता तू जो स्वर्ग में है, मैं आपका धन्यवाद और स्तुति करती हूँ, कि स्वंग के नीचे कोई ऐसा नाम नहीं है जिससे हम उद्धार पा सके। मृत्यु पर आपके अधिकार के लिए मुझे जीवन दिया है, आपका धन्यवाद। आपका धन्यवाद करती हूँ, कि आपके अधिकार ने मुझे आपकी प्रिय पुत्री बनाया। यीशु की समानता में चलने के लिए मुझे सामर्थ दी, मुझे अपनी आत्मा के फल से परिपूर्ण किया, और मुझे आमन्त्रित किया है कि आपके साथ अनंतकाल तक शासन और राज्य करूँ।

सर्वसामर्थी परमेश्वर आपका वचन बताता है कि आपने हमें साँप और बिच्छओं को रौदनें और शत्रु की सारी सामर्थ पर विजय पाने का अधिकार दिया है। मेरी सहायता करें कि आपकी सामर्थ् के विस्तार को जानू और स्वयं में और स्वयं के द्वारा आपके अधिकार को पहिचानू।

यह प्रार्थना मै यीशु के नाम से मांगती हूँ। आमीन

व्यवहारिक चरणः

☐ अधिकार में क्या बात आपको आकर्षक लगती है?

☐ अपने स्वयं के जीवन में आप इसे कैसे लागू करेंगी?

☐ इस सत्य की सहभागिता आप किसके साथ करेंगी?

अध्याय 11

निष्कर्ष

निष्कर्ष

म्ज्ञथ्श्रयज्ञ टज्ञैश्र म्ज्ञश्रब्ल्भ् वै द्वज्ञश्रज्ञ

जब आपने इस अध्ययन को पूरा किया है और हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर के अनुग्रह के सिंह. ासन तक पहुँचने के लिए आपके ह्रदय, साहस और आत्मविश्वास से परिपूर्ण हों। ''मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा, कभी नहीं त्यागूँगा,'' यह ऐसी प्रतिज्ञा है जो उस विश्वासयोग्य पिता ने की है जो आपनी प्रतिज्ञाओ को पूरा करता है।

''निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे दु:खों को उठा लिया'' (यशायाह ५:३४) हमें अपने जीवन की परीक्षाओं और कठिनाइयों के मध्य यीशु से जुड़े रहना है।

प्रार्थना वाचायें अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करने के प्रति समर्पित होने का एक सुंदर तरीका है। यह एक दूसरे को सामर्थी बनाने और ऊँचा उठाने का एक अच्छा तरीका है कि प्रतिदिन उस व्यक्ति के लिए एक सहमत प्राप्त समय काल में परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति के लिए प्रार्थना करें, चाहे वे आपके पति–पत्नी, संतान, मित्र अथवा एक ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसे आप शीघ्र ही मिले हो। जैसा आपने कभी भी अपेक्षा नहीं की थी यह उस प्रकार से पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ को आमंत्रित करता है और जिसके लिए आप प्रार्थना करना चुनते हैं उसके साथ आपके नए सम्बंधों को बढ़ाता है। परमेश्वर मुझे कैसे बदल रहा है? परमेश्वर आपको कैसे बदल रहा है यह एक सरल प्रश्न आपको अवसर देंगे स्वयं में और स्वयं के द्वारा परमेश्वर को अनुभव करें और उसका उत्सव मनाये। परखकर देखें कि यहोवा कैसा भला है (भजन 34:8)। यह अंतिम कहानी मेरी पुत्री मारिया मारवली के द्वारा लिखी गई है। तब मेरा ह्रदय असहनीय दुख से भर गया जब मैंने जाना कि मेरे पिता मारिया के साथ क्या करते रहे थे और मारिया ने मेरे परिवार को सुरक्षित रखने के लिए इस बात को अनेक वर्षों तक छिपा रखा था शैतान ने जो दुष्टता के लिए किया था परमेश्वर ने उसे भलाई के लिये उपयोग किया। मैने देखा कि परमेश्वर ने उसे कैसे चंगा किया, शंर्म से सुंदरता को उत्पन्न किया और इतने अधिक लोगों के प्रति सेवकाई करने के लिए उसे अभिषेक कर रहा है, यह गवाही परमेश्वर के अनुग्रह, प्रेम और करुणा से भरपूर है।

ड ।त्‍।ै`ज्व्त्ल

युवा होते समय मेरे पास एक बच्चे जैसा विश्वास था। सोने से पहले मैं प्रत्येक चिंता, प्रत्येक आशा और प्रत्येक बिनती परमेश्वर के सम्मुख रखती थी। मैं और कुछ नहीं परन्तु एक चिंता करने वाले और दयालु परमेश्वर पिता की उपस्थिति को जानती थी। मेरे पास प्रार्थनाओं के उत्तर-आरामदेह रात और आनंदभरी सुबह थी। मेरे माता पिता ने मुझे एक ऐसे पिता के बारे में सिखाया था जिसने सदैव मुझे सुना था, मुझे सदा क्षमा किया था और मुझे व्यक्तिगत रूप से अपनाया था। मैं उनका धन्यवाद करती हूँ कि मैं अपने संसाधन और शांति के स्रोत को जानती थी। इस सच्चाई ने मुझे आगे आने वाली परीक्षाओं के लिए तैयार किया था।

मैं अपनी ६-१२ वर्ष की आयु मे गर्मियों के समय जब अपने नाना नानी के साथ रहती थी तो मेरे नाना ने मुझे योन प्रताड़ित किया। मुझसे इतना अधिक प्रेम करने वाले मेरे माता-पिता भी मुझे इस कष्ट से नहीं बचा सके जो पतित संसार के कारण मुझे सहना पड़ रहा था। परंतु उन्होंने मुझे सिखाया था कि परमेश्वर हमारी चिन्ता करता है। परमेश्वर की शांति की अपेक्षा करते हुए मैंने उसके सामने अपना कष्ट रखा। तब परमेश्वर ने जो कृपा करने में धनी हैं मुझे वह शांति प्रदान की जो संसार मुझे नहीं दे सकता था।

जबकि मेरा मस्तिष्क अलगाव और भुला देने के प्रयासों के द्वारा इस प्रताड़ना को सहने का आदी हो चुका था, परन्तु एक दिन इससे भिन्न था नाना के दुष्कर्म के पश्चात मैं ऐसी भावनाओं से भर गयी थी जो इसकी उपेक्षा नहीं कर सकती थी। मैं बाहर साफ हवा में आई और मैंने वह किया जो पहले करना मैं भूल गई थी। मैंने यीशु के साथ अपने इस दुख की सहभागिता की। मैंने उससे मेरे कष्टों और भावनाओं को दूर करने को कहा। मैंने उससे प्रार्थना की मेरे ह्रदय में जो भी अनुचित था वह उसे चंगा करें। फिर कुछ क्षण में ही उसने सब कुछ हटा दिया। जैसे ही मैंने अपनी विनती उसे बताई तो उसने अनुग्रहपूर्वक उत्तर दिया, और मेरी प्रताड़ना के मध्य हुआ कष्ट जाता रहा, परमेश्वर ने एक आश्चर्यकर्म किया था।

मैं उस दिन को अपने जीवन में उसकी विश्वासयोग्यताओं के एक चिन्ह के रूप में याद रखती हूँ। यह मुझे उसकी भलाई और प्रेम को याद दिलाता है कि वह शीघ्रतापूर्वक सामर्थ के साथ अपनी पुत्री को चंगाई देने के लिए आएगा। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि एक क्षण में ही मेरे कष्ट का समाधान हो गया था इसके बाद

मैंने परामर्श दिया और आज भी मैं दुष्कर्म के प्रभाव को अपने जीवन में देखती हूँ। परमेश्वर ने परीक्षा को नहीं हटाया था, परन्तु उसने दुष्टता के भावनात्मक परिणामों से मुझे प्रतिदिन शांति और छुटकारा दिया था। चंगाई पाने की कठिन और लंबी यात्रा के साथ आराम व आनंद प्रदान करता है। मैंने वर्षो बाद परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह मेरे जीवन को भलाई के लिए प्रयोग करें। जिससे मैं अन्य लोगों की दुख में सहभागी हो सकूँ। और उनके जीवनों के टूटे हुए भागों में यीशु की ज्योति और जीवन को ला सकूँ। मैंने खुद से ऐसे अवसर प्रदान करने का निवेदन किया, और उसने मेरी प्रार्थनाओं के उत्तर देना जारी रखा था।

एक कहलेज की छात्र के रूप में परमेश्वर मेरे जीवन में ऐसी अनेक छात्राएं लाया जिन्होंने बचपन में हुई प्रताडनाओ को भोगा था और उसने मुझे अनुमति दी कि उनके साथ में चंगाई की इस यात्रा को करूँ और यीशु को जानने और उसके पीछे चलने से मिले आनंद और शांति की सहभागिता उनके साथ करूँ। वर्तमान समय में इन्हीं महिलाओं ने अनेक पीड़ित स्त्रियों की सहायता की है और अनेक कष्टों को, प्रेम और उल्लास में बदला है, और सबने एक साथ देखा है कि वहाँ से अंधकार मिट गया है।

उसके बाद मैंने यीशु से प्रार्थना की कि मुझे अवसर प्रदान करें। कि मैं अपने काम करने के घण्टों में इन पीड़ित पुरुषों, स्त्रियों, और बच्चों को न्याय दिलाने के लिए काम करूँ। उसने पुनः उत्तर दिया और मुझे एक ऐसी नौकरी प्रदान की जहाँ में ओहायो (अमेरिका) में मानव तस्करी से बचाए गये लोगों को चंगाई, न्याय और आशा देने के प्रति अपने वरदानो का उपयोग कर सकती हूँ। यह मेरे जीवन में प्रार्थना की सामर्थ है परमेश्वर ने मेरे दुखों को आनंद में और मेरे प्रश्नों को मार्गदर्शन में बदल दिया। जब मैंने उससे प्रार्थना की, उसने उत्तर दिया। उसने यौन उत्पीड़न की कुरूपता से मुझे छुड़ाया और मुझे अनुमति दी है कि उसकी विश्वास योग्यता और उपाय दूसरों को बताऊँ जिससे कि उसे घोर अंधकार में भी महिमा मिले।

यह जानना कितना उत्साहवर्धक है कि परमेश्वर हमें गडहें से निकालता है हमें अपनी दया और करुणा का मुकुट पहिनाता है और जीवन के शिखरों और घाटियों में भी हमारे साथ रहता है। जो टूट गया है वह उसे जोड़ता है।

मनन :

मरिया की कहानी हमें प्रार्थना के सामर्थ का स्मरण कराती है। यह परमेश्वर का हममें रुचि रखने का एक उदाहरण है और जब हम उससे मांगते हैं, तो हमारे मनो को बदलने के प्रति उसकी सामर्थ का एक प्रदर्शन है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारा परमेश्वर पिता घनिष्ठता पूर्वक हमारे साथ रहने के लिए विश्वास योग्य और उत्सुक है और वह हमारी प्रार्थनाओं से प्रसन्न रहता है।

तब हममें से प्रत्येक के लिए यह चुनौती है जैसे पौलुस लिखता है जो अपने को प्रार्थना के प्रति समर्पित करें (कुलुसियो 4:2), निरंतर प्रार्थना में लगे रहे (1थिस्सलुनीकियो 5:17), हर समय प्रार्थना करते रहें (इफिसियो 6:18), क्योंकि हम जानते हैं कि शैतान गरजने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाये। (1पतरस 58)।

प्रार्थना में सामर्थ है। शिष्यो के समान हमें निवेदन करना है, प्रभु हमें प्रार्थना करना सिखायें (लूका 11:1) हम विश्वास करते हैं कि महिलाओं के लिए प्रार्थना वाचा आपके प्रार्थना के जीवन में बढ़ने में सहायक होगी जैसे कि यह यीशु के साथ और जिनके लिए आप प्रार्थना करते हैं उनके साथ आपके व्यक्तिगत जीवन को निरंतर सुदृढ़ करती है।

इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चले कि हम पर दया हो और वह अनुग्रह पाए जो आवश्यकता समय हमारी सहायता करें (इब्रनियों ४:१६) अब हमारे परमेश्वर पिता का प्रेम, प्रभु यीशु का अनुग्रह और पवित्र आत्मा की सहभागिता हम सब के साथ बनी रहे (२कुरि० १३:१४)।

Endnotes